
₹ 25
हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कादंबिनी
मार्च 2017



Aman's Group

Shop No.3- 4, Ground Floor, Karma Empress Bldg., Near K.T.C Bus Stand, Vasco-da-Gama, Goa.

Ph: 0832 2500823 / 2514134 Cell: 9326127351 / 9823577351

Sales: 9637888409 Email: amanbuilders4u@gmail.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 26 अंक 9 मार्च 2017

और जब उन्हें हमारी स्पष्ट आयतें सुनाई जाती हैं, तो इन्कार करने वालों के चेहरों पर तुम्हें नागवारी प्रतीत होती है । लगता है कि अभी वे उन लोगों पर टूट पड़ेंगे जो उन्हें हमारी आयतें सुनाते हैं । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

दिल-फ़रोशों[1] के लिए कूचा-ओ-बाज़ार[2] बने
और जांबाज़ों की ख़ातिर रसनो-दार[3] बने

बस यही दौड़ है इस दौर के इन्सानों की
तेरी दीवार से ऊंची मेरी दीवार बने

छीन कर ग़ैर से अपनों ने मुझे क़त्ल किया
आप ही ढाल बने, आप ही तलवार बने

हो गये लोग अपाहिज यही कहते-कहते
अभी चलते हैं ज़रा राह तो हमवार बने

मुझको मम्नूने-करम[4] करके वो फ़रमाते हैं
आदमी सोच-समझ कर ज़रा ख़ुद्दार बने

ख़ुदशनासी[5] के न होने से यही होता है
जिनको फ़नकार[6] न बनना था वो फ़नकार बने

तुझसे कितना है हमें प्यार कुछ अंदाज़ा कर
हम तेरे चाहने वालों के रवादार[7] बने

जब मुझे अपना कहा है तो फिर अपनाओ भी
दाम ऊंचे जो लगाये वो ख़रीदार बने

शानो-शौकत के लिए तू है परेशान 'हफ़ीज़'
मुझको यह फ़िक्र कि कैसे तेरा किरदार[8] बने ।

● **हफ़ीज़ मेरठी**

1. दिल बेचने वालों, आत्मा को बेच देने वालों 2. गली और बाज़ार 3. फांसी का तख़्ता और फ़ंदा 4. कृतज्ञ 5. आत्मज्ञान, अपने आपकी पहचान 6. कलाकर 7. उदार, सहन करने वाले 8. चरित्र



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
क़ुरआन ज्योति		5
अल्लाह से अच्छी आशा (हदीस मंजरी)		6
संतुलित बजट की कोशिश में कई पहलुओं की उपेक्षा (संपादकीय)		7
ज़िन्दगी की परीक्षा में हारते विद्यार्थी (आपके पत्र)		9
मानव समानता (आस्था)	–संपादन प्रभाग	13
परलोक की धारणा (आस्था)	–श्याम नारायण चौहान	17
मानवता उपकारक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) (आदर्श)	–इब्तिसाम इलाही ज़हीर	21
ग़ज़ल	–मधु शुक्ला	22
बहुत बेआबरू होकर (कहानी)	–ज़हीर ख़ान	23
मां के दूध की विशेषताएं (महिला जगत)	–डॉ० शबनम सय्यदा	25
हलब में नरसंहार : इन्सानियत कहां ? (विशेष आयोजन)	–शकील रशीद	26-27
सीरिया त्रासदी (विशेष आयोजन)	–आबिद महमूद अज़्ज़ाम	29
युद्धविराम समझौता और शांति स्थापना की कोशिश	–डॉ० मुहम्मद अब्दुर्रशीद जुनैद	31
आओ मिलकर पेड़ लगाएं (कविता)	–सुरेन्द्र शर्मा	34
जनता में ख़ाकी वर्दी का ख़ौफ़ क्यों ? (ज्वलंत सामयिक)	–डॉ० अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव	35
खेल संघों पर लगाम कसने की तैयारी (खेल-खिलाड़ी)	–ए० एन० शिब्ली	37
बेरोज़गारी के बढ़ते ख़तरे (शिक्षा-रोज़गार)	–वेद व्यास	39
घटता निर्यात और बढ़ती बेरोज़गारी	–जावेद अनीस	40
फ्लोरीन से हानियां (स्वास्थ्य चर्चा)	–डॉ० जे० एल० अग्रवाल	42
किस काम का है ऐसा विकास ? (पर्यावरण)	–राणा प्रताप सिंह	43
प्रदूषण झेलते शहरों के बेघर लोग	–भारत डोगरा	44
हे मच्छर (व्यंग्य)	–मीना जैन	46
डॉ० यायावर सम्मानित (साहित्य समाचार)		47
ऐसे हुआ महीनों का नामकरण (बालवीथी)	–विद्या प्रकाश	48
समुद्र के पार संसार (बालवीथी)		49

क़ुरआन ज्योति

(19) आरंभ में सारे इन्सान एक ही उम्मत (समुदाय) थे, बाद में उन्होंने अलग-अलग विश्वास और पंथ बना लिए[25], और अगर तेरे रब की ओर से पहले ही एक बात तय न कर ली गयी होती तो जिस चीज़ में वे आपस में मतभेद कर रहे हैं, उसका निर्णय कर लिया जाता।[26]

(20) और यह जो वे कहते हैं कि इस नबी पर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों न उतारी गयी[27], तो इनसे कहो, "ग़ैब" (परोक्ष) का स्वामी व अधिकारी तो अल्लाह ही है, अच्छा, इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं।"[28] –क़ुरआन, 10 : 19,20

---

25. व्याख्या के लिए देखिये सूरा-2 (बक़रा), टिप्पणी 230

26. अर्थात अगर अल्लाह ने पहले ही यह निर्णय न कर लिया होता कि वास्तविकता को मानव-इन्द्रियों से छिपाकर उनकी बुद्धि व समझ और अन्तरात्मा व विवेक को परीक्षा में डाला जाएगा, और जो इस परीक्षा में विफल होकर ग़लत राह पर जाना चाहेंगे उन्हें उस राह पर जाने और चलने का मौक़ा दिया जाएगा और निर्णय क़ियामत के दिन होगा तो वास्तविकता को आज ही बेनक़ाब करके सारे मतभेदों का निर्णय कर दिया जाता।

यहां यह बात एक बड़ी ग़लतफ़हमी को दूर करने के लिए कही गयी है। सामान्य रूप से आज भी लोग इस उलझन में हैं और क़ुरआन उतरते समय भी थे कि दुनिया में बहुत-से धर्म पाये जाते हैं और हर धर्म वाला अपने ही धर्म को सत्य समझता है। ऐसी स्थिति में आख़िर इस निर्णय की शक्ल क्या है कि कौन सत्य पर है और कौन नहीं ? इसके बारे में कहा जा रहा है कि यह धर्मों का मतभेद वास्तव में बाद की पैदावार है। शुरू में सम्पूर्ण मानव-जाति का धर्म एक था और वही धर्म सत्य था। फिर इस सत्य में मतभेद करके लोग अलग-अलग धारणाएं और धर्म बनाते चले गये। अब अगर धर्मों के इस मतभेद का निर्णय तुम्हारे नज़दीक बुद्धि व विवेक के सही इस्तेमाल के बजाय केवल इसी तरह हो सकता है कि अल्लाह स्वयं सत्य को बेनक़ाब करके सामने ले आये, तो यह वर्तमान सांसारिक जीवन में नहीं होगा। यह सांसारिक जीवन तो है ही परीक्षा के लिए और यहां सारी परीक्षा इसी बात की है कि तुम सत्य को देखे बिना बुद्धि व विवेक से पहचानते हो या नहीं।

27. अर्थात इस बात की निशानी कि वास्तव में यह नबी सत्य पर है और जो कुछ प्रस्तुत कर रहा है, वह बिल्कुल ठीक है। इस सिलसिले में यह बात दृष्टि में रहे कि निशानी के लिए उनकी यह मांग कुछ इस कारण न थी कि वे सच्चे दिल से सत्य-सन्देश का ग्रहण करने और उसके तक़ाज़ों के अनुसार अपने चरित्र को, आदतों को, रहन-सहन और सभ्यता की व्यवस्था को, तात्पर्य यह कि अपने पूरे जीवन को ढाल लेने के लिए तैयार थे और बस इस वजह से ठहरे हुए थे कि नबी के समर्थन में कोई

(शेष पृष्ठ 11 पर)



अल्लाह से अच्छी आशा

● हज़रत उबादह बिन सामित (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जिसने यह गवाही दी की अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह अकेला है, और उसका कोई साझी नहीं और यह कि मुहम्मद (सल्ल॰) उसके बन्दे और उसके रसूल हैं और यह कि हज़रत ईसा अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और वे अल्लाह का शब्द हैं जिसे मरयम की ओर डाला और उसकी ओर से एक रूह हैं और (यह गवाही दे) जन्नत और दोज़ख़ सत्य हैं, अल्लाह उसे जन्नत में दाख़िल करेगा चाहे उसके कर्म कैसे ही क्यों न हों ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

मुस्लिम की एक रिवायत में है : "जिस किसी ने गवाही दी कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और यह कि मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह ने उस पर दोज़ख़ हराम कर दिया ।"

● हज़रत अबू ज़र (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "गौरव का स्वामी प्रतापवान अल्लाह कहता है : जो व्यक्ति एक नेकी करेगा उसे उसका दस गुना बदला मिलेगा और मैं और अधिक भी उसे प्रदान करूंगा । और जो बुराई करेगा उसे केवल एक बुराई का बदला मिलेगा या मैं क्षमा कर दूंगा । और जो मुझसे एक बित्ता निकट होगा, मैं उससे एक हाथ निकट हूंगा । और जो मुझसे एक हाथ निकट होगा मैं उससे दो हाथ निकट हूंगा । और जो मेरी ओर चलकर आएगा, मैं उसकी ओर लपकता हुआ आऊंगा और जो मुझसे धरती के बराबर गुनाह करके मिलेगा मैं उससे उसी जैसी क्षमा के साथ मिलूंगा, शर्त यह है कि उसने किसी को मेरा सहभागी न बनाया हो ।"

–मुस्लिम

● हज़रत जाबिर (रज़ि॰) कहते हैं कि एक ग्रामीण नबी (सल्ल॰) के पास आया और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (जन्नत और दोज़ख़ को) अनिवार्य करने वाली दो चीज़ें कौन-सी हैं ? आपने कहा : "जिस व्यक्ति की मृत्यु इस हाल में हो कि उसने किसी चीज़ को अल्लाह का साझी न ठहराया हो, वह जन्नत में प्रवेश करेगा । और जिसकी मृत्यु इस हाल में हो कि उसने किसी चीज़ को अल्लाह का साझी ठहराया, वह दोज़ख़ में दाख़िल होगा ।" –मुस्लिम

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि हज़रत मुआज़ (रज़ि॰) सवारी पर नबी (सल्ल॰) के पीछे बैठे थे । आपने कहा : "ऐ मुआज़ ।" उन्होंने कहा : "ऐ अल्लाह के रसूल, मैं आपकी सेवा के लिए बारम्बार हाज़िर हूं । आपने कहा : "ऐ मुआज़ । "उन्होंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल, मैं आपकी सेवा के लिए बारम्बार हाज़िर हूं । आपने कहा : "ऐ मुआज़ । "उन्होंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल, मैं आपकी सेवा के लिए बारम्बार हाज़िर हूं । यह बात तीन बार कही गयी । फिर आपने कहा : "जो बन्दा सच्चे दिल से इस बात की गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और यह कि मुहम्मद उसके बन्दे और उसके रसूल हैं, अल्लाह अनिवार्यतः आग (दोज़ख़) को उस पर हराम कर देता है ।" उन्होंने कहा : "ऐ अल्लाह के रसूल, क्या मैं इसकी ख़बर लोगों को न दे दूं कि वे खुश हो जाएं ? आपने कहा : "नहीं, वे इसी पर बस कर लेंगे ।" हज़रत मुआज़ (रज़ि॰) ने अपनी मृत्यु के समय गुनाह के भय से लोगों को यह बात बता दी । –बुख़ारी, मुस्लिम

(रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संतुलित बजट की कोशिश में कई पहलुओं की उपेक्षा

नोटबंदी से हुई सरकार की किरकिरी ने इस बार बजट को कुछ संतुलित करने पर मजबूर किया है, लेकिन चुनाव आयोग के दबाव के कारण इसे लोकलुभावन नहीं बनाया जा सका । शिक्षा और रोज़गार के मामले में मायूसी ही हाथ लगी । बजट घाटे को कम करने के प्रयास कम हुए और पुराने बजट के वादों को पूरा करने की दिशा में कुछ उल्लेखनीय नहीं हो सका । इस आम बजट के साथ रेल बजट को मिला देने से रेल विभाग की आवश्यकताएं और अपेक्षाएं अधूरी रह गयीं । रेल सुरक्षा, नयी ट्रेनें चलाने व ट्रेनों को समय पर चलाने और जन सुविधाओं पर पर्याप्त फोकस नहीं है । सरकार ने मध्यम और सामान्य छोटे कारोबारी वर्ग को करों में छूट देने का जो फ़ैसला किया है, वह स्वागतयोग्य है । बजट की यह बात अच्छी है कि अब अधिक कमाने वालों को अधिक कर देना पड़ेगा । आयकर का दायरा बढ़ा कर ढाई से तीन लाख रुपये कर दिया गया है । इसी प्रकार पांच लाख रुपये तक की आय पर पहले के दस प्रतिशत कर ढांचे को घटा कर पांच प्रतिशत कर दिया गया है । साथ ही पांच से दस लाख तक की आय पर बीस प्रतिशत कर लगेगा । नयी दर अगले वित्त वर्ष, यानी 2017-18 के लिए हैं और 1 अप्रैल 17 से लागू मानी जाएगी । इसके अलावा 50 लाख से 1 करोड़ रुपये तक की आय पर 10 प्रतिशत सरचार्ज लगाया गया है और एक करोड़ से अधिक की आय पर लगने वाला 15 प्रतिशत सरचार्ज बरक़रार रहेगा, इससे सरकार को 2,700 करोड़ रुपये प्राप्त होंगे । सरकार के इस ऐलान से छोटे कारोबारियों और मध्य वर्ग को राहत मिलेगी । 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा देने के लिए टैक्स में छूट का ऐलान करते हुए वित्त मंत्री अरुण जेटली ने कहा कि काले धन की जांच के लिए विशेष जांच दल बनाया जाएगा और अब तीन लाख से ऊपर नक़द लेन-देन प्रतिबंधित कर दिया गया । यह माना जा रहा है कि सरकार की रियायतों से न सिर्फ़ वेतनभोगी लोगों, बल्कि छोटे कारोबारियों को कुछ राहत मिलेगी । उम्मीद की जा रही है कि इससे वे कारोबारी स्वत: अपने आय-व्यय का लेखा-जोखा पेश करने को प्रोत्साहित होंगे, जो आमदनी छिपाने की कोशिश करते रहे हैं । इस बजट में कृषि, डेयरी, शिक्षा, कौशल विकास, रेलवे और अन्य बुनियादी ढांचा क्षेत्रों के लिए आवंटन बढ़ाने का प्रस्ताव भी किया गया है, लेकिन किसानों की समस्याओं के हल के प्रति प्रतिबद्धता कम ही दीखती है । सरकार शायद यह समझती है कि बुनियादी ढांचे के लिए आवंटन बढ़ाने से या सड़कें बनाने से किसानों की आत्महत्याएं रुक जाएंगी । यह कल्पना मात्र है । किसान सबसे अधिक कृषि उपज की सही क़ीमत न मिलने से परेशान हैं । नोटबंदी ने इस संकट को और बढ़ा दिया है। ब्याजमुक्त क़र्ज़ का न मिलना भी किसानों की आत्महत्याओं का कारण रहा है, जिसकी ओर बजट मौन है!

वित्त मंत्री अरुण जेटली ने वित्त वर्ष 2017-18 के बजट में बुनियादी ढांचा क्षेत्र के लिए रिकॉर्ड 3.96 लाख करोड़ रुपये के आवंटन की घोषणा की है । उन्होंने अपने बजट भाषण में कहा कि इस तरह के निवेश से आर्थिक गतिविधियां बढ़ेंगी और रोज़गार के अधिक अवसर पैदा किये जा सकेंगे । जेटली ने कहा,

''बुनियादी ढांचा क्षेत्र के लिए 2017-18 में कुल आवंटन 3,96,135 करोड़ रुपये का होगा ।'' उन्होंने कहा कि इतने भारी निवेश से बड़े पैमाने पर आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया जा सकेगा और रोज़गार के अधिक अवसर पैदा किये जा सकेंगे ।'' वित्त मंत्री ने कहा, ''पूरे परिवहन क्षेत्र, रेलवे, सड़क, जहाजरानी के लिए मैं 2,41,387 करोड़ रुपये के प्रावधान का प्रस्ताव करता हूं ।'' उन्होंने कहा कि राजमार्ग क्षेत्र के लिए आवंटन 2017-18 में बढ़ाकर 64,000 करोड़ रुपये किया जा रहा है । इससे पिछले वित्त वर्ष में यह राशि 57,676 करोड़ रुपये थी । जेटली ने कहा कि सड़क क्षेत्र के लिए मैंने बजट आवंटन 2016-17 के 57,676 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 2017-18 में 64,000 करोड़ रुपये किया है । वित्त मंत्री ने कहा कि निर्माण एवं विकास के लिए 2,000 किलोमीटर की तटीय संपर्क सड़कों की पहचान की गयी है । वित्त मंत्री ने कहा कि 2014-15 से मौजूदा साल तक प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना सहित अन्य कुल 1,40,000 किलोमीटर सड़कों का निर्माण किया गया है, जो इससे पिछले तीन सालों से अधिक है । वित्त मंत्री ने कहा, ''मुझे आज़ाद भारत का पहला संयुक्त बजट पेश करते हुए गर्व हो रहा है । इसमें रेलवे भी शामिल है । अब हम रेलवे, सड़क, जलमार्ग तथा नागर विमानन क्षेत्र में निवेश में तालमेल बैठाने की स्थिति में होंगे । वित्त मंत्री ने बताया, ''2017-18 में रेलवे के लिए कुल पूंजी और विकास व्यय 1,31,000 करोड़ रुपये रहने का अनुमान है । इसमें सरकार द्वारा बजट से उपलब्ध कराई गयी 55,000 करोड़ रुपये की राशि भी शामिल है ।'' डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने, तीन लाख रुपये से अधिक के लेन-देन को रोकने और राजनीतिक दलों को मिलने वाले नक़द चंदे की सीमा बीस हज़ार से घटा कर महज़ दो हज़ार रुपये करने का प्रस्ताव किया गया है, लेकिन बांड के रूप में उन्हें कितना भी दिया जा सकता है और देने वाले का नाम छिपा भी रह सकता है । बहरहाल बजट को संतुलित बताकर आत्मसंतोष पैदा किया जा रहा है, परन्तु विपक्षी दलों को यह रास नहीं आया । विपक्षी दलों का मानना है कि बजट में कुछ भी नया नहीं है । कांग्रेस ने इस बजट को घिसा-पिटा बताया । कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा, ''हमें शानदार आतिशबाज़ी का इंतिज़ार था, लेकिन एक सामान्य पटाखे की आवाज़ सुनाई दी ।'' रिपोर्टरों ने जब राहुल से यह पूछा कि 2,000 रुपये से ज़्यादा का राजनीतिक चंदा कैश में नहीं लेने की घोषणा की गयी है तो उन्होंने कहा, ''पॉलिटिकल फंडिंग को साफ़-सुथरा बनाने के लिए जो भी क़दम उठाए जाएंगे, हम उन्हें समर्थन देंगे ।'' शिवसेना अध्यक्ष उद्धव ठाकरे ने कहा कि केंद्र के नोटबंदी के फ़ैसले से आम आदमी की जेब कट गयी वहीं बड़े डिफॉल्टर्स पर कोई असर नहीं हुआ, ऐसे में हर साल बजट की क्या ज़रूरत जब पिछले वादे पूरे नहीं हुए । उद्धव ने कहा, ''नोटबंदी की वजह से जनता को जो परेशानी हुई, उसकी भरपाई कभी नहीं की जा सकती । सरकार कह सकती है कि जमा धन कई गुना बढ़ गया लेकिन सच यह है कि बड़े डिफॉल्टर्स को अलग रखा गया और आम आदमी की जेब काटी गयीं ।'' उन्होंने कहा, ''उन्होंने पिछले बजट में यह घोषणा क्यों नहीं की थी कि वे नोटबंद करेंगे । जब पिछले साल की घोषणाएं अधूरी हैं तो इस बजट का क्या मतलब है ? जब आप अपने किये वादे पूरे नहीं करते तो हर साल बजट पेश करने की क्या ज़रूरत है ।'' शिवसेना सांसद अरविंद सावंत ने भी बजट पर सरकार को घेरते हुए कहा कि सरकार ने बजट में वेतनभोगी वर्ग को राहत दी है लेकिन वह किसानों, युवाओं और वरिष्ठ नागरिकों को पूरी तरह भूल गयी । उन्होंने कहा कि ''बजट में वेतनभोगियों को राहत दी गयी है, वहीं पूरी तरह किसानों, युवाओं, वरिष्ठ नागरिकों और महिलाओं को भुला दिया गया है और उनके लिए कोई विशेष प्रावधान नहीं है ।'' सरकार वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम लागू करने की जल्दी में है, इसलिए भी डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देकर कालेधन पर अंकुश लगाने और कर भुगतान में पारदर्शिता लाना चाहती है । फिर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा देने के इरादे से किये गये प्रस्ताव भी अभी कसौटी पर खरे उतरने हैं ।

ज़िन्दगी की परीक्षा से हारते विद्यार्थी

8वीं क्लास में पढ़ रहे अमित कुमार अर्द्ध वार्षिक परीक्षा में 3 विषयों में फेल हुए तो रस्सी का फंदा लगाकर जान दे दी। 10वीं की छात्रा स्नेहा ने पढ़ाई में मन नहीं लगने की वजह से चुन्नी का फंदा बनाकर खुदकुशी कर ली। सी॰ए॰ की तैयारी कर रही छात्रा प्रीति ने ट्रेन के आगे कूद कर जान दे दी। 11वीं कक्षा में पढ़ने वाली मधु ने ज़हरीला पदार्थ खा कर जान दे दी। आख़िर ये सिलसिला-सा क्यों चल निकला है ? बात चाहे पढ़ाई की हो, परीक्षाओं में अधिक अंक लाने की या फिर उनकी छोटी-मोटी ग़लत आदतों को रोकने की, आख़िर क्यों बच्चों के क़दम इस ओर बढ़ रहे हैं ?

अक्सर देखा गया है कि पढ़ाई का दबाव, पेरेंट्स का प्रेशर, अव्वल रहने का प्रेशर सेल्फ़ होप, इन सबका प्रेशर बढ़ने पर ही बच्चे इस तरह का फ़ैसला लेते हैं। मासूमों के इस तरह के फ़ैसले लेने के लिए कोई और नहीं ज़्यादातर पेरेंट्स ही ज़िम्मेदार होते हैं। एक तो पेरेंट्स का बच्चों को समय नहीं दे पाना और दूसरा बच्चे के अव्वल आने का प्रेशर बनाना। दोनों ही तरह की स्थितियां बच्चों को खुदकुशी के रास्ते की ओर ले जाती हैं। बच्चों का जब रिजल्ट बिगड़ता है, तो बच्चे कम नम्बर से दुखी नहीं होते, बल्कि पेरेंट्स का क्या रिएक्शन होगा, इससे डर जाते हैं। हर अभिभावक अपने सारे अधूरे सपनों को बच्चों के ज़रिये पूरा करना चाहते हैं। अहम बात यह है कि बच्चों की इच्छा, पसन्द, नापसंद व रुचि को महत्व नहीं दिया जाता। हर हाल में अभिभावक अपने बच्चों को शिखर पर देखना चाहते हैं।

अक्सर बच्चों के परीक्षा फल को प्रतिष्ठा से जोड़कर देखा जाने लगा है। जिस तरह हमारे भारतीय समाज में एक भ्रम है कि जिसकी बहू जितना ज़्यादा दहेज लाती है, उसके परिवार का सम्मान उतना ही ज़्यादा बढ़ता है। उसी तरह जिसका बच्चा परीक्षा में जितने अच्छे नम्बर लाता है, उसके मां-बाप उतना ही गर्व महसूस करते हैं। हालांकि बच्चों की तरक़्क़ी व सफलता पर खुश होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, लेकिन समस्या शुरू तब होती है, जब उस खुशी में अभिभावक अपने सपने तलाश करने लगते हैं। बच्चों को सफल बनाने के लिए पेरेंट्स तुलनात्मक रूप से दूसरे बच्चों के उदाहरण उसके सामने पेश करने लगते हैं और बच्चों को सुपर चाइल्ड बनाना चाहते हैं।

दरअस्ल जब से शिक्षा का अर्थ शिक्षित करने से हटकर समृद्ध करना बन गया है, तब से हमारी महत्वाकांक्षाएं बेहिसाब बढ़ी हैं। अब छोटा परिवार, सुखी परिवार का नारा भी छोटा परिवार, समृद्ध परिवार में बदल गया है। तभी तो अब शिक्षण संस्थाओं से विद्यार्थी नहीं निकल रहे, बल्कि अब जैसे भी हो डॉक्टर, इंजीनियर, एम॰बी॰ए॰ वग़ैरह प्रोफ़ेशनल बनाए जा रहे हैं। जिनका एक ही ध्येय है बेहिसाब पैसा बनाना। भारत पर बाज़ार का क़ब्ज़ा होने के बाद से स्कूल, ख़ासतौर से प्राइवेट स्कूल बच्चों को पैसा कमाने की मशीन बनाने वाली फैक्टरियां बन गये हैं। वे अपने तामझाम से बच्चों का एडमिशन कराने आये माता-पिता को रिझाते हैं। उन्हें बड़े-बड़े सपने दिखाते हैं और यह यक़ीन तक दिला देते हैं कि अगर वे उनके यहां से अपने बच्चे को शिक्षा दिलाएंगे तो वह बच्चा अंकों के खेल में तो बाज़ी मारेगा ही, सफलता की रेस में भी सबसे आगे निकल जाएगा।

बस यहीं से शुरू हो जाता है बच्चे पर शारीरिक व मानसिक बोझ का पड़ना। स्कूल का बस्ता तो हर कक्षा के बाद अपना वज़न बढ़ाता ही है, माता-पिता की मानसिकता भी दिनोंदिन बच्चों के कोमल मस्तिष्क पर सवार होने लगती है। माता-पिता जो अपने जीवन में नहीं कर पाये होते हैं, वे अपने बच्चों के माध्यम से पूरा करना चाहते हैं। चाहे वैसा करने की दिलचस्पी बच्चों में हो या नहीं। एक अध्ययन से सामने आया है कि 8 से 10 साल के बच्चों में पढ़ाई को लेकर इतना दबाव बना दिया जाता है कि खेलने-कूदने के दिनों में उनमें से 30 फ़ीसदी बच्चे अवसाद से घिरे नज़र आते हैं। इस हद तक कि वे कई बार आत्मग्लानि तक के शिकार बन जाते हैं। उन्हें लगता है कि यदि वे दूसरों की उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे तो अपनी खुद

की नज़रों से गिर जाएंगे । इस कशमकश में वे कई बार अपनी मासूम ज़िन्दगी तक दांव पर लगा बैठते हैं ।

बड़े दुख की बात है कि साल 2015 में 14 साल तक की उम्र के देश भर में 2367 बच्चों ने अपनी ज़िन्दगी ख़त्म कर ली थी । इनमें से कुछ के पारिवारिक कारण थे, तो कईयों ने परीक्षा में मनमाफ़िक़ अंक न ला पाने के चलते ऐसा ख़तरनाक क़दम उठा लिया । तेज़ी से टूटते संयुक्त परिवार, आर्थिक व सामाजिक प्रतिष्ठा को सर्वोपरि मानना, ख़ुद के बारे में सुपरकिड्स होने का भ्रम पाल लेना आदि आजकल के बच्चों को उनके बचपन से लगातार दूर कर रहा है । छोटे-बड़े शहरों में ही नहीं, बल्कि अब तो ग्रामीण इलाक़ों में भी छोटे परिवारों का चलन बढ़ा है, लेकिन ये छोटे परिवार संसाधन असीमित चाहते हैं ।

पिछले कुछ सालों से माता-पिता दोनों के ही नौकरी करने का चलन बढ़ा है, इसका ख़मियाज़ा कहीं न कहीं बच्चों को ही भुगतना पड़ता है । कई परिवारों में तो बच्चों को घर के सदस्यों के साथ समय बिताने का हफ़्ते में एक या दो बार ही मौक़ा मिलता है । यही वजह है कि जब बच्चों के मन में कोई ग़लत भावनाएं आती है, तो वे उन भावनाओं के साथ ही जीने लगते हैं । जब ये भावनाएं बढ़ने लगती है, तो वे डिप्रेशन और फिर सुसाइड तक का रास्ता इख़्तियार कर लेते हैं । कई बार ऐसे बच्चे जब अपने माता-पिता की पढ़ाई में मदद मांगते हैं, तो वे व्यस्त होने की दुहाई देते हैं या पीछा छुड़ाने के लिए बच्चे की ऐसी ख़्वाहिश भी पूरी कर देते हैं, जो ज़रूरी नहीं होती । इसके एवज़ में माता-पिता अपने बच्चे से पढ़ाई में शानदार रिजल्ट लाने की डिमांड रखते हैं । कभी-कभी तो उसे डरा भी देते हैं कि सबसे आगे रहना है, तो सबसे बेहतर बनना होगा ।

घर में घुसे बाज़ार और इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने भी छोटे परिवारों को ऐसे बड़े घरों के सपने दिखाये हैं, जिनमें सुख-सुविधाओं के सभी संसाधन भरे हो । फिर अब तो घर से लेकर हर चीज़ लोन पर मिलने लगी है । ई॰एम॰आई॰ ने हर घर में सेंध लगा दी है । क़र्ज़ लेना अब ग़रीब होने की निशानी नहीं रहा है, बल्कि स्टेटस सिम्बल है कि फलां दम्पति अपने फ्लैट के लिए 50 हज़ार रुपये की ई॰एम॰आई॰ भर रहा है । कामयाबी पाने की अंधी दौड़ में अब बड़े ही नहीं, बल्कि बच्चे भी शामिल होने लगे हैं । शायद इसी लिए अब उनकी पढ़ाई-लिखाई का मतलब रुपया कमाने की मशीन बनना रह गया है ।

अगर बच्चा मेधावी है तो ठीक है, लेकिन वह उत्त होशियार नहीं है या अपनी पसंद का कैरियर बनाना चाह है और उसके माता-पिता क़तई नहीं चाहते हैं, तो ऐसे ब में पढ़ाई के दबाव से तनाव या अवसाद के लक्षण दिख लगते हैं । किशोरावस्था में एक तो वे शारीरिक बदलावों जूझ रहे होते हैं, तो दूसरी ओर कैरियर बनाने के प्रेशर घुट रहे होते हैं । जिससे वे स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित हो ज हैं और जब उनका ये दबाव हद पार कर जाता है, तो अपनी जान देने तक का मन बना लेते हैं और जान दे भ देते हैं । बच्चों में 8 से 14 साल की उम्र कैरियर बिल्डि एज कहलाती है । इस समय बच्चे बहुत ही नाज़ुक हो हैं । उम्र के इस दौर में बच्चों में कई तरह के इमोशनल बायोलोजिकल व हार्मोनल बदलाव आते हैं । इस वजह बच्चों को इस उम्र के पड़ाव में पेरेंट्स के सपोर्ट की ज़रू होती है । अगर उन्हें सही सपोर्ट नहीं मिलता है, तो इसक ग़लत असर बच्चों के मन और शरीर दोनों पर पड़ता है

मदन कोथुनिय

143, कोथून, जयपुर, राजस्थान-30390

शिक्षा का इस्लामी दृष्टिकोण

"पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया ।"

यह वह प्रथम वाक्य है जिससे इस्लाम के आधारभू ग्रंथ कुरआन का अवतरण प्रारंभ हुआ । इससे पता चलता है कि इस्लाम न केवल पढ़ने पर बल्कि अपने रब के नाम से पढ़ने पर कितना ज़ोर देता है । इस्लाम के अनुसार शिक्षा ईश्वर केन्द्रित एवं मनुष्य और ईश्वर का संबंध जोड़ने वाली होनी चाहिए । वास्तव में यह शिक्षा और ज्ञान ही है जिसके कारण मनुष्य को समस्त प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है । इसी के कारण मनुष्य स्वतंत्र रूप से सोचता है और फ़ैसले करता है तथा न केवल अपने बारे में बल्कि सभी के कल्याण के बारे में सोचता है ।

अफ़सोस आज दी जाने वाली शिक्षा पर यह आरोप लगते हैं कि यह एक ज़िम्मेदार और संवेदनशील मनुष्य बनाने के बजाय उसे अपने स्वार्थ को किसी भी मूल्य पर हासिल करने वाली मशीन बनाती है । सैद्धांतिक रूप से तो सभी प्रकार की शिक्षा का लक्ष्य नैतिकता एवं मानवता का सर्वाधिक विकास है, लेकिन व्यावहारिक रूप से हम देखते हैं कि उच्च शिक्षित व्यक्तियों में भी नैतिकता एवं मानवता

के मूल्य नगण्य हैं । इस्लाम ने मनुष्य की हर समस्या का सर्वाधिक व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किया है । यूं तो सभी धर्मों ने नैतिक मूल्य एवं नैतिकता के मानदंड प्रस्तुत किये हैं, लेकिन ईश्वर की अवधारणा, उपासना पद्धतियों, आचरणगत मानदंडों को लेकर कोई सर्वमान्य एवं सुव्यवस्थित विचारधारा का अभाव है । आज की कुछ आधुनिक संकल्पनाएं जैसे लोकतंत्र आदि भी ज़िम्मेदारी, जवाबदेही से भरी स्वतंत्रता के बजाय स्वच्छंदता और मनमानी की शिक्षा ही अधिक देती हैं।

इस्लाम का मक़सद शिक्षा के द्वारा इन्सान में निम्नलिखित आधारभूत दृष्टिकोणों का विकास करता है–

(1) ईश्वर के प्रति दृष्टिकोण (2) मनुष्य के प्रति दृष्टिकोण (3) समाज के प्रति दृष्टिकोण (4) आर्थिक जीवन से संबंधित दृष्टिकोण ।

इस्लाम का ऐसा मानना है कि "एक ईश्वर" की सुदृढ़ मान्यता के बिना समस्त प्रकार की शिक्षा निस्सार एवं निष्प्रयोजन है । अत: "एक ईश्वर" का आधारभूत विचार शिक्षा एवं जीवन का अभिन्न अंग होना चाहिए । शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो मनुष्य और उसके समस्त कर्मों को ईश्वर के प्रति जवाबदेह बनाती हो । मनुष्य को यह ज्ञान कराना ज़रूरी है कि उसके अच्छे-बुरे कर्मों का परिणाम इस दुनिया में भले न मिले किंतु पारलौकिक जीवन में मिलके रहेगा । इस विचार के बिना उच्च नैतिक जीवन संभव नहीं है ।

कुरआन में है–"वह अल्लाह है अकेला । वह निराधार और सर्वाधार है और कोई नहीं जो उसके बराबर हो ।" (सूरह इख़लास, 1 से 4)

"ईश्वर अकेला है । उस दयावान और कृपाशील के सिवा कोई नहीं ।" (सूरह अल-बक़रा : 163)

"तुम जो भी करते हो, उसके बारे में तुम से अवश्य पूछा जाएगा ।" (सूरह अन-नहल, 93)

"क़यामत के दिन सब लोग इकट्ठा किये जाएंगे और सब अल्लाह के सामने पेश होंगे ।" (सूरह हूद : 103-108)

इसी तरह कुरआन ने इन्सान की अस्ली हक़ीक़त पेश कर एक ओर उसे ग़ैर-ज़िम्मेदार और निरंकुश होने से रोका है, तो दूसरी ओर हर शक्तिशाली चीज़ के सामने झुकने से मना कर उसे एहसास दिलाया है कि वह दुनिया की सबसे तुच्छ और नीच हस्ती नहीं है ।

कुरआन दोनों अतिवादी विचारों का खंडन करते हुए कहता है–"इन्सान अपनी हक़ीक़त को तो देखे कि किस चीज़ से पैदा हुआ है, एक उछलते हुए पानी से जो पुश्त और सीने की हड्डियों के दरमियान से खिंचकर आता है ।" (कुरआन)

"ऐ इन्सान ! क्या तू नहीं देखता कि अल्लाह ने इन सब चीज़ों को जो ज़मीन में है तुम्हारे लिए तुम्हारा अधीन बना दिया ।" (कुरआन)

इस प्रकार शिक्षा का सर्वोच्च लक्ष्य व्यक्ति में एक ईश्वर के प्रति ज़िम्मेदार बनाना है, ताकि जिस प्रकार ईश्वर ने धरती में इन्सान को अपना प्रतिनिधि बनाया, तो इन्सान उसके आदेशों का पालन करे ।

कुरआन कहता है–"तो जिसने मेरी हिदायत की पैरवी की ऐसे लोगों के लिए किसी सज़ा का भय और किसी नामुरादी का रंज नहीं है और जिन्होंने नाफ़रमानी की और हमारी आयतों को झुठलाया वह आग में जाने वाले लोग हैं, जहां वह हमेशा रहेंगे ।" (कुरआन)

इसी क्रम में इस्लाम एक ओर शिक्षा के द्वारा अनिवार्य रूप से माता-पिता, बड़ो, वृद्धों, रिश्तेदारों, पड़ोसियों, यतीमों, मिस्कीनों के प्रति ज़िम्मेदार बनाता है तो दूसरी ओर कमाई के वैध एवं पवित्र स्रोतों को अपनाने पर बल देकर उसे स्वार्थी और येन-केन प्रकारेण पैसा बनाने की संवेदनहीन मशीन बनने से रोकता है । पुन: व्यक्ति के धन पर क़रीबी रिश्तेदारों, ज़रूरतमंदों और कमज़ोर लोगों का हक़ ठहराकर वह समाज विकास और शांति का मार्ग भी प्रशस्त करता है ।

वस्तुत: इस्लाम भौतिक विज्ञानों, सामाजिक विज्ञानों, इंजीनियरिंग एवं तकनीकी आदि विषयों के साथ-साथ कुरआन और पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं द्वारा शिक्षा की ऐसी पद्धति एवं स्वरूप को स्वीकार करता है जिसके द्वारा मनुष्य शांति, सद्भाव और भाईचारगी का दूत बनकर दुनिया में रहे, न कि घमंड से भरा एक फ़सादी, स्वार्थी और संवेदनहीन प्राणी बनकर ।

इस्लामिक नैतिक मूल्य और शिक्षाएं इतनी शक्तिशाली और प्रभावपूर्ण है कि विश्व मीडिया और दुष्प्रचारक मुहिमों द्वारा इसके विरुद्ध जो घृणा और भय का माहौल तैयार किया जा रहा है, उसके बावजूद सबसे ज़्यादा शिक्षित, आधुनिक और आज़ादी पसन्द पश्चिमी समाज में इस्लाम को अपनाने वालों की तादाद दिन दूनी रात चौगुनी की रफ़्तार से बढ़ रही है । हम इस्लामिक विचारों को शिक्षा, जीवन एवं व्यवहार में तभी अपना सकते हैं जब समस्त पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर

इसको गंभीरता से अध्ययन करेंगे, इसको जानेंगे और समझेंगे।

आज की शिक्षा व्यक्ति को संविधान, क़ानून और समाज के लिए जवाबदेह तो बनाती है, लेकिन इन्सान अपनी शक्ति, प्रभाव, पहुंच और कुशलता द्वारा इन सबसे बच सकता है। दूसरी ओर इस्लाम ऐसी शिक्षा का हिमायती है, जिसके द्वारा व्यक्ति की आत्मा और मन को प्रशिक्षित किया जा सके। उसके हर कर्म को एक ईश्वर के प्रति और उसके द्वारा प्रदत्त परिणामों के प्रति जवाबदेह बनाया जा सके।

क़ुरआन में ईश्वर कहता है–"तो जिसने ज़र्रा (कण) बराबर भलाई की होगी वह उसको देख लेगा। और जिसने ज़र्रा (कण) बराबर बुराई की होगी वह उसे देख लेगा।"

(सूरह अज़-ज़िलज़ाल : 7,8)

वास्तव में ऐसी शिक्षा द्वारा ही इन्सान को सर्वाधिक संयमित, नियमित और अनुशासित बनाकर मानव एवं समाज के लिए सदुपयोगी एवं जवाबदेह बनाया जा सकता है। जीवन की समस्त समस्याओं का सर्वोत्तम हल पाया जा सकता है। निश्चित रूप से तभी शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया सार्थक एवं फलदायी हो सकेगी।

रिज़वान अहमद

बाकरगंज, फ़तेहपुर (उ०प्र०)

मुफ़्त का चन्दन

130 करोड़ जनसंख्या वाले देश भारत में प्रत्यक्ष कर वसूली एक तरह से चंदन की लकड़ी ढूंढ़ने जैसा ही है और चंदन तस्करी रोकना एवं करचोरी रोकना भी सरकार के लिए एक समान है परंतु फिर भी होती है, नेताओं का अंतिम संस्कार चंदन की लकड़ी से सरकारी ख़र्च पर होता है वहीं आज भी कई हज़ार लाशें प्रतिदिन बिना लकड़ी ही फूंकी जाती है, क्योंकि अंतिम संस्कार हेतु ढाई मन लकड़ी ख़रीदना भी बहुत से लोगों की पहुंच से बाहर है परंतु भारतीय करदाताओं से वसूला गया टैक्स नेताओं को मुफ़्त के चंदन जैसा लगता है और सारे राजनीतिक दल चुनावों से पहले मतदाताओं का चंदन तिलक करके उनको अपने पक्ष में करने के लिए कोई अवसर छोड़ना नहीं चाहते।

पंजाब में एक पार्टी 25 रुपये किलो देसी घी बांटेंगी तो यू०पी० में एक पार्टी एक करोड़ लोगों को एक हज़ार रुपये महीना बांटेंगी और मिड डे मील में प्रतिछात्र रोज़ाना एक लीटर दूध देगी भले ही वह छात्र एक लीटर पानी भी न पी सके। ग़रीबों के सब हितैषी दिखते हैं, जबकि ग़रीबों में ही जनसंख्या वृद्धि सबसे अधिक है जिस पर पूरा विश्व चिंतित है लेकिन भारत में हर बार बच्चा पैदा करने पर सरकार ही छह हज़ार रुपये गर्भवती महिला को देगी। एक ओर प्रधानमंत्री और वित्तमंत्री जबरन आयकर वसूली के लिए हाथ में डंडा लिये खड़े हैं और दूसरी तरफ़ मुफ़्त आवास और मुफ़्त क़र्ज़ बांटना इनकी भी प्राथमिकता है।

प्राइवेट सेक्टर में नौकरी छोड़ने से पहले तीन महीने का नोटिस देना पड़ता है लेकिन यहां नेता एक दल छोड़कर दूसरा दल ज्वाइन करने में सेकेंड भर देरी नहीं करते, क्योंकि मतदाताओं के चंदन तिलक करने से उनकी उंगुली भी तो चंदन में डूबी रहेंगी और करदाता की गर्दन सरकारी दफ़्तरों में।

रचना रस्तोगी

मेरठ

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

निशानी अभी उन्होंने ऐसी नहीं देखी थी जिससे उन्हें उसके नबी होने का विश्वास हो जाए। अस्ल बात यह थी कि निशानी की यह मांग केवल ईमान न लाने के लिए एक बहाने के रूप में पेश की जाती थी। जो कुछ भी उनको दिखा दिया जाता, इसके बाद वे यही कहते कि कोई निशानी तो हमें दिखायी ही नहीं गयी, इसलिए कि वे ईमान नहीं लाना चाहते थे। सांसारिक जीवन के प्रत्यक्ष पहलू को अपनाने में जो स्वतंत्रता उनको प्राप्त थी कि मनोकामनाओं और चाहतों के अनुसार जिस तरह चाहें काम करें और जिस चीज़ में मज़ा या लाभ महसूस करें उसके पीछे लग जाएं, उसको छोड़कर वे ऐसे परोक्ष तथ्यों (तौहीद व आख़िरत) को मानने के लिए तैयार न थे जिन्हें मान लेने के बाद उनको अपनी पूरी जीवन-व्यवस्था स्थायी नैतिक नियमों के बंधन में बांधनी पड़ जाती।

28. अर्थात जो कुछ अल्लाह ने उतारा है वह तो मैंने पेश कर दिया और जो उसने नहीं उतारा वह मेरे और तुम्हारे लिए 'ग़ैब' है, जिस पर सिवाय अल्लाह के किसी का अधिकार नहीं, वह चाहे तो उतारे और चाहे तो न उतारे। अब अगर तुम्हारा ईमान लाना इसी पर आश्रित है कि जो कुछ अल्लाह ने नहीं उतारा है, वह उतरे तो उसके इन्तिज़ार में बैठे रहो। मैं भी देखूंगा कि तुम्हारा यह दुराग्रह पूरा किया जाता है या नहीं।

मानव-समानता

● संपादन प्रभाग

सामाजिक अन्याय और इन्सानों के बीच जाति, धर्म, क्षेत्र और भाषा के आधार पर भेदभाव प्राचीन युग से आज तक चला आ रहा है । यह भेदभाव आगे बढ़कर घृणा, दुश्मनी, अपमान, जुल्म-ज़्यादती, अत्याचार और मानवाधिकार हनन तक पहुंच जाता है । निहित स्वार्थों के चलते भेदभावपूर्ण व्यवस्था के पक्ष में दलीलें इकट्ठा की गयीं, नियम क़ानून और सिद्धांत बनाए गये, यहां तक कि इस भेदभावपूर्ण नीति को धार्मिक मान्यता भी प्रदान की गयी । कई क़ौमों और देशों ने इसे अपनी स्थायी नीति बनाकर कार्य किये ।

यहूदियों ने अपनी क़ौम को अल्लाह की चहेती क़ौम ठहराया और धार्मिक कार्यों में भी ग़ैर-यहूदियों को नीचे स्तर पर रखा । हिन्दुओं के यहां वर्णाश्रम को धार्मिक मान्यता दी गयी, जिसके अनुसार ब्राह्मणों को श्रेष्ठ माना गया । उच्च वर्ग के अतिरिक्त सारे लोग 'दूसरी श्रेणी' के ठहराए गये । शूद्रों को अतिहीन स्थिति में डाल दिया गया और उन्हें बुनियादी मानवाधिकार भी प्राप्त नहीं प्रदान किये गये ।

रंगभेद ने अफ़्रीक़ा और अमेरिका के काले लोगों पर जो अत्याचार किये, उनसे इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं और ये अत्याचार आज तक जारी हैं । यूरोपीय लोगों ने अमेरिकी महाद्वीप में घुसकर वहां के मूल निवासियों, रेड इंडियन नस्ल पर इसी अवधारणा के तहत नस्लकुशी की ।

एशिया और अफ़्रीक़ा के कमज़ोर देशों पर अपना आधिपत्य स्थापित करके जो अमानवीय और भेदभावपूर्ण व्यवहार किये गये और आज इक्कीसवीं शताब्दी में भी जारी हैं, उनका कारण भी यही सोच है कि हमारे देश और हमारी क़ौम से बाहर पैदा होने वालों की जान, माल और इज़्ज़त पर हाथ डालने में कोई बुराई नहीं है । पाश्चात्य देशों के जातिवाद ने एक जाति को दूसरी जातियों के लिए जिस प्रकार हिंसक बना दिया है, उसके उदाहरण विश्व युद्ध के इतिहास से लेकर आज के समाचार पत्रों और न्यूज़ चैनलों पर देखे जा सकते हैं ।

सामाजिक समस्या और इस्लाम

आधुनिक युग में इस समस्या के समाधान में भारत सहित अन्य देशों में जो क़दम उठाए गये उनकी सराहना की जानी चाहिए, मगर व्यावहारिक धरातल पर उन्हें पूर्ण सफल नहीं कहा जा सकता । ऊंच-नीच, भेदभाव तथा अन्य सामाजिक समस्याओं के उन्मूलन में इस्लाम का योगदान प्रभावपूर्ण रहा है, जिसके निम्नलिखित कारण हैं–

1. इस्लाम अपने सुधारात्मक कार्य की शुरुआत बाहर से नहीं, बल्कि अन्दर से करता है और इन्सान के अन्तःकरण, उसकी अन्तरात्मा को झंझोड़ता है । ईशभय, अपने कार्यों के प्रति जवाबदेही तथा परलोक में ईश्वर के आशीष की प्राप्ति की आकांक्षा, इन्सान के व्यक्तित्व में मज़बूती प्रदान करती है । समाज-सुधार के अन्य कार्यक्रमों का यह पहलू बहुत कमज़ोर रहा है ।

2. सामाजिक न्याय, मानव-समानता और भाईचारे को इस्लाम ने बड़ी गंभीरता से लिया और एक ऐसी अवधारणा (Ideology) प्रस्तुत की जो पूर्ण तथा संतुलित होने के साथ-साथ व्यावहारिक भी है और आज भी लागू करने योग्य है । इस्लाम ने मानव असमानता में डूबे अरबों की कायापलट कर दी । ऊंच-नीच, काले-गोरे, आक़ा और ग़ुलाम का भेदभाव समाप्त कर दिया । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने सार्वजनिक घोषणा कर दी थी कि "अज्ञानताकाल की समस्त रूढ़िवादी परंपराएं मेरे पैरों तले हैं ।" अर्थात् पूर्णरूप से निरस्त कर दी गयी हैं ।

3. नैतिक चेतना और अंतरात्मा को अपील करने के साथ इस्लाम ने शासन-प्रशासन और क़ानून व्यवस्था द्वारा अधिक बिगड़े लोगों से सख़्ती से निबटने का प्रबंध भी किया और आचार संहिता के साथ-साथ दंड विधान भी बनाया और उसे अंतिम विकल्प के रूप में पूर्ण निष्पक्षता के साथ समाज के सभी वर्गों पर लागू किया ।

सामाजिक न्याय, समता-समानता और मानव-समानता संबंधी जो इस्लामी शिक्षाएं हैं, उनको यहां संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है ।

सभी इन्सान आपस में भाई-भाई हैं

पवित्र क़ुरआन में अनेक स्थानों पर इस तथ्य का उल्लेख किया गया है । सबसे महत्वपूर्ण अंश इस प्रकार है–

"ऐ लोगो ! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो । वास्तव में अल्लाह के यहां तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे अधिक ईशभय रखता है ।" (क़ुरआन, 49:13)

क़ुरआन के इस अंश में मानवजाति को प्रत्यक्ष रूप से संबोधित करके उस बड़ी बुराई का सुधार किया गया है, जो सदैव विश्वव्यापी फ़साद व बिगाड़ के जड़ में रही है अर्थात् जाति, रंग, भाषा और क़ौम का भेदभाव ।

सभी की उत्पत्ति एक ही प्रकार से की गयी

इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार सभी इन्सानों के पैदा होने की प्रक्रिया तथा मूल तत्व एक समान हैं ।

"वही है जिसने पैदा किया तुम्हें मिट्टी से, फिर वीर्य से, फिर रक्त के लोथड़े से, फिर वह तुम्हें बच्चे के रूप में निकालता है । (क़ुरआन, 40:67)

इन्सान को ईश्वर ने ससम्मान धरती में बसाया

ईश्वर ने इन्सान को धरती पर आदरपूर्वक रखा है और उन्हें अपनी नेमतें प्रदान की हैं इस सम्मान और आशीश में आदम की संपूर्ण नस्ल सम्मिलित है । ऐसा नहीं है कि एक वर्ग को यह गौरव प्राप्त हो और दूसरे को नहीं । ऊंच-नीच, आदर और अनादर इन्सानों के अपने क़ानून तो हो सकते हैं, ईश्वर के नहीं । उसकी दृष्टि में सब बराबर हैं ।

"हमने आदम की संतान को श्रेष्ठता प्रदान की और उन्हें थल और जल में सवारी दी और अच्छी शुद्ध चीज़ों की उन्हें रोज़ी दी और अपने पैदा किये हुए बहुत से प्राणियों की अपेक्षा उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की ।" (क़ुरआन, 17:70)

एक ईश्वर में विश्वास

इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार अल्लाह संपूर्ण मानवजाति का पालनहार है । क़ुरआन के सबसे पहले मंत्र में यह घोषणा कर दी गयी–

"सारी प्रशंसा संपूर्ण जगत के पालनहार के लिए हैं ।" (क़ुरआन, 1:1)

तात्पर्य यह है कि अल्लाह किसी विशेष वर्ग या जाति का रब नहीं, सारे जगत का रब है इसलिए सभी मनुष्य उसके पैदाइशी बन्दे हैं, इसीलिए क़ुरआन अनेक स्थानों सीधे इन्सानों को संबोधित करता है–

"ऐ लोगों ! बन्दगी करो अपने पालनहार की जि तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि बच सको ।" (क़ुरआन, 2:

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) सबके लिए

एक ईश्वर में विश्वास के बाद, इस्लामी आस्था दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु ईशदूतत्व है । अंतिम ईशदूत हज़ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सारे इन्सानों रहनुमा व मार्गदर्शक हैं–

"कहो, ऐ लोगो ! मैं तुम सबके लिए अल्लाह रसूल हूं ।" (7:15

आप (सल्ल०) संपूर्ण जगत के लिए दयालुता हैं–

"हमने आपको संपूर्ण जगत के लिए रहमत (दयालुत बनाकर भेजा है ।" (क़ुरआन, 21:10

धर्म ग्रंथ सबके लिए

ईश्वर का अंतिम संदेश पवित्र क़ुरआन सभी इन्सानों मार्गदर्शन के लिए अवतरित किया गया–

"रमज़ान के महीने में क़ुरआन अवतरित हुआ स इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए ।" (क़ुरआन, 2:18

"ऐ इन्सानों ! तुम्हारे पास आ गयी है नसीहत तुम्हारे की ओर से और इसमें उपचार है जो रोग सीनों में हैं अ मार्गदर्शन और रहमत है आस्थावानों के लिए ।" (क़ुरआन, 10:57

परलोक

मरने के बाद के जीवन में इस लोक के कर्मों क हिसाब सभी से होगा और अल्लाह पूरे इन्साफ़ के सा अच्छा बदला या सज़ा देगा । स्वर्ग के आनन्द या नरक क यातनाएं कर्मों के आधार पर निर्धारित होंगी न कि जाति अ वर्ग के आधार पर । इसमें किसी प्रकार का भेदभाव सिफ़ारिश नहीं चलेगी ।

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाएं

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का संपूर्ण जीवन ऊंच-नी और भेदभाव को समाप्त करने को समर्पित था, जिसक उदाहरण इतिहास के पन्नों में देखे जा सकते हैं । य सामाजिक न्याय के संबंध में आप (सल्ल०) की शिक्षाओ को उल्लिखित किया जा रहा है, जो आप (सल्ल०) अंतिम हज के अवसर पर फ़रमाया था–

"लोगो ! मेरी बात ध्यान से सुनो, हो सकता है इस वर्ष बाद इस स्थान पर मैं तुमसे कभी न मिल सकूं । ज्ञानकाल की समस्त रीतियां मेरे पैर के नीचे हैं । तुम बका प्रभु एक है और बाप भी एक है । किसी अरब को किसी ग़ैर-अरब पर बड़ाई नहीं, न किसी गोरे को किसी ाले पर, हां बड़ाई तो केवल ईशभय के आधार पर है ।"

(हदीस : बैहक़ी)

असमानता पर कुठाराघात

इस्लाम एक ओर तो समता-समानता और सामाजिक ाय को धरती पर देखना चाहता है, तो दूसरी ओर ऐसे ाम कारणों व कारकों को जड़ के साथ नष्ट करता है, जो समानता को पैदा करते तथा उसे पोषित करते हैं । मुख्य न्दु इस प्रकार हैं–

जाति, नस्ल (Race)

आदमी किस जाति में पैदा हुआ यह प्राचीनकाल से ाज तक ऊंच-नीच और असमानता का महत्वपूर्ण कारक हा है । भारत में दलित, अरब में ग़ैर-अरब और दास, हूदियों में अपनी नस्ल से बाहर के लोग वह मान-सम्मान रुतबा न रखते, जो सवर्ण या अरब वाले या यहूदी रखते े । इसी तरह यूनानी, ईरानी, अलग-अलग सामाजिक स्थान खते थे । इस्लाम ने इसको समाप्त किया कि तुम सब एक जोड़े की संतान हो । अलग-अलग क़बीले और गोत्र, छोटा-बड़ा नहीं बनाते, यह तो मात्र एक पहचान के लिए है ।

रंग

भेदभाव का बड़ा कारण आदमी की त्वचा का रंग भी हा है । काले (Negroes) तथा गोरे (Whites) के बीच रंग भेद पर बहुत कटुता रही है । गोरे, कालों को इन्सान मानने को तैयार नहीं थे । अनेक प्रयासों के बाद भी अपेक्षित सुधार नहीं लाया जा सका । पवित्र क़ुरआन में विभिन्न रंग होना एक प्राकृतिक मामला बताया गया है । (क़ुरआन, 35:27,28)

भाषा

भाषा के आधार पर किसी को ऊंचा-नीचा समझने को इस्लाम स्पष्ट रूप से नकारता है । अरबवासी अपनी भाषा पर इतना अधिक गर्व करते थे कि अरबी न बोलने वालों को 'गूंगा' कहते थे । क़ुरआन ने बताया कि ईश्वर ने हर समुदाय में अपने दूत भेजे और वे अपनी क़ौम की भाषा ही बोलते थे ।

(क़ुरआन, 14:4)

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने अपने शिष्यों को हेब्रु तथा सुरयानी आदि विदेशी भाषा सीखने को प्रेरित किया ।

क्षेत्रवाद

इन्सानों के पैदा होने तथा रहने-बसने के स्थानों को भी ऊंच-नीच और भेदभाव का कारण बना लिया गया । अलग-अलग क्षेत्रों में जीवन व्यतीत करने को इस्लाम एक स्वाभाविक क्रिया के रूप में देखता है ।

"कह दो ! वही है जिसने तुम्हें धरती में फैलाया और उसी की ओर तुम एकत्र किये जाओगे ।

(क़ुरआन, 67:24)

पेशा

इन्सान अपनी रोज़ी-रोटी कमाने के लिए कौन-सा पेशा अपनाता है, यह ऊंच-नीच का एक बड़ा कारण बना । भारतीय सामाजिक व्यवस्था में इसकी जड़ें बहुत गहरी हैं । दूसरे स्थानों पर भी यह सामाजिक असमानता का एक बड़ा कारक है ।

आध्यात्म तथा विद्या के क्षेत्र से जुड़े लोगों को समाज में ऊंचा स्थान प्राप्त था । सेवा-कार्य करने वालों को नीचा स्थान मिला । सेवकों में भी दर्जा बन्दी हुई और कुछ दलित और शूद्र कहलाए । इस्लाम ने भेदभाव के इस द्वार को बन्द किया । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने श्रम व परिश्रम को सम्मान प्रदान किया ।

महिलाओं के दर्जे को ऊंचा उठाया

इस्लाम ने समाज में महिलाओं के दर्जे (Status) को ऊपर उठाया । कई धर्मों में महिलाओं को पापजननी बताया गया था, इस्लाम ने महिला वर्ग के इस कलंक को धोया । मां के रूप में उसे अति सम्मानित किया । 'मां के पैरों तले जन्नत' की शुभ सूचना दी । बेटी को पैदा होने को मुबारक, अच्छा शगुन बताया और उनके लालन-पालन को स्वर्ग मिलने का माध्यम बताया । बेटों को उन पर वरीयता देने से रोक दिया । विवाह के समय उनकी सहमति को महत्व दिया । उन्हें विवाह धन (मेहर) प्राप्त करने का अधिकारी बनाया । आर्थिक स्वतंत्रता और पिता, पति, पुत्र की विरासत में हिस्सेदार बनाया । इस तरह इस्लाम ने मां की सेवाओं को समाज में प्राथमिकता दी है ।

इस प्रकार महिलाओं के साथ हो रहे भेदभाव को इस्लाम ने पूर्णतया समाप्त किया ।

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)
Mumbai (Maharashtra)

Chairman : Janab Imammuddin Nihaluddin Shaikh

Contact Us : 9022665544, 9869641648

परलोक की धारणा...जन्नत ही सफलता का मुख्य स्थान

श्याम नारायण चौहान
(चंदौली, उ०प्र०)

अल्लाह ने इन्सान के लोक-परलोक की कामयाबी के लिए अपनी पवित्र किताब कुरआन मजीद में कुछ आवश्यक शर्तें निधारित कीं, जो निम्नवत है–

1. अलिफ़ लाम मीम (2) यह अल्लाह की किताब है इसमें कोई संदेह नहीं । हिदायत है उन परहेज़गार लोगों के लिए (3) जो ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान लाते हैं नमाज़ क़ायम करते हैं, जो रोज़ी हमने उनको दी है उसमें से ख़र्च करते हैं (4) जो किताब तुम पर उतारी गयी है (अर्थात कुरआन) और जो किताबें तुमसे पहले उतारी गयी थीं उन सब पर ईमान लाते हैं और आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं (5) ऐसे लोग अपने रब की ओर से सीधे रास्ते पर हैं और वही सफलता प्राप्त करने वाले हैं ।''

यह आख़िरत का अपने आप में एक स्थाई प्रमाण है । इसका अर्थ यह है कि अगर ये लोग बाहर किसी ओर नज़र दौड़ाने से पहले स्वयं अपने अस्तित्व पर विचार करते तो इन्हें अपने भीतर भी वे दलीलें मिल जातीं जो आज की ज़िन्दगी के बाद दूसरी ज़िन्दगी की ज़रूरत सिद्ध करते हैं । इन्सान की तीन प्रमुख विशेषताएं ऐसी हैं जो उसको ज़मीन की दूसरी चीज़ों से अलग कर देती हैं ।

आख़िरत यह छठी और आख़िरी शर्त है । आख़िरत एक व्यापक शब्द है जो बहुत से विश्वासों के योग के लिए बोला जाता है इसमें निम्नलिखित विश्वास सम्मिलित हैं ।

(क) यह कि इन्सान इस दुनिया में ग़ैर-ज़िम्मेदार नहीं है बल्कि अपने तमाम कर्मों के लिए अल्लाह के सामने जवाबदेह है ।

(ख) यह कि दुनिया की वर्तमान व्यवस्था सदा सर्वदा रहने वाली नहीं है बल्कि एक समय आने पर जिसे केवल अल्लाह ही जानता है इसका अंत हो जाएगा ।

(ग) दुनिया के अंत के बाद अल्लाह एक दूसरी दुनिया बनाएगा और उसमें संपूर्ण मानव जाति को जो आदिकाल से लेकर क़ियामत तक ज़मीन पर पैदा हुई थी एक ही साथ दोबारा पैदा करेगा और सबको जमा करके उनके कर्मों का हिसाब लेगा और हर एक को उसके किये का पूरा-पूरा बदला देगा ।

(घ) यह कि अल्लाह के इस फ़ैसले के अनुसार जो लोग नेक क़रार पाएंगे वे जन्नत में जाएंगे और जो बुरे ठहरेंगे वे दोज़ख़ में डाले जाएंगे ।

(ड़) यह कि सफलता और असफलता की कसौटी वर्तमान जीवन की ख़ुशहाली और बदहाली नहीं है, बल्कि वास्तव में सफल इन्सान वह है जो अल्लाह के आख़िरी फ़ैसले में सफल ठहरे और असफल वह है जो वहां असफल हुआ । प्राय: देखने में आता है कि लोग दुनिया की ख़ुशहाली में मग्न रहते हैं और उसी के लिए बराबर दौड़-धूप करते रहते हैं जिसके परिणामस्वरूप अपनी कमाई में, सही, ग़लत, हलाल व हराम की तमीज़ नहीं करते और दुनियावी ज़िन्दगी को ही सब कुछ समझ बैठते हैं, आगे भी कुछ है इसके बारे में सोच-विचार तक नहीं करते जैसा कि कुरआन मजीद में है–

''लोग दुनिया की ज़िन्दगी का बस ऊपरी पहलू जानते हैं और आख़िरत से वे स्वयं भी ग़ाफ़िल हैं । क्या उन्होंने

कभी अपने आप में सोच-विचार नहीं किया ? अल्लाह ने ज़मीन और आसमानों को और उन सारी चीज़ों को जो उनके बीच है सत्य पर और एक नियत समय ही के लिए पैदा किया है । मगर बहुत से लोग अपने रब के मुलाक़ात के इन्कारी हैं ।" (कुरआन, 30:7,8)

यह आख़िरत का अपने आप में एक स्थाई प्रमाण है । इसका अर्थ यह है कि अगर ये लोग बाहर किसी ओर नज़र दौड़ाने से पहले स्वयं अपने अस्तित्व पर विचार करते तो इन्हें अपने भीतर भी वे दलीलें मिल जातीं जो आज की ज़िन्दगी के बाद दूसरी ज़िन्दगी की ज़रूरत सिद्ध करते हैं । इन्सान की तीन प्रमुख विशेषताएं ऐसी हैं जो उसको ज़मीन की दूसरी चीज़ों से अलग कर देती हैं ।

एक यह कि ज़मीन और उसके वातावरण की अनगिनत चीज़ें उसके वशीभूत कर दी गयी है और उनके उपयोग के विस्तृत अधिकार उनको दे दिये गये हैं ।

दूसरे यह कि उसे अपनी ज़िन्दगी का रास्ता चुनने में आज़ाद छोड़ दिया गया है ईमान और कुफ़्र (इन्कार) आज्ञापालन और अवज्ञा, नेकी और बदी की राहों में से जिस राह पर भी जाना चाहे जा सकता है । सत्य और असत्य, सही और ग़लत जिस तरीक़े को भी अपनाना चाहे अपना सकता है । हर रास्ते पर चलने की उसे सामर्थ दी गयी है और उस पर चलने में वह अल्लाह के जुटाए साधनों का उपयोग कर सकता है भले ही वह अल्लाह के आज्ञापालन का रास्ता हो या उसकी अवज्ञा का रास्ता ।

तीसरे यह कि उसमें पैदाइशी तौर पर नैतिकता की अनुभूति रख दी गयी है जिसके आधार पर वह उन कर्मों में अंतर करता है जिसके संबंध में उसे करने या न करने का अधिकार प्राप्त है और जिनमें वह विवश है उसे अधिकार प्राप्त नहीं है । वह यह इख़्तियारी कामों को भलाई और बुराई की श्रेणी में रखता है और तत्काल यह राय क़ायम करता है कि अच्छा काम ईनाम का और बुरा काम सज़ा के योग्य होना चाहिए । ये तीनों विशेषताएं जो इन्सान के अपने अस्तित्व से पायी जाती है इस बात की निशानदेही करती है कि कोई समय ऐसा होना चाहिए जब इन्सान का हिसाब-किताब किया जाए और उससे पूछा जाए कि जो कुछ दुनिया में उसको दिया गया था उसके उपयोग के अधिकारों को उसने किस तरह इस्तेमाल किया फिर यह देखा जाए कि उसने चुनाव की अपनी स्वतंत्रता को प्रयोग में लाकर सही रास्ता अपनाया या ग़लत तब उसके इख़्तियारी कामों की जांच की जाए और भले कर्म पर ईनाम और बुरे कर्म पर सज़ा दी जाए ।

यह समय अनिवार्य रूप से इन्सान की जीवन लीला ख़त्म और उसके कामों का खाता बन्द होने के बाद ही आ सकता है न कि इससे पहले । और यह समय अनिवार्यत: उसी समय आना चाहिए जबकि एक व्यक्ति या एक क़ौम का नहीं बल्कि सारे ही इन्सानों के कर्मों का ख़ाता बन्द हो क्योंकि एक व्यक्ति या एक क़ौम के मर जाने पर उन प्रभावों का सिलसिला समाप्त नहीं हो जाता जो उसने अपने कर्मों के कारण दुनिया में छोड़े हैं, उसके छोड़े हुए अच्छे या बुरे प्रभाव भी तो उसके हिसाब में गिने जाने चाहिए । वे प्रभाव जब तक पूरे तौर पर प्रकट न हो लें न्याय के अनुसार पुरा हिसाब किताब और सज़ा और ईनाम देना कैसे संभव है । इस तरह इन्सान का अपना अस्तित्व इस बात की गवाही देता है और ज़मीन में इन्सान को जो हैसियत हासिल है वह आप से आप इस बात का तक़ाज़ा करती है कि दुनिया की मौजूदा ज़िन्दगी के बाद एक दूसरी ज़िन्दगी ऐसी हौ जिसमें अदालत क़ायम हो, इन्साफ़ के साथ इन्सान की ज़िन्दगी के कर्मों का हिसाब-किताब किया जाए और हर आदमी को उसके काम के हिसाब से बदला दिया जाए ।

आख़िरत के दो प्रमाण और हैं वह यह कि इन्सान अगर अपने अस्तित्व से बाहर की सृष्टि की व्यवस्था को ध्यान से देखे तो उसे दो वास्तविकताएं स्पष्ट दिखायी देती हैं ।

एक यह कि इस सृष्टि की रचना सोदेश्य की गयी है यह किसी बच्चे का खेल नहीं है कि सिर्फ़ मन बहलाने के लिए उसने वे ढंगा सा घरौंदा बना लिया हो जिसका बनाव व बिगाड़ दोनों ही निरर्थक हो बल्कि यह एक गंभीर व्यवस्था है जिसका एक-एक कण इस बात की गवाही दे रहा है कि उसे अत्यंत समझ बूझ और विवेक के साथ बनाया गया है, जिसकी हर चीज़ में एक क़ानून काम कर रहा है एवं जिसकी हर चीज़ उद्देश्यपूर्ण है । दूसरी वास्तविकता तो इस सृष्टि की व्यवस्था के अध्ययन करने से स्पष्ट दिखायी देती है वह यह कि यहां किसी चीज़ के लिए भी स्थायित्व नहीं है । हर चीज़ के लिए एक उम्र निश्चित है जिसे पहुंचने के बाद वह समाप्त हो जाती है यही मामला कुल मिलाकर पूरी सृष्टि का भी है । यहां जितनी शक्तियां काम कर रही हैं वे सब सीमित हैं एक समय तक वे काम

कर रही है और किसी वक़्त पर अवश्य ही उन्हें ख़र्च हो जाना है और इस व्यवस्था को समाप्त हो जाना है । जैसा कि क़ुरआन मजीद में है–

"और अल्लाह के साथ किसी दूसरे उपास्य को न पुकारो । उसके सिवा कोई उपास्य नहीं है । हर चीज़ नष्ट होने वाली है सिवाय उसकी ज़ात के । शासन उसी का है और उसी की ओर तुम सब पलटाये जाने वाले हो ।"

(क़ुरआन, 28:88)

यह आख़िरत के पक्ष में ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत है । आख़िरत का इन्कार दुनिया में दो चार आदमियों ही ने नहीं किया है मानव इतिहास में बहुत से इन्सान इस रोग के शिकार हैं और हो रहे हैं बल्कि पूरी-पूरी क़ौमें ऐसी गुज़री हैं जिन्होंने या तो उसका इन्कार किया है या उससे वे परवाह होकर रही हैं या मरने के बाद की ज़िन्दगी के बारे में ऐसे ग़लत अक़ीदे गढ़ लिए गये जिनसे आख़िरत का अक़ीदा निरर्थक होकर रह जाता है । फिर इतिहास का निरंतर अनुभव बताता है कि आख़िरत का इन्कार जिस रूप में भी किया गया उसका ज़रूरी नतीजा यह हुआ कि लोगों के चरित्र बिगड़ गये वे अपने आपको अनुत्तरदाई समझ कर बेनकेल का ऊंट बन गये जिन्होंने ज़ुल्म व बिगाड़ धृष्टता और दुष्टता की हद कर दी और इसी चीज़ की वजह से क़ौमों पर क़ौमें नष्ट होती चली गयीं । क्या हज़ारों साल का इतिहास का यह अनुभव जो बराबर इन्सानी नस्लों के सामने आता रहा है यह सिद्ध नहीं करता कि आख़िरत एक सच्चाई है जिसका इन्कार इन्सान को नष्ट कर देने वाला है ।

अल्लाह पाक ने इस भारी तबाही से बचने के लिए एक अपने बन्दों को अपना भविष्य संवारने हेतु अपनी पवित्र किताब क़ुरआन मजीद में यह सदुपदेश दिया है ।

"ऐ लोगों जो ईमान लाए हो अल्लाह से डरो और प्रत्येक व्यक्ति यह देखे कि उसने कल के लिए क्या सामान किया है । अल्लाह से डरते रहो अल्लाह निश्चित रूप से तुम्हारे उन तमाम कर्मों की ख़बर रखता है जो तुम करते हो ।"

(क़ुरआन, 58:18)

कल से तात्पर्य आख़िरत है मानो दुनिया की यह पूरी ज़िन्दगी आज है और कल वह क़ियामत का दिन है जो इस आज के बाद आने वाला है । हर व्यक्ति को आप ही अपना उत्तरदायी बनाया गया है जब तक किसी व्यक्ति में स्वयं अपने बुरे और भले की पहचान पैदा न हो जाए उसको सिरे से यह एहसास ही नहीं हो सकता कि जो कुछ वह कर रहा है वह आख़िरत में उसके भविष्य को संवारने वाला है या बिगाड़ने वाला । और जब उसके अन्दर यह एहसास पैदा हो जाए तो उसे स्वयं ही अपना हिसाब लगाकर यह देखना होगा कि वह अपने समय, अपनी पूंजी, अपनी मेहनत, अपनी योग्यताएं और अपनी कोशिशों को जिस राह में लगा रहा है वह उसे जन्नत की ओर ले जा रही है या जहन्नम की ओर ।

जन्नत ही सच्ची सफलता की जगह है अर्थात जो अल्लाह की ज़मीन में अपनी बड़ाई क़ायम करने की इच्छा नहीं करते, जो उद्दंड दमनकारी और अहंकारी बनकर नहीं रहते बल्कि बन्दे बनकर रहते हैं और अल्लाह के बन्दों को अपना बन्दा बनाकर रखने की कोशिश नहीं करते । मानव जीवन व्यवस्था का वह बिगाड़ जो सत्य का उल्लंघन करने के नतीजे में अनिवार्य रूप से पैदा होती हैं । अल्लाह की बन्दगी और उसके क़ानूनों के पालन से निकलकर आदमी जो कुछ भी करता है वह पूरे का पूरा बिगाड़ ही है इसी का वह एक हिस्सा वह बिगाड़ भी है जो हराम तरीक़े से दौलत समेटने और हराम रास्तों में ख़र्च करने से पैदा होती है । उपरोक्त बुराइयों से बचे रहकर जीवन व्यतीत करने वालों को क़ुरआन ख़ुशख़बरी देता है । "वह आख़िरत का घर तो हम उन लोगों के लिए ख़ासकर देंगे जो ज़मीन में अपनी बड़ाई नहीं चाहते और न बिगाड़ पैदा करना चाहते हैं और अंजाम की भलाई परहेज़गारी ही के लिए है ।"

(क़ुरआन, 28:83)

UNITED ELECTRONIC SPARES

Deals :
Electronic Spare Parts,
TV, DVD, DTH & All Types of Remote,
CFL Glass & CFL Kit, USB Set, Fan,
Iron, Mixer, Mobile Accessories,
0-25 KVA To 10 KVA Stabiliser &
Inverter, CFL Inverter &
12 V 7.2AH Battery

Shop No-8, Hotel Ashoka Complex,
L.T. Road, Ramgarh Cantt, Jharkhand

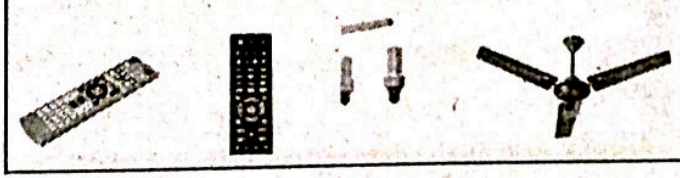

मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीबाग, (झारखण्ड)

नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

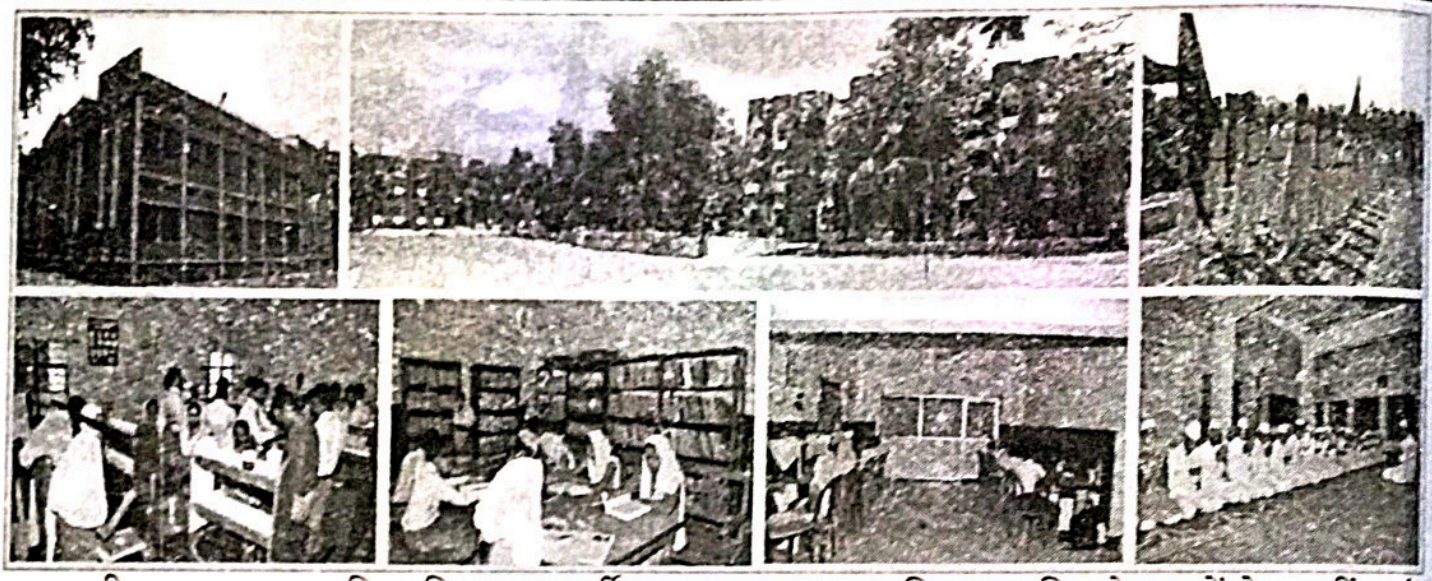

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयावी हासिल की।

उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैव, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016

एस॰एम॰ नईम	साद राशिद ख़ान नदवी	वकील अहमद
एम ए , बी एड ए (अलीग)	फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ	एम.एस.सी., बी.एड.
निदेशक	छात्रावास अधिक्षक	प्राचार्य

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मोवाइल : 09431530878/7739748279, वेवसाइट : munammission.org

ई.मेल : hmpt.mission@gmail.com

मानवता उपकारक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

■ इक्तिसाम इलाही ज़हीर

मानव-इतिहास गवाह है कि जब भी कभी इन्सान आस्था, नैतिक और आर्थिक रूप से पतन की गहराइयों में जा गिरा, तो अल्लाह ने इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए नबियों और पैग़म्बरों को दुनिया में भेजा । क़ुरआन मजीद के अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि नूह, आद, समूद क़ौम के लोग जब अल्लाह को भूलकर शिर्क और बुराइयों की सारी सीमाओं को पार कर चुके थे, तो अल्लाह तआला ने उनके मार्गदर्शन के लिए हज़रत नूह, हज़रत हूद और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को दुनिया में भेजा । सदूम शहर के लोग समलैंगिकता के ग़लत रास्ते पर इतना आगे निकल चुके थे कि उनके मार्गदर्शन के लिए अल्लाह ने हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को दुनिया में भेजा । शुऐब की क़ौम के लोग कारोबारी मामलों में असंतुलन का शिकार हो चुके थे, वे लाभ प्राप्त करने के लिए हर तरह के नैतिक सिद्धांतों को कुचलना शुरू कर चुके थे और नाप-तौल में कमी करना उनका नित्य-कर्म बन चुका था । उनके मार्गदर्शन के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत शुऐब (अलैहि०) को दुनिया में भेजा ।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को दुनिया के जिस इलाक़े में भेजा गया था, उस इलाक़े के लोग नस्ली व ऐतिहासिक रूप से हज़रत इबराहीम (अलैहि०) और हज़रत इस्माईल (अलैहि०) के वारिस थे और मक्का में काबा शरीफ़ के आसपास आबाद थे, लेकिन इसके बावजूद उनमें हर तरह की बुराइयां पूरे उत्थान पर पहुंच चुकी थीं । उनके अनेकेश्वरवादिता का हाल यह था कि पेड़-पत्थर, सूरज-चांद और सितारों के सामने वे अपने शीश को झुकाया करते थे । अपने हाथों से खुद बुतों को बनाकर अल्लाह के पवित्र घर काबा में रखकर उन्हीं के सामने अपना सिर झुकाया करते थे अर्थात उनकी पूजा करते थे । इस बहुदेववादिता के साथ-साथ उनमें तरह-तरह के ऐब भी मौजूद थे ।

वे अपनी बेटियों के जन्म पर शर्मिन्दगी महसूस करते थे और अपने दोस्तों व साथियों के तानों से बचने के लिए अपनी नवजात बच्चियों को ज़िंदा ज़मीन में दफ़न कर देते थे । मदिरापान करके हर वक़्त एक-दूसरे से लड़ा करते थे । ये लोग अन्याय व अत्याचार की सारी सीमाओं को पार कर चुके थे । जब उनमें से कोई बड़ा व्यक्ति किसी जुर्म को स्वीकार करता, तो उसको माफ़ कर दिया जाता, लेकिन अगर कोई छोटा व्यक्ति किसी जुर्म को स्वीकार करता, तो उसे सज़ा दी जाती । जुआ, मदिरापान और व्यभिचार अपने उत्थान पर था, जैसे कि इन्सानियत अंधेरों में डूबी हुई थी और उसको अपनी मंज़िल का सुराग़ नहीं मिल रहा था ।

ऐसे हालात में अल्लाह तआला ने मानवता पर रहम करने का इरादा किया, अतः अल्लाह ने सृष्टि पर बसने वाली समस्त मानवजाति के मार्गदर्शन के लिए मानवता उपकारक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को दुनिया में भेजा । आप (सल्ल०) अपने समाज में पायी जाने वाली बुराइयों और गुमराहियों पर ग़मगीन रहा करते थे और आपको उनके नापसंदीदा प्रवृत्तियों में किसी भी तरह की कोई कशिश महसूस न होती, अतः आपने एकांतवास अपनाने का इरादा किया और इस उद्देश्य के लिए ग़ारे हिरा का चुनाव कर लिया ।

ग़ारे हिरा में आप (सल्ल०) इन्सानी व्यवहारों, ब्रह्मांड की हक़ीक़त, मानव-सृष्टि का उद्देश्य, इन्सानों की हीनता-दीनता, उनकी वहशत को दूर करने वाले, उनकी कुमार्गता को ख़त्म करने वाले कारणों और संसाधनों और अन्य अहम कामों पर ग़ौर किया करते थे । अल्लाह ने उसी ग़ारे हिरा में आप (सल्ल०) के पास हज़रत जिबरील (अलैहि०) को भेजकर आपके मुबारक सिर पर नुबूवत का ताज रख दिया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता के सारे दरवाज़े खोल दिये और आपको उन सारी समस्याओं और पेचीदगियों का हल बतला दिया गया कि जिन पर अमल करके भटकी हुई इन्सानियत को अपनी मंज़िल मिल सकती थी ।

अल्लाह के आदेश पर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने

अरबवासियों को एकेश्वरवाद की दावत देना शुरू किया । आपने सबसे पहले अरबवासियों को इस काम से सचेत किया कि ये बुत, सूरज, चांद-सितारे किसी तरह के लाभ-हानि के मालिक नहीं हो सकते । आपने उनको एकेश्वरवाद का पाठ पढ़ाया । अरबवासी आपकी इस दावत पर आपके ख़ून के प्यासे हो गये । आपको तरह-तरह के कष्ट पहुंचाए गये । आप (सल्ल०) ने हर तरह के दुख व कष्ट को सहन करना स्वीकार कर लिया, लेकिन एकेश्वरवाद की दावत देना न छोड़ा ।

एकेश्वरवाद की दावत के साथ-साथ आप (सल्ल०) ने अरबवासियों को बुरे कर्मों से निकलने की प्रेरणा दी । आपने उन्हें बेटियों को ज़िंदा दफ़न करने से मना किया और उन्हें अल्लाह की रहमत बताया । आपने उनको कदाचार के रास्ते से हटाकर सदाचारिता और पाकीज़गी का पाठ पढ़ाया और उनको व्यभिचार के बजाय निकाह की प्रेरणा दी । आपने समाज में मौजूद आर्थिक शोषण के सारे दरवाज़ों को बंद किया । आप (सल्ल०) ने सूद की लानत से समाज को मुक्ति दी और अल्लाह के आदेश से इन्सानियत को इस बात से सचेत किया कि सूद खाना अल्लाह और उसके रसूल से जंग करने के बराबर है । आपने औरत की महानता को उजागर किया और उसकी तरफ़ बढ़ने वाली कुत्सित निगाहों और हाथों को रोकने के लिए उसको परदादारी का पाठ पढ़ाया । परदे के द्वारा औरत की इज़्ज़त व आबरू हमेशा के लिए सुरक्षित हो गयी । आप (सल्ल०) ने समाज में प्रचलित अन्याय और शोषण को ख़त्म करने के लिए इस बात को स्पष्ट किया कि जुर्म करने वाला व्यक्ति चाहे कोई भी क्यों न हो, उसको हर स्थिति में उसके जुर्म का ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ेगा ।

आप (सल्ल०) के पवित्र दौर में बनू मख़ज़ूम की एक प्रभावशाली औरत ने चोरी की । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उसके हाथ को काटने का आदेश दिया । हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि०) जो कि आप (सल्ल०) के महबूब सहावी हैं, उन्हें आपके पास उस औरत के लिए सिफ़ारशी बनाकर भेजा गया । नबी करीम (सल्ल०) ने उस अवसर पर फ़रमाया था कि अगर मेरी बेटी फ़ातिमा भी चोरी करे, तो मैं उसके भी हाथ को काट डालूंगा । आप (सल्ल०) ने जुआ और द्यूतक्रिया का ख़ात्मा और दास प्रथा को समाप्त किया । आप (सल्ल०) ने नस्ली अभिमान के सारे दरवाज़ों को बंद कर दिया और अरब व ग़ैर-अरब के बीच श्रेष्ठता का आधार सिर्फ़ और सिर्फ़ ईशभय (तक़वा) को ठहराया ।

आप (सल्ल०) ने अपने साथियों में भी ऐसी संवेदनाओं को जागृति किया कि वे दूसरों की इज़्ज़त, वंशावली के बजाए सद्कर्मों के आधार पर करते थे । अतः हज़रत बिलाल (रज़ि०) अपने अच्छे कर्मों की ही वजह से आप (सल्ल०) के साथियों में प्रतिष्ठित स्थान रखते थे । आप (सल्ल०) ने अपने तेइस वर्षीय मुबारक दौर में एक ऐसी क्रांति ला दी कि जिसने अरब प्रायद्वीप को रोशन कर दिया । आपके पवित्र जीवन के बाद यह क्रांति अरब द्वीप समूह से बाहर निकलकर रोम, ईरान और बाद में पूरी दुनिया में फैल गयी । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) यथार्थ रूप से मानवता उपकारक हैं । आज भी इन्सानियत अपनी मजबूरियों और गुमराहियों से मुक्ति प्राप्त करना चाहती है, तो उसको आप (सल्ल०) के कार्य-पद्धति से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा ।

ग़ज़ल

प्रश्न फिर लेकर खड़ी है ज़िन्दगी
बात पर अपनी अड़ी है ज़िन्दगी

जोड़-बाक़ी-भाग का ये सिलसिला
बस सवालों की झड़ी है ज़िन्दगी

उम्र तय करती गयी लंबा सफ़र
राह में ठिठकी खड़ी है ज़िन्दगी

खुल रहा हर दिन नये अध्याय-सा
अनुभवों की इक कड़ी है ज़िन्दगी

हम जिये कब सांस-भर लेते रहे
क्या अजब धोखाधड़ी है ज़िन्दगी

दे न पायी अर्थ अब तक शब्द को
फांस-सी मन में गड़ी है ज़िन्दगी

हार में भी जीत की एक आस है
बस उमीदों की लड़ी है ज़िन्दगी ।

मधु शुक्ला
(भोपाल, म०प्र०)

बहुत बेआबरू होकर...

■ ज़हीर ख़ान

हमारे एक अत्यंत घनिष्ट मित्र जिन्हें हम प्रेम से करीम भाई कहते हैं और जिनकी सदर बाज़ार में जूते की दुकान है। मेरे अपार साहित्य प्रेम को देखते हुए एक दिन मुझ से कहने लगे कि मुझे भी साहित्य की सेवा करनी चाहिए। मैंने पूछा किस तरह तो कहने लगे कि शायरी लिखना प्रारंभ कर दो। मैंने कहा कि शायरीं कहना इतना आसान नहीं है जितना आप समझ रहे हैं। शायरी करने के लिए बहुत सारी संवेदना व दुख इकट्ठा करना पड़ता है या फिर कोई ऐसा साधन हो कि परोक्ष से विचार आ रहे हों तो शायरी हो सकती है,

"वरना बैठे रहें तसव्वुरे जानां किए हुए।"

कहने लगे तुम्हें शेअर तो बहुत सारे याद हैं न बस, उन्ही में से किसी की पृष्ठभूमि चुरा लो किसी का रदीफ़ और किसी का क़ाफ़िया ग़ज़ल तैयार हो जाएगी। अब भेज दो किसी पत्रिका में अपनी फ़ाटो के साथ, ग़ज़ल प्रकाशित हो जाएगी। इस तरह साहित्य की सेवा भी हो जाएगी और लोकप्रियता भी हासिल होगी।

बात लोकप्रियता की आयी तो मन में विचार आया कि करीम भाई का सुझाव बुरा नहीं है। क्यों न भाग्य आज़माया जाए। लोग लोकप्रियता की प्राप्ति के लिए क्या कुछ नहीं करते। इरादा पक्का कर लिया कि करीम भाई के इस बहुमूल्य सुझाव पर अवश्य अमल करेंगे और एक बहुत ही फड़कती हुई ग़ज़ल कहेंगे ताकि ग़ज़ल प्रकाशित होते ही साहित्य संसार में धूम मच जाए। प्रतिदिन फ़ोन पर फ़ोन आएंगे पत्रों का एक न थमने वाला सिलसिला शुरू हो जाएगा, कवि सम्मेलनों में ग़ज़ल पढ़ने के निमंत्रण भी आना शुरू हो जाएगा आदि।

संध्या का समय था, वातावरण भी सुहाना था इसलिए सोचा कि यह समय ग़ज़ल कहने के लिए अत्यधिक उपयुक्त है हो सकता है कि अधिकतर कवि रोमांचक ग़ज़ल कहने के लिए इसी समय का चयन करते हों। क़लम काग़ज़ लेकर बैठ गया इस आशा पर कि एक अच्छी सी फड़कती हुई रोमांचक ग़ज़ल हो जाएगी। बहुत ज़ोर मारा मस्तिष्क के घोड़े दौड़ाये, मगर बेकार न कोई रदीफ़ मस्तिष्क में आया न क़ाफ़िया और न ही परोक्ष से किसी विचार का आगमन हुआ। सुहावनी शाम ने मुझे अत्यधिक निराश किया, मगर धैर्य को हाथ से जाने न दिया। सोचा सुहावनी शाम से उत्तम रात की एकाग्रता व शांति है।

आख़िर मिर्ज़ा ग़ालिब भी तो रात ही को शेअर कहा करते थे अब यह उनका अपना स्टाइल था कि हर एक शेअर पर कमरबंद की की गिरह को गवाह बना लिया करत थे। अतएव रात दो बजे का चयन किया और घड़ी में अलार्म लगाकर बिस्तर पर लेट गया। रात ऐसी बेचैनी और व्याकुलता में गुज़री कि अलार्म से पहले ही आंख खुल गयी। क़लम काग़ज़ संभाला और ड्राइंगरूम में आ बैठा। रात का सन्नाटा और शांति क्या अच्छा समय था ग़ज़ल कहने का, बहुत सोचा बहुत ज़ोर लगाया तब कहीं जाकर पांच शेअर हो सके, सोचा यह पांच शेअर प्रयाप्त हैं कि यही एक अच्छी ग़ज़ल की पहचान है। मैं बहुत प्रसन्न था ऐसा लगता था मानो कोई बहुत बड़ा तीर मार लिया हो। ग़ज़ल सुंदर से रंगीन काग़ज़ पर लिखकर इसकी तीन प्रतियां बनायीं और सुबह तीन अलग-अलग पत्रिकाओं क़ो फ़ोटो के साथ पोस्ट कर दी।

पूरी आशा थी कि संस्थाओं को ग़ज़ल पहुंचते ही संपादकों द्वारा धन्यवाद का फ़ोन अवश्य आएगा और आगे ग़ज़ल की मांग भी होगी। मगर दो सप्ताह गुज़र जाने के बाद भी जब किसी एक संस्था से भी फ़ोन नहीं आया तो सोचा कि हो सकता है जल्दी में अपना फ़ोन नम्बर ग़लत लिख दिया हो या यह भी संभव है कि डाक की कुव्यवस्था के कारण संस्था को ग़ज़लें मिली ही न हों। मगर हमने तो तीन पत्रिकाओं को ग़ज़ल भेजी थी क्या किसी एक को भी नहीं पहुंची यह कैसे संभव है। दिल को सांत्वना दी कि उन्हें फ़ोन करके वस्तुस्थिति का पता कर लेते हैं। इसलिए सबसे पहले उस संपादक को फ़ोन किया जिसके पत्रिका की हर तरफ़ धूम मची थी।

संपादक महोदय ने फ़ोन उठाकर जिस अंदाज़ से

''हैलो'' कहा इससे तो मुझे यहीं आभास हुआ कि शायद मेरा फ़ोन किसी थाने में लग गया हो, ऐसी गरजदार आवाज़ तो किसी थानेदार की ही हो सकती है । दो बार पुष्टि चाही कि यह नम्बर उक्त पत्रिका के कार्यालय का है हर बार यही जवाब आया ''हां-हां इसी पत्रिका के कार्यालय का नम्बर है, मैं इस पत्रिका का संपादक बात कर रहा हूं, आपको किससे बात करनी है ?'' मैंने जल्दी से अपना परचिय कराया और बहुत विनम्रता और वीनीत स्वर में अर्ज़ किया कि महोदय एक ग़ज़ल पांच पंक्तियों वाली मैंने आपकी सेवा में प्रेषित की है । आपको अवश्य ही मिल गयी होगी, मगर मैं अपना फ़ोन नम्बर संभवत: जल्दी में ग़लत लिख गया था जिसके कारण अभी तक आपने फ़ोन करके न तो मुझे धन्यवाद ही कह पाये और न ही और कोई बातचीत ही की ।

जवाब आया ''अच्छा तो पांच पंक्तियों वाली ग़ज़ल के शायर आदरणीय महोदय आप हैं'' मैंने बहुत प्रसन्न होकर जवाब दिया ''जी जी में ही वह शायर हूं'' मनोस्थिति ठीक वैसी ही थी जिस प्रकार होनेवाली सालियां घर में दाख़िल हों और उस नवजवान से मालूम करें कि हम सबके होने वाले जीजाजी आप ही हैं ।'' और वह नवजवान खुश होकर जवाब दे ''जी जी में ही हूं ।'' हमें उम्मीद थी बल्कि पूर्ण विश्वास था कि संपादक महोदय अब हमारे ग़ज़ल की न केवल सराहना करेंगे बल्कि हमारी शायरी की योग्यता की पुष्टि करते हुए इसकी प्रशंसा व सराहना करेंगे मगर अभद्रता व असभ्यता की सीमा लांघते हुए कहने लगे कि ''मियां कोई और काम क्यों नहीं कर लेते । आख़िर यह सारा नज़ला उर्दू शायरी पर ही क्यों गिरा रहे हो ।'' मैंने आश्चर्यचकित होकर मालूम किया कि आख़िर मेरी ग़ज़ल में ऐसी कौन-सी कमी है जो आप इस तरह की अशोभनीय बात कह रहे हैं । कहने लगे कि जो तुमने भेजा है तुम उसे ग़ज़ल कहते हो, यह ग़ज़ल नहीं बल्कि ग़ज़ल के नाम पर एक कलंक है मेरी मानो तो एक नाई की दुकान खोल लो तुम्हारे लिए बेहतर रहेगी ।

मैंने दिल में सोचा कि यह आदमी बड़ा ही असभ्य है शुरू में तो आप जनाब कहकर बात कर रहा था और अब, 'तुम' पर उतर आया है ऐसा लगता है कि सभ्यता व संस्कृति से पूर्णत: अनभिज्ञ है । बात करने की शैली बता रही है कि उसे कभी सभ्य लोगों का सामीप्य नसीब नहीं हुआ या फिर इसे कोई मानसिक अथवा मनोवैज्ञानिक रोग है । पता नहीं किसने इसको संपादक बना दिया इससे तो बात करना भी अपनी प्रतिष्ठा को संकट में डालना है । मैंने यह कहकर फ़ोन बन्द कर दिया कि इस आदमी को बात करने की तमीज़ ही नहीं ।

ग़ज़ल तीन पत्रिकाओं में भेजी थी पहले से बात करने का अनुभव कुछ अच्छा नहीं रहा, बहरहाल दिल को समझाया कि एक अच्छे शायर को इन छोटी-छोटी बातों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए नहीं तो उसकी शायरी पर बुरा प्रभाव पड़ेगा । अतएव दूसरी जगह नये जोश और नयी उमंग के साथ फ़ोन मिलाया । जवाब में एक अत्यंत मधुर स्वर ने जैसे कानों में रस घोल दिया हो । मैं बहुत प्रसन्न हुआ कि यहां बात ज़रूर बन जाएगी । स्त्रियां वैसे भी अच्छी ग़ज़लों को पसंद करती हैं । मैंने बड़े आदर व सम्मान के साथ सलाम किया और अपना संक्षेप में परिचय कराने के बाद अर्ज़ किया महोदया एक फड़कती हुई ग़ज़ल पांच पंक्तियों वाली आपकी सेवा में प्रेषित की थी अवश्य ही आपको पसन्द आयी होगी । अभी इतना ही कह पाए थे कि कानों में रस घोलने वाली आवाज़ का स्वर कुछ से कुछ हो गया । कहने लगीं ''आप की फड़कती हुई ग़ज़ल हमारे ऑफ़िस में बराबर फड़फड़ा रही है और अवसर मिलते ही उड़ जाएगी । मुझे विश्वास है कि अपने प्रवास के लिए चांद पर बसेरा करेगी क्योंकि आपकी फड़कती हुई ग़ज़ल के हर शेअर में चांद का उल्लेख ज़रूर है मुझे तो ऐसा लगता है कि चांद साहब कि आप भी चंद्रमा के ही कोई प्राणी हैं । ग़लती से पृथ्वी पर उतार दिये गये हैं आपके लिए अच्छा तो यही है कि आप उसी चंद्रमा पर वापस विराजमान हो जाएं और वहीं बैठकर ग़ज़लें कहें ।'' यह कहकर महोदया ने फ़ोन बंद कर दिया ।

बहुत देर तक बैठा उर्दू साहित्य के भविष्य के बारे में सोचता रहा कि अगर इस तरह के लोग साहित्य सेवा पर पदासीन किए जाएंगे तो ईश्वर ही रक्षा करे उर्दू साहित्य की, कहां साहित्य और कहां इस तरह के असाहित्यिक लोग । अभी इसी सोच विचार में था कि दरवाज़े पर किसी ने ज़ोरदार घंटी बजायी मैं समझ गया कि यह अंदाज़ सिर्फ़ करीम भाई का ही हो सकता है । गुस्सा तो था ही जैसे ही करीम भाई अन्दर आए सारा गुस्सा उन्हीं पर उतार दिया कि न वह ग़लत सुझाव देते और न आज हम इतने अपमाणित होते ।

मां के दूध की महत्वपूर्ण विशेषताएं

■ डॉ॰ शबनम सय्यदा

आमतौर से यह तो हम सभी जानते हैं कि मां का दूध बच्चे के लिए अति आवश्यक है । पर इस बात को अत्यंत गहराई से जानने की ज़रूरत है कि स्तनपान की शुरूआत कब की जाए, इसमें पाया जाने वाला कोलेस्ट्रम बच्चे के लिए कितना ज़रूरी है, मां के दूध का पोषाहारीय ? महत्व क्या है, मां के दूध के अन्य लाभ हैं और यह किस प्रकार मां और बच्चे दोनों के लिए फ़ायदेमंद साबित होता है ।

शिशु जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान की शीघ्र शुरूआत करना, स्तनपान की सफलता और मां के आरंभिक दूध कोलेस्ट्रम प्रदान करने के लिए ज़रूरी है । नवजात शिशु अपने जीवन के प्रथम एक घंटे के दौरान बहुत सक्रिय होता है ।

यदि उसे मां का दूध पिलाने का प्रयास किया जाए तो वह स्तनपान करना जल्द ही सीख जाता है । बच्चे द्वारा जल्द स्तनपान आरम्भ करने से मां के शरीर में दूध बनने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है और मां के स्तन में फौरन उतनी बार और उतनी देर तक स्तनपान कराया जाए जितना शिशु चाहे । शिशु के जीवन में में स्तनपान का इतना बड़ा महत्व है कि वह जीवन भर मां के दूध के लाभ से लाभान्वित होता रहता है ।

अक्सर यह देखा जता है कि हमारे समाज में औरतें, जीवन के प्रथम छः माह के दौरान ही दूध के अलावा अन्य पेय पदार्थ जैसे घुट्टी, शहद पानी आदि पिलानें लगती हैं यह सही नहीं है । शिशु जीवन के प्रथम छः मांह के दौरान केवल मां का दूध पिलाया जाए । मां का दूध शिशु को पूर्ण पोषण प्रदान करता है । मां को दूध पीने वाले शिशुओं को किसी अन्य खाद्य पदार्थ या पेय जल जैसे ग्लूकोज़, घुट्टी, फलों का रस और पानी जैसे किसी पेय पदार्थ की आवश्यकता नहीं होती है यहां तक कि गर्मी के मौसम में भी शिशु के पानी की आवश्यकता की पूर्ति मां के दूध से पूरी हो जाती है । छः मांह तक केवल स्तनपान शिशुओं के स्वस्थ्य ज़ीवन की सर्वोत्तम शुरूआत है ।

शिशु जन्म के उपरान्त मां के दूध को कोलेस्ट्रम कहा जाता है यह दूध गाढ़े पीले रंग का होता है और आरंभ के कुछ दिनों तक ही आता है । इस गाढ़े पीले दूध को लेकर हमारे समाज में बहुत सी महिलाओं में अंधविश्वास गंदगी समझ कर निकाल कर फेक देती हैं । जब कि यह दूध, अत्याधिक पोषक होता है और इसमें सक्रमण रोधी तत्व मौजूद होते हैं । कोलेस्ट्रम दूध में अत्यधिक मात्रा में प्रोटीन वसा होते है और कभी-कभी यह प्रोटीन 10 प्रतीशत तक होता है जब कि बाद में आने वाले दूध में यह मात्रा कम होती है । मां के दूध में पाये जाने वाले संक्रमण रोधी तत्व बच्चे को अनेक रोगों से बचाते हैं । कोलेस्ट्रम को प्रतिरक्षक भी कहा जाता है ।

मां का दूध सुपाच्य और परिपाच्य होता है इसे शिशु आसानी से पचा और आत्मसात कर सकता है । मां के दूध में मौजूद प्रोटीन, कैल्शियम और वसा को शिशु आसानी से पचा लेता है । इसमें मौजूदा दुग्धशक्करा शिशु को तुरंत ऊर्जा प्रदान करते हैं । इसके अलावा एक दूसरा लाभ यह है कि दुग्धशक्करा का एक भाग आंतों में जा कर दुग्धाम्ल बनकर वहां मौजूद हानिकारक जीवाणुओं को समाप्त कर देता है मां के दूध में पाये जाने वाले विटामिन ए, सी, और दायमीन की मात्रा मां द्वारा लिये जाने वाले आहार पर निर्भर करती है । अतः मां को पौष्टिक भोजन लेना ज़रूरी है । स्तनपान शिशुओं के स्वस्थ्य विकास के लिए सम्पूर्ण आहरा प्रदान करता है । यह महिलाओं के स्वास्थ्य को दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रजनन प्रक्रिया का एक हिस्सा भी है ।

मां का दूध शिशु के लिए सम्पर्ण आहार प्रदार करता है । यह महिलाओं के स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रजनन प्रक्रिया का एक हिस्सा भी है । मां का दूध शिशु के लिए सर्वोत्तम प्राकृतिक आहार है और इसे ख़रीदने की आवश्यकता नहीं होती है । मां का दूध स्वच्छ और आसानी से 24 घंटे उपलब्ध होता है । इसको प्राप्ति के लिए विशेषरूप से किसी भी तरह की तैयारी नहीं करनी पड़ती है । मां का दूध शिशु को अनेक बीमारियों से बचाने के साथ-साथ बुद्धिमान भी बनाता है । मां के दूध में मौजूद फैटी एसिट बौद्धिक स्तर में वृद्धि करता है ।

हलब में नरसंहार : इन्सानियत कहां ?

■ शकील रशीद

सीरिया के सबसे बड़े शहर हलब (Aleppo) के पीड़ितों की सिसकती-बिलखती आवाज़ें किसी तरह उनके कानों तक पहुंच गयी हैं । क़तर ने हलब पर सीरिया के शासक बशारुल असद की फ़ौज की बमबारी और उसके कारण होने वाली अनगिनत मौतों और तबाहियों पर अपने सरकारी उत्सवों को रद्द कर दिये हैं । सऊदी अरब ने रूस से मुंह मोड़ लिया है और दूसरे अरब और इस्लामी देशों ने अरब लीग के झंडे तले इकट्ठे होकर हलब के नरसंहार और हिंसा पर कठोर प्रतिक्रिया व्यक्त की हैं । सऊदी अरब पहले ही हलब के नरसंहार को 'बदतरीन' ठहरा चुका है, मगर रूस यह दावा करता फिर रहा है कि हलब को आज़ाद कराया गया है । अमेरिका ने हलब में नागरिकों के नरसंहार की बात तो की है, मगर उसने सीरिया के संकट को हल करने की सारी ज़िम्मेदारी विश्व समुदाय पर डाल दी है । गोया यह कि वह दूर से खड़े होकर तमाशा देखने में लगा हुआ है, और रहे लेबनान और ईरान जो सीरिया की असदी सरकार और असदी फ़ौज का खुलकर समर्थन करते रहे हैं ।

वे नरसंहार का भी खुलकर समर्थन कर रहे हैं । ईरान की समर्थक फ़ौज ने तो हलब की तर्ज़ पर यमन और बहरीन को आज़ाद कराने के संकल्प का ऐलान भी कर दिया है, गोया यह कि जलते, रोते और बिलखते हुए हलब की तबाही और बरबादी पर सारी दुनिया अपने-अपने मन, बल्कि अपने-अपने हितों के अनुसार क्रिया और प्रतिक्रिया का भी इज़हार कर रही है, मगर हलब के वे नागरिक जिन पर बमबारियां की गयी हैं, जिनके मकानों और व्यावसायिक ठिकानों को तबाह व बरबाद कर दिया गया है, जिनके हंसते-खेलते और गोदों में उमकते नन्हें-नन्हें बच्चों को मौत की नींद सुला दिया गया, और जिनकी औरतों की इज़्ज़त की चादरों को तार-तार किया गया है, अपने दिलों और दिमाग़ों में जो सवाल लिए दर-बदर भटक रहे हैं, इसका जवाब देने के लिए कोई तैयार नहीं है ।

सीरिया में 2011 ईसवी से गृह युद्ध शुरू हुआ है । हलब इसका अंजाम नहीं है, यह बात बिल्कुल स्पष्ट है । अभी और कई हलब बनने हैं, अभी सीरिया की तबाही व बरबादी की मजीद तारीख़ लिखी जानी बाक़ी है । हलब की तबाहियों पर नज़रें डालते हुए इस सवाल को विस्मृति नहीं किया जाना चाहिए कि यह विवाद शुरू क्यों हुआ ? सीरिया के राष्ट्रपति बशारुल असद ने अपने पिता हाफ़िज़ुल असद के बाद जब 'बॉस पार्टी' के नेतृत्व की बागडोर संभाली, तो इन्होंने "रियासत के दुश्मन" का नारा बुलंद किया और इसको बहाना बनाकर लोगों पर जुल्म-अत्याचार और हिंसा का एक सिलसिला शुरू किया, जो इनके पिता हाफ़िज़ुल असद के दौर की याद दिलाता है । बस एक ज़रा-सी शंका या संदेह पर किसी को भी 'रियासत का दुश्मन' ठहरा दिया जाता और उसको पकड़कर जेल में बंद कर दिया जाता और फिर उसे ऐसे हिंसा का शिकार बनाया जाता कि आगामी ज़िन्दगी के लिए वह अपाहिज बन जाता ।

यह प्रतिदिन का नियम था । लावा अन्दर ही अन्दर पक रहा था और जब 2011 ईसवी में "अरब चेतना" की शुरुआत हुई, तो सीरिया भी इसकी लपेट में आया और जनता जो बशारुल असद के अत्याचार से त्रस्त थी, उठ खड़ी हुई । जो लोग यह कहते हैं कि यह विवाद 'मसलकी विवाद' है, शिया-सुन्नी विवाद है, उन्हें यह जानना चाहिए कि सीरिया के शासक यद्यपि 'अलवी शिया फ़िरक़े' के हैं, मगर बशारुल असद की हुकूमत के ख़िलाफ़ जब आवाज़ें उठनी शुरू हुई, तो इनमें हर फ़िरक़े की आवाज़ें शामिल थीं ।

इसे 'जनविद्रोह' कहना ज़्यादा मुनासिब होगा । असदी सरकार के ख़िलाफ़ सीरियाई समाज के हर वर्ग का व्यक्ति शामिल था । सभी ने मसलक व धर्म का लिहाज़ किये बिना सरकार के विरुद्ध विद्रोह का झंडा उठा रखा था । सीरियाई फ़ौज के विद्रोही और असदी सरकार के विरोधी राजनीतिज्ञ भी इसमें शामिल थे । सारा विवाद मसलकी रंग में उस वक़्त रंगा, जब आई॰एस॰आई॰एस॰, शिया मिलीशिया

कब होगा अंत ?

और हिफ़्ज़ुल्लाह मंज़रनामे पर सामने आए । चूंकि सीरिया की अधिकतर आबादी सुन्नी है, इसलिए मामले को 'शिया-सुन्नी' रंग पकड़ने में ज़रा भी देर न लगी । याद रहे कि हाफ़िज़ुल असद ने जब नरसंहार किया था, तब ईरान में आयतुल्लाह खुमैनी की सरकार थी, उन्होंने हाफ़िज़ुल असद को 'शैतान बुज़ुर्ग' ठहराया था ।

बशारुल असद पर उनके पिता हाफ़िज़ुल असद ही की तरह सुन्नी आबादी के अधिकारों की अनदेखी, बल्कि कुचलने का आरोप लगता रहा है । हलब एक सुन्नी बाहुल्य शहर था, आरोप है कि यहां आई॰एस॰आई॰एस॰ के लोग थे, जो अत्याचार का बाज़ार गर्म किये हुए थे । यह भी आरोप है कि यहां के लोग बाग़ी थे, मगर सच्चाई यह है कि सबके सब सीरियाई नागरिक थे । यहां यह भी सच्चाई स्मरण रहे कि इसराईल, अमेरिका, रूस और कई यूरोपीय देश अपने हितों की भलाई भी इसी में समझते हैं कि मुसलमान मसलकी वर्गों में बंटकर आपस में लड़ते-झगड़ते रहें । सीरिया के गृह युद्ध का सबसे ज़्यादा लाभ इसराईल को पहुंचेगा, इसीलिए इस गृह युद्ध को भड़काने में इसकी साज़िशों की अनदेखी नहीं की जा सकती । आई॰एस॰आई॰एस॰ से इसराईल और बशारुल असद के संबंधों की वास्तविकताएं भी सामने आ चुकी हैं और यह सच्चाई भी सामने आ चुकी है कि आई॰एस॰आई॰एस॰ को किस तरह अमेरिका और रूस ने इस्लामी दुनिया के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया है । यहूदी साज़िश के साथ इस्लाम-दुश्मनी में अंधे होकर इन्सानियत के नरसंहार की छूट देने वाली श्वेत क़ौमों की साज़िशों का हलब ताज़ातरीन प्रदर्शन है ।

सीरिया में 2011 ईसवी से क्या नहीं हुआ, मस्जिद और धार्मिक स्थलों को शहीद किया गया । क़ुरआन और हदीस की किताबों का अनादर किया गया, बच्चों और महिलाओं को ज़िबह किया गया, बल्कि कहीं-कहीं तो ज़िंदा ही जला दिया गया । हलब में बशारुल असद के विजयी सिपाही प्रभावितों के लिए जो राहत सामग्रियां लाए हैं, उनमें परिवर्तित किये गये क़ुरआन के हज़ारों नुस्ख़े हैं, सीरियाई धार्मिक कार्यकर्ता ये नुस्ख़े बचे-खुचे लोगों में 'दिलों की सांत्वना' के लिए बांट रहे हैं । इनमें से जिहाद से संबंधित आयतों को निकाल दिया गया है और देश से मुहब्बत पैदा करने के लिए 'सूरह इख़्लास' के वज़न पर 'सूरतुल असद' (नऊज़ुबिल्लाह) इस परिवर्तित किये गये क़ुरआन में शामिल कर दिया गया है ।

अफ़सोस यह है कि असदी फ़ौज मुसलमान होने का दावा करती है और इसने मुसलमानों को ही बरबाद किया । मसलकी वर्गों में विभाजित इस्लामी देशों का खेल भी बड़ा ही ज़ालिमाना था । इराक़, ईरान और लेबनान एक तरफ़ थे और सऊदी अरब और उसके मित्र देश एक तरफ़ । रूस हमेशा सीरिया के समर्थक के रूप में सामने आता रहा और हर ज़ुल्म व अत्याचार को जारी रखने पर अड़ा रहा । अमेरिका मूकदर्शक था, क्योंकि वह भी साज़िशों में से एक था । सच तो यह है कि हलब में इन्सानियत का नरसंहार या दूसरे शब्दों में हलब का पतन एक वैश्विक षड्यंत्र है ।

हलब में ज़ुल्म किस दर्जे का था इसका अनुमान विश्व मीडिया की कुछ रिपोर्टों से किया जा सकता है । रिपोर्ट के अनुसार बशारी फ़ौज के अत्याचारों से बचने के लिए सैकड़ों की संख्या में औरतों ने अपने दुधमुंहे बच्चों के साथ मौत को गले लगा लिया है । औरतें आत्महत्याएं कर रही हैं । 'डेली बेस्ट' नामक एक इंटरनेशनल समाचार पत्र के अनुसार "हलब में ईरानी और रूसी सहयोग से सीरियाई फ़ौज के सिपाही मरदों को गोलियां मारकर मौत की नींद सुला रहे हैं और महिलाओं के साथ सामूहिक अत्याचार कर रहे हैं । बच्चों और औरतों को ज़िंदा जलाया जा रहा है और लड़कियों को ज़ुल्मो-सितम का निशाना बनाया जा रहा है ।" अरब के एक पत्रकार माजिद बादग़ीस ने हलब के नरसंहार को 'मुसलमानों की नस्लकुशी ठहराया है ।'

हलब से एक संदेश में कहा गया है, "यह हक़ीक़ी होलोकास्ट है, लेकिन दुनिया इसलिए इस पर ध्यान नहीं दे रही है कि मरने वाले मुसलमान हैं । यहूदी नहीं । हलब की सड़कों पर इन्सानी लाशें इस तरह बिना कफ़न के पड़ी हैं

कि अल्लाह की पनाह ।'' एक महिला पत्रकार सूसान अहमद लिखती हैं कि ''प्रमाणित सूचनाएं मिली हैं कि दर्जनों महिलाओं ने अपने पतियों से कहा कि वे उनको और उनके बच्चों के सिरों में गोलियां मारकर शहीद कर दें, उन्हें सीरियाई फ़ौजियों के लिए ज़िंदा न छोड़ें ।''

इंटरनेशनल पत्रकारों की एक टीम के अनुसार, ''हलब में औरतों और बच्चों के ख़िलाफ़ ज़ुल्मो-सितम की नयी दास्तां लिखने वाली फ़ौजों में सीरियाई राष्ट्रपति बशारुल असद की फ़ौज और ईरानी मिलीशिया की मुख्य भूमिका है, इनका ख़ास निशाना नवजवान औरतें हैं ।''

यूवाइन ह्यूमन राइट्स ऑफ़िस के प्रवक्ता रूपर्ट कोलवाईल के अनुसार, ''हलब के निवासी विशेष रूप से बच्चे और औरतें बहुत ही दयनीय दशा में हैं ।'' उन्होंने कहा कि, ''हमने बाइबल और दूसरी धार्मिक किताबों में नरक के बारे में जो पढ़ा, उसका अमली अवलोकन हलब की गलियों में किया जा सकता है ।'' जर्मन न्यूज़ एजेंसी डी॰पी॰ए॰ के अनुसार, ''250 से अधिक लोग ज़िंदा जलाए गये हैं ।'' ज़ुल्म व अत्याचारों की अनगिनत कहानियां हैं । संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार के कमीशन के अधिकारियों ने हलब में इन्सानियत के नरसंहार पर अमेरिका की आलोचना की है, मगर अमेरिका ख़ामोश है ।



ब्रिटेन और फ्रांस ने बशारुल असद को सत्ता से हटाने की आवाज़ उठायी है, मगर रूस की ज़िद के आगे किसी की चल पा नहीं रही है । रूस ने हलब के मामले पर सुरक्षा परिषद के सम्मेलन को वीटो करने की घोषणा कर रखी है । रूसी विदेश मंत्री सरगई लावरोव का कहना है कि हलब में युद्ध विराम के लिए अमेरिका की दरख़्वास्तें सुन-सुनकर कान पक गये हैं और अब आख़िरी आतंकी के ख़ात्मे तक जंग जारी रहेगी । रूस हलब के नरसंहार पर आनंदित है, वह इसे हलब की आज़ादी ठहराता है । रूस इसे दुनिया की दूसरी शक्तियों के ख़िलाफ़ अपनी जीत भी समझता है ।

रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन ने सीरिया के राष्ट्रपति बशारुल असद का समर्थन करते हुए बाग़ियों अर्थात नागरिकों के ख़िलाफ़, जिनमें बहुलता सुन्नी नागरिकों की है नाभकीय हमले किये थे और इसके नतीजे में हलब तबाह व बरबाद हो गया ।

रूसी युद्धक विमानों की बमबारी को 'बेपनाह' के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता । विश्लेषकों के अनुसार हलब पर रूसी युद्धक विमानों के भीषण हमलों ने रूसी राष्ट्रपति की अपने उपद्रव ग्रस्त लोकतांत्रिक राज्य चेचन्या की राजधानी ग्रोज़नी पर 1999 ईसवी से 2020 ईसवी तक की जंगी कार्रवाइयों की याद ताज़ा कर दी है । जिस तरह हलब ख़ाली हुआ, उसी तरह चेचन्या जंगजुओं से ख़ाली हुआ था ।

विश्लेषकों के अनुसार रूस की सहायता के बिना सीरिया, हलब पर क़ब्ज़ा नहीं कर सकता था । इस मामले में यह दृष्टिगत रहे कि रूस ने पश्चिमी लोगों की चीख़-पुकार से प्रभावित हुए बिना बमबारी जारी रखी थी । यह एक तरह के 'हाई टेक पावर का प्रदर्शन' था, इसका एक उद्देश्य अमेरिका पर रौब डालना भी था ।

बहरहाल बड़ा सवाल यह है कि अब हलब के प्रभावितों का क्या होगा ? क्या 57 इस्लामी देशों की अंतरात्मा जागेगी ? क्या विश्व समुदाय इन्सानियत के नरसंहार पर शर्मिन्दा होगा ? क्या रूस पर लगाम कसी जाएगी ? क्या बशारुल असद की सत्ता का अंत होगा ? ये अहम सवाल हैं, मगर क्या इन सवालों के जवाब मिल भी सकेंगे ?

सीरिया की त्रासदी

■ आबिद महमूद अज़्ज़ाम

सीरिया के राष्ट्रपति बशारुल असद की सेना ने पिछले दिनों एक विध्वंसक और जुल्म से भरपूर कार्रवाई करके अंततः अपने विरोधियों के गढ़ सीरिया के सबसे बड़े व्यावसायिक शहर हलब (Aleppo) पर अधिकार कर लिया। विध्वंसक और भीषण सैन्य कार्रवाइयों ने स्कूलों, घरों, अस्पतालों सहित सारे साजो-सामान को तहस-नहस करके रख दिया और अमानवीय कार्रवाइयों के दौरान बच्चों और औरतों सहित सैकड़ों बेगुनाह नागरिकों को मौत की नींद सुला दिया गया। हलब में एक अस्पताल के पूरे कर्मचारियों को बंधक बनाने के बाद उन्हें गोलियों से छलनी कर दिया गया।

मृतकों में अधिकांश संख्या बच्चों और औरतों की बतायी जाती है, जिनका जंग से दूर-दूर का कोई संबंध ही नहीं है। हलब के हालात अत्यंत ही दुखदायी हैं। पूरा शहर खंडहरों में परिवर्तित हो चुका है। जगह-जगह बिना कफ़न-दफ़न के लाशें बिखरी पड़ी हैं। पिछले पांच साल से पूरी सीरिया की जनता इन्हीं दर्दनाक परिस्थितियों से दो-चार हैं। सीरिया की इन्सानी त्रासदी बहुत ही बड़ी त्रासदी है, लेकिन विश्व समुदाय ने पांच साल बाद भी सीरिया की तबाही को रुकवाने के लिए गंभीरता का कोई प्रदर्शन नहीं किया।

विश्व समुदाय को हलब और सीरिया की बरबादी और रक्तपात से कोई मतलब नहीं, बल्कि यह सच्चाई है कि सीरिया और मध्य-पूर्व के हालात वैश्विक शक्तियों की साज़िशों का ही प्रतीक हैं, जो पहले दिन से ही रक्तपात और जंगों को छेड़कर इस्लामी दुनिया को विभाजित करने के लिए प्रयत्नशील रही हैं। हाल ही में सीरिया, इराक़, लीबिया, यमन और अन्य अरब देशों में जारी गृहयुद्ध से संबंधित 'न्यूयार्क टाइम्स' की स्टोरी में इस बात को स्वीकार किया गया है कि मई 1916 ईसवी में किये गये साइकेस पिकॉट (Syres-Piot) नामक गुप्त समझौते, 2003 ईसवी में अमेरिका का इराक़ पर हमला, अरब चेतना और आई॰एस॰आई॰एस॰ को मध्य-पूर्व में खड़ा करने का उद्देश्य मुस्लिम दुनिया को विभाजित करके उनके संसाधनों पर क़ब्ज़ा करना है। इस सिलसिले में रूस, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस सहित सारी वैश्विक शक्तियां एक पिच पर हैं, जो मुस्लिम दुनिया को जंग की भट्टी में झोंके रखना चाहती हैं। आज जंगे बहुत ही लाभदायक कारोबार हैं। पहले ज़माने में जंग लड़ने के लिए हथियार तैयार किये जाते थे, लेकिन अब हथियार बेचने के लिए जंगें तैयार की जाती हैं।

सीरिया में लड़ने-मरने को तैयार बड़ी-बड़ी शक्तियों की इच्छा है कि गृहयुद्ध की ये आग बढ़ती रहे, ताकि हथियार बेचने और दूसरों के संसाधनों को लूटने में आसानी रहे। एक ओर पांच लाख अफ़ग़ानियों, एक लाख पाकिस्तानियों और पन्द्रह लाख इराक़ियों के अपने हितों की जंग में क़त्ल करने वाले अमेरिकी नाटो सदस्य देशों के शासक अपने हितों के लिए सीरिया में विभिन्न सैनिक संगठनों को समर्थन देकर सीरिया की जंग को लंबे समय तक जारी रहने की कोशिश कर रहे हैं। वे नहीं चाहते कि यह जंग ख़त्म हो। हलब की तबाही में अगर यह कहा जाए कि अमेरिका की हठधर्मी और धोखेबाज़ी शामिल थी, तो बेजा न होगा।

क्योंकि हलब के पतन से एक माह पूर्व सीरिया और रूस ने अमेरिका को युद्ध विराम का संदेश भेजा, जिसे अमेरिका ने बहुत ही रूखे अंदाज़ में रद्द कर दिया। दूसरी ओर रूस बशारुल असद की सहायता करके इस जंग को ख़त्म नहीं होने दे रहा है। 5 दिसम्बर 2016 ईसवी को मिस्र, न्यूज़ीलैंड और स्पेन की ओर से हलब में जारी वहशियाना बमबारी को अस्थायी रूप से रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में प्रस्ताव पेश किया गया, सुरक्षा परिषद के 11 सदस्यों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया, लेकिन रूस और चीन ने मिलकर इस प्रस्ताव को

वीटो कर दिया । सीरियाई गृहयुद्ध के हवाले से रूस 6 और चीन 5 बार सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों को वीटो कर चुका है । इससे भली-भांति यह बात समझी जा सकती है कि वैश्विक शक्तियां सीरियाई गृहयुद्ध की आग भड़काने में कितनी दिलचस्पी रखती हैं ।

साम्राज्यवादी शक्तियों ने अपनी जंगें मुस्लिम देशों में लड़ने का सिलसिला शुरू किया हुआ है, जबकि मसलकी आधार पर कुछ इस्लामी देश साम्राज्यवाद की लगायी गयी आग को और अधिक भड़का कर उनके मिशन को आगे बढ़ा रहे हैं । इस सच्चाई से इन्कार नहीं कि यद्यपि सीरिया में रक्तपात की आग जलाने में आगे-आगे रहने वाले अमेरिका और रूस थे, लेकिन इस आग को भड़काने में मुख्य भूमिका शिया-सुन्नी की सांप्रदायिक सोच ने अदा की है, जिसमें सऊदी अरब और ईरान का नाम सूची में सर्वोपरि है ।

मुस्लिम दुनिया के लोग आलमे इस्लाम के हितों को ताक पर रखकर केवल अपनी हमदर्दियों के बंदी बन चुके हैं । एक वर्ग यमन को रोता है, लेकिन हलब पर ख़ामोश हो जाता है और एक गिरोह हलब पर ख़ून के आंसू रोता है और यमन पर उसे चुप्पी लग जाती है ।

हम लोग मज़लूम और ज़ालिम का अक़ीदा रखते हैं, फिर उसका समर्थन और विरोध करते हैं । पीड़ित अगर हमारे मसलक या अक़ीदे का है, तो हम बोल पड़ते हैं और अगर विरोधी फ़िरक़े व नज़रिए का है, तो हमारी ज़ुबानें बंद हो जाती हैं । ज़ालिम अगर विरोधी फ़िरक़े का है, तो हम उसके विरोध में निकल पड़ते हैं और अगर ज़ालिम ख़ुद हमारे ही फ़िरक़े से है, तो हम उसके समर्थन में खड़े हो जाते हैं । हालांकि पीड़ित दुनिया के किसी कोने, किसी धर्म, किसी देश, किसी मसलक और नज़रिए का व्यक्ति हो, उसका समर्थन करना हर इन्सान पर ज़रूरी है और जालिम दुनिया के किसी कोने, किसी धर्म, किसी देश, किसी मसलक और नज़रिए का भी व्यक्ति हो, उसका विरोध करना हर इन्सान का कर्तव्य है ।

सीरिया के मामले में इस्लामी दुनिया की बेहिसी और चुप्पी अफ़सोसनाक और निंदनीय है । इस्लाम का दृष्टिकोण है कि दुनिया भर के मुसलमान एक क़ौम हैं और आपस में भाई-भाई हैं । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने सारे मुसलमानों को एक शरीर की भांति और एक मुसलमान की तकलीफ़ सारे मुसलमानों की तकलीफ़ ठहरा दिया है, लेकिन अफ़सोस आलमे इस्लाम ने इन सब बातों को भुला दिया और ख़ुद पीड़ित सीरियाइयों को निःसहाय छोड़ दिया ।

इस्लामी दुनिया के देशों की संख्या पांच दर्जन के क़रीब है, जिसमें तुर्की, सऊदी अरब, ईरान, इंडोनेशिया, क़तर, अम्मान, मलेशिया, पाकिस्तान, ब्रोनाई और कुवैत जैसे देश शामिल हैं, लेकिन किसी ने भी सीरिया में जंग की लगी आग को बुझाने की कोशिश नहीं की । सीरिया में जारी नरसंहार में हर देश अपने हितों को सामने रखे हुए है । किसी देश ने इस गृह युद्ध को रुकवाने का कोई उपाय निकालने की कोशिश तक नहीं की । नुक़सान केवल सीरिया के पीड़ितों का हो रहा है ।

57 इस्लामी देशों पर आधारित इस्लामी दुनिया की प्रतिनिधि संस्था आर्गनाइज़ेशन ऑफ़ इस्लामिक कान्फ्रेंस ने भी सीरिया के मामले में आपराधिक भूमिका निभायी है । सीरिया 2011 ईसवी से वध स्थल बना हुआ है । इस गृह युद्ध में सारी विदेशी ताक़तें सीरिया के लोगों पर अत्याचार कर रही हैं ।

अपने हितों के लिए रूस, चीन, अमेरिका, इसराईल, ईरान और अरब देश बशारुल असद, हिफ़्ज़ुल्लाह, आई॰एस॰आई॰एस॰, अल-क़ायदा और इसके सहायक संगठनों ने सीरिया को बारूद का ढेर बनाकर रख दिया है । सीरिया में जारी तनाव के कारण ढाई लाख से अधिक लोग मारे जा चुके हैं, जिनमें अधिकांश संख्या बच्चों और औरतों की है ।

विदेशों में हिजरत करने वालों की संख्या 40 लाख और आंतरिक देश में बेघर होने वालों की संख्या 70 लाख से अधिक हो चुकी है । हर महीने लगभग पांच हज़ार लोग क़त्ल किये जा रहे हैं, लेकिन मजाल है कि ओ॰आई॰सी॰ ने आंखें खोली हों । अगर इस्लामी देशों की प्रतिनिधि संस्था ओ॰आई॰सी॰ चाहे तो सीरिया में जारी दरिंदगी रुक सकती है । सीरिया में जारी अत्याचार को ख़त्म कराना और वहां शांति व सलामती की स्थापना इस्लामी दुनिया और ओ॰आई॰सी॰ की ज़िम्मेदारी है ।

युद्धविराम समझौता और शांति-स्थापना की कोशिश

■ डॉ॰ मुहम्मद अब्दुर्रशीद जुनैद

इस्लामी दुनिया इस वक़्त जिस दौर से गुज़र रही है, शायद इससे पहले ऐसे हालात न रहे हों । फ़िलिस्तीन में इसराईली अत्याचार का सिलसिला जारी है, तो सीरिया में बशारुल असद, ब्लादिमीर पुतिन के अत्याचारी फ़ौजों की कार्रवाइयों का सिलसिला भी जारी है । बशारुल असद और विरोधी दलों के बीच युद्धबंदी का समझौता तय हो चुका है, लेकिन इसके बावजूद सीरिया की पीड़ित जनता शांति व सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारने से अभी वंचित है, क्योंकि युद्धबंदी समझौता तय हो जाने के बावजूद कौन कब किस पर आक्रमण करता है, इसका डर सीरिया के लोगों को है और आई॰एस॰आई॰एस॰ के ठिकानों पर हमले के नाम पर आम नागरिकों को मारा जा रहा है ।

अतीत में भी युद्धबंदी के समझौते हो चुके हैं । एक तरफ़ समझौता किया जाता है, तो दूसरी ओर किसी न किसी बहाने एक-दूसरे पर हमलों का सिलसिला जारी रहता है । फ़िलहाल सीरिया में युद्धविराम समझौते के अवसर पर 14 सैनिक संगठनों के हस्ताक्षर करने की ख़बरें हैं । सीरिया में युद्धबंदी के सिलसिले में हाल ही में रूस और तुर्की की कोशिशों से बशारुल असद की सरकार और विरोधी दलों के बीच युद्धबंदी का समझौता हुआ । युद्धबंदी में विरोधी दलों के प्रतिनिधि 'जैशुलहुर्र' के अधीन 14 सैनिक संगठनों ने हस्ताक्षर कर दिये ।

संचार माध्यमों के अनुसार सीरिया में युद्धबंदी समझौते का हिस्सा बनने वाले विरोधी दलों के संगठनों में "फ़ैलिकुश्शाम' प्रमुख है, जिसके 19 सहायक संगठन और 4 हज़ार जंगजू



बताए जाते हैं । यह संगठन हलब (अलेप्पो), इदलिब, हमात और हिम्स में लड़ाई में हिस्सा ले चुका है । दूसरा मुख्य संगठन 'अहरारुश्शाम' है, इसकी 80 सहायक युनिट हैं और कुल जंगजुओं की संख्या 16 हज़ार बतायी जाती है । यह ग्रुप हलब, हलब के आसपास के क्षेत्रों, दिरआ, इदलिब, हमात और हिम्स में लड़ता रहा है । 'सवारुश्शाम' नामक ग्रुप के 8 सहायक ब्रिगेड और 10 हज़ार जंगजू हैं । इस ग्रुप के केन्द्र हलब, इदलिब और अल-लाज़िक़िया रहे हैं ।

सैनिक संगठन 'सुल्तान मुराद' भी जैशुलहुर्र के साथ मिलकर लड़ता रहा है । हलब और दक्षिणी हलब में उसके सैकड़ों लड़ाके सक्रिय रहे । 'सुक़ूरुश्शाम' नामक ग्रुप के 12 सहायक ब्रिगेड हैं, जिनमें 16 हज़ार जंगजू सम्मिलित हैं । इदलिब और हलब इस ग्रुप के मुख्य केन्द्र हैं । 'अश्शामी महाज़' के पांच सहायक ग्रुप और तीन हज़ार जंगजू हैं । यह ग्रुप हलब, इदलिब और दमिश्क़ में लड़ाई में शामिल रहा है । 'जैशुलअज़ा' उत्तरी पश्चिमी सीरिया में लड़ने वाले विरोधी दलों का संगठन है, इसकी ज़्यादातर सरगर्मियां तटीय क्षेत्रों तक सीमित हैं । 'शुहदा-ए-इस्लाम' ब्रिगेड इदलिब में सक्रिय रहा ।

युद्धबंदी समझौते पर हस्ताक्षर करने वालों में 'इदलिबुलहुर्र' के 6 हज़ार जंगजू भी शामिल हैं । इदलिब, हलब, अल-लाज़िक़िया और हमात इनके केन्द्र हैं । युद्धबंदी समझौते में शामिल होने वाले ग्रुपों में 'फ़ैलिकुर्रहमान' भी शामिल है । यह संगठन राजधानी दमिश्क़ में सक्रिय रहा है । 'जैशुलइस्लाम' के 64 सहायक संगठन हैं, जिनसे 12 हज़ार लोग जुड़े हैं । हलब, दमिश्क़, दिरआ, अल-लाज़िक़िया, हमात और हिम्स इसके केन्द्र हैं । इस तरह इन संगठनों की ओर से समझौते पर हस्ताक्षर करने के बावजूद कहा जा रहा है कि अभी सीरिया के हालात बेहतर होते दिखायी नहीं दे रहे हैं ।

अगर समझौते पर हस्ताक्षर होने के बावजूद भी सरकार और विरोधी दलों के बीच हमलों का सिलसिला जारी रहा तो भविष्य में हालात, विश्लेषकों का कहना है कि बशारुल असद का सत्ता से बेदख़ल होना ही सीरिया के लिए बेहतर होगा, लेकिन सवाल पैदा होता है कि क्या बशारुल असद इतनी आसानी से सत्ता से हट जाएंगे, क्योंकि रूस और ईरान के भरपूर समर्थन और सहायता का ही नतीजा है कि बशारुल असद सीरिया की सत्ता पर आसीन हैं । अमेरिका, सऊदी अरब और अन्य सहयोगी देशों की ओर से बशारुल असद को सत्ता से बेदख़ल करने की कोशिशों के बावजूद आज भी सीरिया के पीड़ित मुसलमानों पर उनकी फ़ौज अत्याचार कर रही है और समझा जा रहा है कि विरोधी दल बशारुल असद से रूस और ईरान के पूर्ण समर्थन की वजह से समझौता करने पर विवश हो गये हैं ।

बशारुल असद और विरोधी दलों के बीच मेल-मिलाप हो भी जाता है, तो क्या आई॰एस॰आई॰एस॰ सीरिया में शांति स्थापना की कोशिश के सिलसिले में ख़ामोश बैठ जाएगा । इस सिलसिले में अतीत पर नज़र डालने से भली-भांति अंदाज़ा हो जाता है कि आई॰एस॰आई॰एस॰ किसी सूरत में भी बशारुल असद को सत्तासीन रहने पर सहन नहीं करेगा । वैसे इराक़ और सीरिया में आई॰एस॰आई॰एस॰ जिस तेज़ी से विभिन्न इलाक़ों और शहरों पर क़ब्ज़े कर चुका था, संचार माध्यमों के अनुसार इसमें अब उसे पीछे हटना पड़ रहा है, क्योंकि अमेरिका, रूस और कई अन्य सहयोगी देश आई॰एस॰आई॰एस॰ को ख़त्म करने के लिए व्यापक स्तर पर सैन्य शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए उसे पराजय की ओर ढकेल रहे हैं ।

अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ट्रंप अपने पद का जायज़ा लेने के बाद सीरिया के हालात पर किस तरह का क़दम उठाते हैं, क्योंकि रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन से इनके संबंध बेहतर बताए जा रहे हैं, इसलिए अगर अमेरिका ख़ामोश भी रहता है, तो बशारुल असद की हिमायत समझी जाएगी । इधर सऊदी अरब में फ़रवरी से संयुक्त सैन्य अभ्यासों की शुरुआत होने वाली है । इस्लामी देशों की फ़ौजी एकजुटता, जिसमें 39 देश शामिल हैं, के प्रमुख की हैसियत से पाकिस्तान के अवकाश प्राप्त पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल राहिल शरीफ़ को नियुक्त किया गया है, जिसमें तुर्की, पाकिस्तान, अरब अमीरात, उर्दुन, बहरैन, कुवैत, सूडान, मालदीप, ट्यूनिस, मिस्र, मलेशिया, सेनेगल, चाड सहित कई मुस्लिम देशों की सेनाएं भाग लेंगी ।

संचार माध्यमों के अनुसार सऊदी अरब में शुरू होने

वाले संयुक्त सैन्य अभ्यासों में स्थानीय फ़ौजी जवानों के साथ अंतर्राष्ट्रीय सेना के जवान भी भाग लेंगे । इन अभ्यासों का उद्देश्य आतंकवाद से निबटने की कूटनीति और प्रशिक्षण बताया जा रहा है ।

मध्य-पूर्व के हालात, अतिवादी संगठनों और उन्हें ख़त्म करने के नाम पर अमेरिका, रूस और सहयोगी देशों की कार्रवाइयों के नतीजे में बद से बदतर हो चुके हैं । सऊदी अरब की अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हो चुकी है । करोड़ों डॉलरों के फ़ौजी साजो-सामान और हथियारों की ख़रीदारी, यमन और सीरिया की जंग में हिस्सा लेने की वजह से सऊदी अरब कंगाल हो चुका है । पिछले साल से सऊदी अरब का बजट घाटे का था ।

हज़ारों प्रवासी जो सऊदी अरब में नौकरी करते थे अपने रोज़गार से वंचित हो चुके हैं और यह सिलसिला अभी जारी है । भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश व अन्य देशों के हज़ारों प्रवासी कई-कई महीनों की तनख़्वाहों से वंचित हैं । उन्हें अपने देश आने के लिए परेशानियों से दो-चार होना पड़ रहा है । अगर सीरिया, इराक़ और यमन के हालात इसी तरह रहे, तो निकट भविष्य में इस्लामी दुनिया और अधिक परेशानियों से दो-चार हो जाएगी ।

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बुश सीनियर, बुश जूनियर, बिल क्लिंटन और बराक ओबामा के दौर में इराक़, अफ़ग़ानिस्तान, सीरिया, यमन, मिस्र, लीबिया और पाकिस्तान इत्यादि के हालात का जायज़ा लिया जाए, तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इन अमेरिकी राष्ट्रपतियों के शासनकाल में जिस तरह लाखों मुसलमानों का नरसंहार किया गया और जिस तरह मुस्लिम देशों की अर्थव्यवस्था को तबाह व बरबाद किया गया उसी का नतीजा है कि जिहादी तंज़ीमों का अस्तित्व अमल में आया ।

आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुसलमानों को आतंकी बताने की कोशिश की जा रही है, जबकि जिन्होंने इराक़ पर आरोप लगाकर अंधाधुंध हवाई हमले किये, वे आज अपनी अयोग्यता को मानने के बावजूद आतंकवाद का आरोप उन पीड़ित मुसलमानों पर लगा रहे हैं, जिन्होंने अपना सब कुछ तबाह व बरबाद होते देखा । जिन्होंने अपने मासूम, बच्चों, औरतों, नवजवानों और वृद्धजनों को तड़पते-बिलखते, घायल होते और शहीद होते देखा । आज भी सीरिया, इराक़, यमन, तुर्की आदि में शिद्दत पसंद तंज़ीमों और उन्हें ख़त्म करने वाले सहयोगी दलों की हवाई व ज़मीनी कार्रवाइयों के नतीजे में मासूम, बेगुनाह मुसलमान चैन की नींद सोने से वंचित हैं, उन्हें खाद्य सामग्री और दवाइयां तब उपलब्ध नहीं ।

अगर संयुक्त राष्ट्र संघ वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवता की रक्षा और शांति-सलामती चाहता है, तो इस्लामी दुनिया विशेष रूप से सीरिया, इराक़, यमन के हालात पर क़ाबू पाने और शांति-सलामती की स्थापना के लिए इन सुपर पावर देशों पर दबाव डाले । जिस तरह संयुक्त राष्ट्र संघ के नये महासचिव एंटोनियो गुटेरेश ने संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव की ज़िम्मेदारी संभालने के बाद कहा है, वास्तव में अगर मध्य पूर्व में शांति व सलामती के लिए पहल करते हुए सफल हो जाते हैं, तो यह एक इतिहास बन जाएगा ।

पुर्तगाल से संबंध रखने वाले संयुक्त राष्ट्र संघ के नये महासचिव एंटोनियो गुटेरेश ने महासचिव की ज़िम्मेदारियां संभालने के बाद अपने संबोधन में कहा कि शांति व सलामती की स्थापना को प्राथमिकता दी जाएगी । जंग कोई भी नहीं जीता, जंगों की वजह से पूरे-पूरे क्षेत्र अस्थिर हो जाते हैं और इस तरह वैश्विक आतंकवाद के नये ख़तरों का सामना करना पड़ता है । महासचिव ने इस संकल्प का इज़हार किया कि वे विवादों में उलझे हुए देशों के मध्य संबंधों को बढ़ावा देने के लिए पुल की भूमिका अदा करेंगे ।

संचार माध्यमों के अनुसार अपनी ज़िम्मेदारियां संभालने के अवसर पर संबोधन के दौरान उन्होंने दुनिया भर में शांति स्थापना की बात की । एंटोनियो गुटेरेश ने दुनिया भर के लोगों से मांग की कि वे सामूहिक रूप से यह इरादा करें कि शांति-स्थापना को प्राथमिकता दी जाएगी । उन्होंने कहा कि शांति व सलामती हमारी मंज़िल होनी चाहिए और शांति स्थापना की निर्भरता हम पर है और दुनिया की सारी सरकारों को इस कार्य में शामिल करने की कोशिश करूंगा और यक़ीनन अमेरिका की नयी सरकार को भी, ताकि इन समस्याओं का हल निकाला जाए, जिनका सामूहिक रूप से सामना है ।

कविता

आओ मिलकर पेड़ लगाएं

आओ मिलकर पेड़ लगाएं ।
हरा भरा यह देश बनाएं ।।
वातावरण को स्वच्छ बनाकर ।
इस जीवन को स्वस्थ बनाएं ।।

पेड़ न कोई कटने पाए ।
जंगल अब न घटने पाए ।।
मिलकर हम सब क़सम यह खाएं ।
आओ मिलकर पेड़ लगाएं ।।

पेड़ हैं देते प्राण वायु ।
जीवन इससे हो दीर्घायु ।।
खुद समझे औरों को बताएं ।
आओ मिलकर पेड़ लगाएं ।।

हर इक का ये फ़र्ज़ है बनता ।
कम से कम इक पेड़ लगाए ।।
पल-पल बढ़ते प्रदूषण पर ।
आओ मिलकर रोक लगाएं ।।

आओ मिलकर पेड़ लगाएं ।
हरा भरा ये देश बनाएं ।।

● सुरेन्द्र शर्मा



फ़ार्म–4
नियम–8

प्रकाशन : 'कान्ति', D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
प्रकाशन अवधि : मासिक
प्रकाशक, मुद्रक : **मुहम्मद अहमद**
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : फ्लैट नं॰ 1, ग्राउंड फ्लोर, विवेकानन्द पुरी, संस्कृति इन्क्लेव, लखनऊ (यू॰पी॰)
सम्पादक : **डॉ॰ मुहम्मद अहमद**
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एफ 101, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव-II, शाहीन बाग़, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025
स्वामित्व : **दावत ट्रस्ट (रजि॰)** D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज
चेयरमैन : **मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी** डी-321, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
सेक्रेट्री : **जनाब टी॰ आरिफ़ अली** डी-321, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

सदस्य : 1. **जनाब मुहम्मद जाफ़र,** फ्लैट नं॰ 102, दारुस्सलाम, ई-89, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 2. **प्रो॰ के॰ ए॰ सिद्दीक़ हसन,** कदम बोट हाउस, पी॰ओ॰ मेडिकल कॉलेज, कालीकट, केरल-693008, 3. **जनाब नुसरत अली,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 4. **जनाब एजाज़ अहमद असलम,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 5. **जनाब मुहम्मद मुज्तबा फ़ारूक़,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-25, 6. **जनाब रफ़ीक़ अहमद,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 7. **डॉ॰ वक़ार अनवर,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–25, 8. **जनाब परवाज़ रहमानी,** डी-160/2 फर्स्ट फ्लोर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-25, 9. **डॉ॰ सैयद क़ासिम रसूल इलयास,** 632/9, ज़ाकिर नगर, नयी दिल्ली-25, 10. **इंजी॰ मुहम्मद सलीम,** डी-321, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्क्लेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-25, 11. **जनाब मुहम्मद अहमद,** फ्लैट नं॰ 1, ग्राउंड फ्लोर, विवेकानन्द पुरी, संस्कृति इन्क्लेव, लखनऊ (यू॰पी॰)

मैं मुहम्मद अहमद, एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं ।

हस्ताक्षर

प्रकाशक, मुद्रक : **मुहम्मद अहमद**
1 मार्च 2017

जनता में ख़ाकी वर्दी का ख़ौफ़ क्यों ?

■ डॉ॰ अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव
(झांसी, उ॰प्र॰)

'पुलिस' शब्द की व्युत्पत्ति स्पेनिश भाषा से हुई, पुलिस का अर्थ पी-पोलाइटनेस, ओ-आबजेक्ट, एल-लीगल एडवाइजर, आई-इंटेलीजेंस, सी-करेज, ई-इनरजेटिव है, अर्थात पुलिस नम्रताधारी लक्ष्यधारी, विधि सलाहकार, अनुसंधान करने वाली साहस व क्रियाशीलता का प्रतीक है । वास्तव में पुलिस को अपने नाम के अनुरूप होना चाहिए, लेकिन भारतीय परिवेश में आज जनसाधारण भारतीय पुलिस का एक सर्वथा भिन्न अर्थ लगाता है, प-से पैसा-पाप, ल-से लूट-लाठी तथा स-सलाम-सिफ़ारिश ।



पुलिस का स्वरूप

वर्तमान पुलिस संगठन भारत में ब्रिटिश सत्ता को बनाए रखने के लिए किया गया था । यह हमारा दुर्भाग्य है कि ब्रिटिश सत्ता के उठ जाने के बाद भी भारत की पुलिस का ढांचा भी वही बना हुआ है तथा उसका व्यवहार भी पूर्ववत् बना हुआ है । वह तब भी आतंक और भ्रष्टाचार की संस्था थी, आज भी वह जनविरोध की साकार प्रतिमा बनी हुई है ।

भारतीय पुलिस का नाम आते ही मस्तिष्क में भ्रष्टाचार, दुर्व्यवहार, असहयोग की भावना से पूर्ण चेहरा उभरता है, "भारतीय पुलिस' भ्रष्टाचार का केन्द्र बन चुकी है, यही कारण है कि पुलिस विभाग में जब स्थानांतरण किया जाता है तो प्रत्येक थानेदार या आरक्षी द्वारा स्थान देखकर बोली लगायी जाती है कि मैं इस स्थान के लिए इतने रुपये दूंगा, जहां पर ये जाकर चोरी, शराब, डकैती, जुआ आदि को प्रोत्साहन देते हैं और घूस लेते हैं और अपराधियों को छोड़ देते हैं । यह कहना ग़लत न होगा कि आज भारत में जुआ, शराब, चोरी, डकैती, वेश्यागमन आदि अपराध अप्रत्यक्ष सहयोग द्वारा किये जाते हैं । जस्टिस आनंद मुल्ला ने एक बार ठीक ही कहा था कि, "देश में व्यवस्थित वर्दीधारी गुंडों का गिरोह है जिसे पुलिस के नाम से जाना जाता है ।"

अधिकारी भ्रष्टाचार, कुव्यवस्था तथा असहयोग के विरुद्ध कार्यवाही कर, जनता की आकांक्षाओं का स्वरूप बनाकर 'भारतीय पुलिस' को प्रस्तुत करना भी चाहते तो राजनीतिक दबाव तथा प्रशासनिक हस्तक्षेप के कारण वे अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर पाते ।

संक्षेप में हम इतना कह सकते हैं कि 'भारतीय पुलिस' संवैधानिक आदर्शों की रक्षा करने के बजाए बन्द आपराधिक गतिविधियों में लिप्त राजनीतिक नेताओं तथा भ्रष्ट अधिकारियों को दलाल बनाकर सहयोग देने में अहम भूमिका निभा रही है । वास्तव में पुलिस का कर्तव्य है कि वह देश-प्रदेश में शांति व क़ानून व्यवस्था को बनाए रखे।

भारतीय पुलिस-जन सहयोग

"पुलिस" की कार्य प्रणाली का मुख्य आधार ही जन सहयोग है । 'जन सहयोग' के लिए आवश्यक है कि 'भारतीय पुलिस' को जन सेवक की भूमिका निभानी चाहिए । उसका प्रमुख दायित्व समाज में शांति स्थापित रखना और अपराध उन्मूलन है । पुलिस को सदा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह जनता की सेवक है स्वामी नहीं । पुलिस थानों पर 'जन सेवा' का बोर्ड तो लगा रहता है परंतु पुलिस का व्यवहार इसके ठीक विपरीत होता है । आवश्यकता इस बात की है कि पुलिस का आचरण मुख्य रूप से जन सेवक होना चाहिए । पुलिस को जनता का प्रेम व विश्वास अर्जित करना चाहिए ।

जनता की विवशता

लेकिन स्थिति यह है कि आज प्रत्येक व्यक्ति पुलिस से दूर रहना चाहता है । इसका कारण यह है कि क़ानून का पालन करवाने वाला, यह विभाग स्वयं क़ानून तोड़ने, झूठे मुक़दमे छेड़ने व भले आदमियों को आतंकित करने के लिए बदनाम है । पुलिस को अपने कर्तव्य पालन में जनसहयोग प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए । पुलिस को यदि किसी अपराधी को पकड़ना हो या न्यायालय द्वारा दंडित कराना हो तो उसे जनता का सहयोग लेना चाहिए ।

आज स्थिति कुछ अलग है, जनता पुलिस को सही-सही जानकारी नहीं देती पुलिस की यह भारी असफलता है कि उसे जनसहयोग नहीं मिल पाता । पुलिस सहयोग के पीछे भय की भावना रहती है, गांवों में तो जनता पुलिस की वर्दी से डरती है । इसका कारण यह है कि पुलिस का गांवों में व्यवहार ठीक नहीं होता । वे कार्य क्षेत्र में आतंक रखते हैं तथा प्रत्येक व्यक्ति को शंका की दृष्टि से देखते हैं । अपना रौब गांठने की दृष्टि से भोले-भाले निर्दोष लोगों की पिटाई करती है । यदि जनसाधारण ऊपर जाता है तो ऊपर वाले अधिकारी भी नहीं सुनते क्योंकि सभी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं । पीड़ित, अताहित होने का भय तथा सुरक्षा का अभाव जनता को आगे आने से रोकते हैं । इस कारण पुलिस को गवाह मिलने में बहुत कठिनाई होती है । यहां तक कि पुलिस अपने 'मुख़बिरों' की भी रक्षा नहीं कर पाती है । पुलिस असामाजिक तत्वों को संरक्षण एवं प्रोत्साहन प्रदान करती है । पंजाब पुलिस के महानिदेशक श्री रिवेरो को भी यह तथ्य उजागर करना पड़ा है कि आतंकवादियों का सफ़ाया न हो सकने का बहुत बड़ा कारण पुलिस से उनकी सांठगांठ है ।

पुलिस और जन संघर्ष

अपने कर्तव्य का पालन न करने वाली तथा जनता को सताने वाली पुलिस के साथ जागरूक जनता का टकराव होना स्वाभाविक है । आज का युग असंतोष, अंधकार की मांगों एवं आन्दोलनों का युग है । प्रत्येक आन्दोलन को नियंत्रण में रखने के लिए पुलिस का उपयोग किया जाता है । फलतः जनता और पुलिस के मध्य संघर्ष के समाचार आये दिन पढ़ने को मिलते रहते हैं ।

पुलिस और जन सहयोग

इसके लिए आवश्यक है कि 'भारतीय पुलिस' को ऐसी पुलिस बनायी जाए जो अपने कर्तव्यों के लिए तन-मन से समर्पित हो जन सहयोग की भावना से पूर्ण हो और अपने ज़िम्मेदारी को ठीक समझती हो और निभाती हो । जनता का सहयोग प्राप्त करने के लिए पुलिस को अपने आपको इसका पात्र बनाना पड़ेगा । अभी तक पुलिस ने औद्योगीकरण, शहरीकरण, आधुनिकता की प्रक्रिया, परिवार, समुदाय और धर्म जैसी संस्थाओं के सामाजिक दायित्वों के निर्वहन में अनेक रुकावटें डाली हैं । पुलिस को इस प्रवृति पर अंकुश लगाकर जन सहयोग प्राप्त करने के लिए अपने दृष्टिकोण में आवश्यक परिवर्तन करने चाहिए ।

जनता के आक्रोश को शालीनता से दबाने के बजाए 'भारतीय पुलिस' वर्दी की उपयोगिता प्रकट करने के लिए निहत्थों पर गोली चलाना, लाठी चार्ज करना, अश्रु गैसें के गोले छोड़ना ही अपना कर्तव्य समझती है, जिससे भारतीय पुलिस और जनता में संघर्ष होते रहते हैं ।

जब तक निष्पक्ष न्यायपूर्ण पुलिस की प्रभावशाली व्यवस्था नहीं की जाएगी, तब तक भारतीय पुलिस एक सामाजिक अभिशाप मात्र बनी रहेगी । देश में समानता, स्वतंत्रता तथा नागरिकों के मूल अधिकारों की रक्षा करने में पुलिस को अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वाह करना चाहिए ।

वर्तमान स्थिति कुछ ऐसी है कि 'भारतीय पुलिस के कार्यों से जनसाधारण भी प्रसन्न नहीं है और स्वयं पुलिस वाले भी प्रसन्न नहीं हैं । कम वेतन, अधिक काम, उच्च स्तरीय भ्रष्टाचार, भर्ती की ग़लत प्रणाली, राजनीतिक हस्तक्षेप व जनता की उपेक्षा-वृत्ति से पुलिस प्रशासन का मनोबल दिनोंदिन गिरता जा रहा है । पुलिस व्यवस्था में सुधार हेतु आमूल परिवर्तन होने चाहिए, दुर्भाग्य यह है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राष्ट्रीय सरकार ने पुलिस के दृष्टिकोण परिवर्तन, उचित प्रशिक्षण, कार्य पद्धति आदि में समुचित परिवर्तन नहीं किये हैं ।

सरकार को चाहिए कि वह परिवर्तन के लिए उचित वातावरण अनाए । पुलिस को कल्याणकारी मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने के साथ ही उनको अपनी महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट करनी चाहिए तथा उनके वेतन व सुविधाओं में वृद्धि करनी चाहिए । राजनीतिक हस्तक्षेप को रोकना भी नितांत आवश्यक है अन्यथा पुलिस चाहते हुए भी अपना कर्तव्य पालन नहीं कर सकेगी ।

खेल संघों पर लगाम कसने की तैयारी

■ ए॰ एन॰ शिब्ली

दुनिया के विभिन्न देशों की भांति भारत में भी बहुत से खेल खेले जाते हैं । राष्ट्रीय स्तर पर और राज्य स्तर पर इन खेलों के संगठन बने हुए हैं, सबके बजट भी हैं सब अपने अपने तौर पर काम भी कर रहे हैं मगर चूंकि इन संगठनों में ईमानदारी से काम नहीं होता इसलिए भारत दुनिया में अधिकतर खेलों में फिसड्डी ही साबित होता है । कुछ खेलों में तो भारत का प्रदर्शन अच्छा होता भी है मगर बहुत से खेलों में भारतीय टीम भाग तो लेती है मगर उसका प्रदर्शन बहुत ख़राब रहता है ।

इन दिनों लोढा कमेटी की सिफ़ारिशों से क्रिकेट में सुधार की कोशिशें जारी हैं । भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड में जिस प्रकार कई कमियां सामने आयी हैं उसी को दूर करने की इन दिनों क़वायद चल रही है । अब जिस प्रकार की ख़बरें आ रही है उससे ऐसा लगता है कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की तरह अब बाक़ी खेल फेडरेशनों में भी सुधार लाने की कोशिश की जाएगी ।

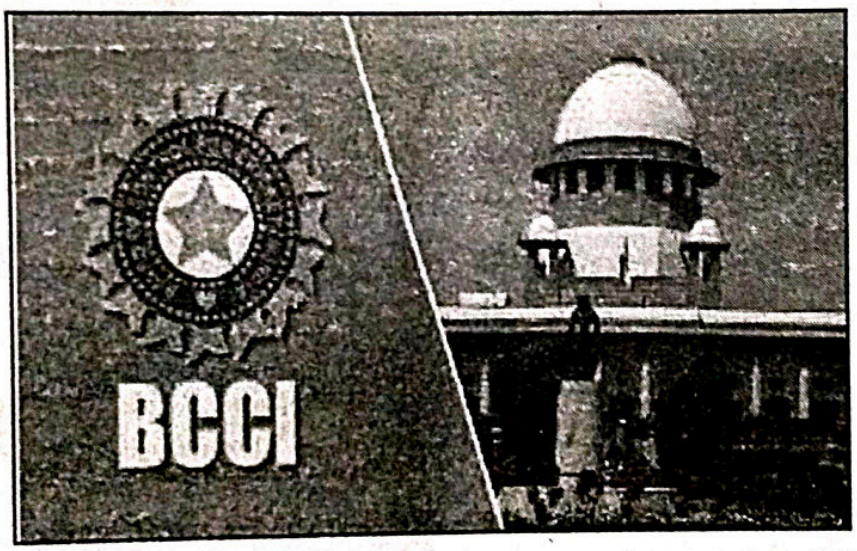

सुप्रीम कोर्ट ने सभी खेल फेडरेशनों को भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की तरह रिफॉर्म करने वाली याचिका पर केन्द्र को नोटिस भेजा है । कोर्ट ने मामले को भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड मामले की सुनवाई के साथ भी जोड़ दिया है । एक याचिका में कहा गया था कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की तरह लोढा पैनल की सिफ़ारिशों को देश के बाक़ी खेल फेडरेशनों में भी लागू किया जाना चाहिए, क्योंकि इन फेडरेशनों में भी सुधार की ज़रूरत है । अब देखने वाली बात यह होगी कि केंद्र सरकार इस पर क्या जवाब देती है ।

सर्वोच्च अदालत ने केन्द्र सरकार से पूछा है कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बी॰सी॰सी॰आई॰) में प्रशासनिक सुधार के लिए लोढा पैनल की सिफ़ारिशों को अन्य खेल संस्थाओं में भी क्यों नहीं लागू किया जाना चाहिए ? अदालत ने इस मुद्दे पर अर्जुन पुरस्कार हासिल करने वाले खिलाड़ियों द्वारा दायर की गयी जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए यह पूछा है । इस याचिका में पूर्व हॉकी खिलाड़ी अशोक कुमार का नाम भी शामिल है । न्यायमूर्ति जगदीश सिंह खेहर, न्यायमूर्ति एन॰वी॰ रामाना और न्यायमूर्ति डीवाय चन्द्रचूड़ की खंडपीठ ने याचिका पर केन्द्र सरकार की प्रतिक्रिया मांगी है ।

सरकार इस संबंध में क्या जवाब देगी और उसके क्या परिणाम सामने आएंगे यह तो समय बताएगा अलबत्ता यह तो हर किसी को पता है की क्रिकेट की भांति ही दूसरे खेल संगठनों पर भी राजनीतिज्ञों ने क़ब्ज़ा जमाया हुआ है । कुछ नेता तो ऐसे भी हैं जिन्हें जिस खेल की ए॰बी॰सी॰डी॰ पता नहीं वह भी उस खेल संगठन में एक पद लिए हुए हैं । हालांकि विश्व स्तर पर क्रिकेट में भारत का प्रदर्शन शानदार रहा है मगर भारत में क्रिकेट हद से ज़्यादा लोकप्रिय हो गया है इसी कारण इसमें कई बुराइयां भी आ गयी हैं । मैच फिक्सिंग और स्पॉट फिक्सिंग जैसी चीज़ों से क्रिकेट की बदनामी हुई ।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के लिए कठिनाइयां तब शुरू हुई जब दिल्ली पुलिस ने आई॰पी॰एल॰ टीम राजस्थान रॉयल के तीन खिलाड़ियों को गिरफ़्तार किया । इन पर मैच के दौरान स्पॉट फिक्सिंग में लिप्त होने का आरोप था ।

सके कुछ ही दिन बाद उस समय के बी॰सी॰सी॰आई॰ मुख एन॰ श्रीनिवासन के दामाद और उनकी आई॰पी॰एल॰ ीम चेन्नई सुपर किंग्स के सी॰ई॰ओ॰ गुरुनाथ मयप्पन और अभिनेता विंदु दारा सिंह भी हिरासत में ले लिए गये । इस ामले ने तूल पकड़ा और वह सुप्रीम कोर्ट तक जा पहुंचा । सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान इसकी जांच के लिए जस्टिस मुकुल मुद्गल के अध्यक्षता में एक कमेटी बना दी, जिसने साल 2014 में अपनी रिपोर्ट सौंपी ।

मुद्गल कमेटी की रिपोर्ट के बाद सुप्रीम कोर्ट ने बी॰सी॰सी॰आई॰ में सुधारों की ज़रूरत महसूस करते हुए कुछ सख़्त निर्देश दिये और इसके लिए जनवरी, 2015 को सुप्रीम कोर्ट के पूर्व प्रधान न्यायाधीश जस्टिस आर॰एम॰ लोढा के नेतृत्व में तीन सदस्यों की कमेटी गठित कर दी । जस्टिस लोढ़ा कमेटी ने 4 जनवरी, 2016 को बी॰सी॰सी॰आई॰ में सुधारों के लिए कई अहम सिफ़ारिशें रखीं । बी॰सी॰सी॰आई॰ ने इनमें से कई सिफ़ारिशों पर तो हां कह दिया, लेकिन कुछ को लेकर अड़ियल रुख़ अपना लिया ।

लोढा पैनल की कुछ मुख्य सिफ़ारिशें जो थीं उनमें लोढा पैनल ने यह सिफ़ारिश की थी कि बी॰सी॰सी॰आई॰ की 14 सदस्यों वाली कार्यकारिणी कमेटी की जगह 9 सदस्यों वाली शीर्ष परिषद बनायी जाए । एक अहम सिफ़ारिश यह थी कि 70 साल से अधिक की उम्र का कोई भी व्यक्ति बी॰सी॰सी॰आई॰ या राज्य बोर्ड की किसी भी कमेटी का सदस्य न बने ।

पैनल ने कहा था कि किसी भी राज्य में सिर्फ़ एक ही संघ होना चाहिए और एक राज्य सिर्फ़ एक वोट कर सकता है । अगर एक राज्य में एक से ज़्यादा क्रिकेट संघ है तो वह रोटेशन के तहत वोट दें । बी॰सी॰सी॰आई॰ की कार्यकारिणी कमेटी में कोई भी मंत्री या सरकारी अधिकारी न हो । टीम चयन के लिए पांच सदस्यों की जगह तीन सदस्य वाली चयन समिति बने ।

पैनल ने कहा कि एक पदाधिकारी एक बार में केवल तीन साल के लिए ही बी॰सी॰सी॰आई॰ की कार्यकारिणी का सदस्य रहे और ज़्यादा से ज़्यादा तीन बार बी॰सी॰सी॰आई॰ का चुनाव लड़े । लगातार दो बार कोई भी पदाधिकारी किसी भी पद पर नहीं रह सकता । कमेटी चाहती है कि आई॰पी॰एल॰ और बी॰सी॰सी॰आई॰ की अलग-अलग संचालन संस्था हो । आई॰पी॰एल॰ और राष्ट्रीय कैलेंडर के बीच 15 दिन का अंतर होना चाहिए यानी आई॰पी॰एल॰ ख़त्म होने के 15 दिन के बाद खिलाड़ी कोई भी अंतर्राष्ट्रीय मैच खेल सकता है ।

क्रिकेट में रहकर कई मजे लूटने वालों पर लगाम कास्ट हुए कमेटी ने कहा कि एक सदस्य सिर्फ़ एक पद पर रहे चाहे वह राज्य क्रिकेट बोर्ड के किसी समिति का हो या बी॰सी॰सी॰आई॰ की मूल समिति का । ख़ास सिफ़ारिश यह भी है कि बी॰सी॰सी॰आई॰ को आर॰टी॰आई॰ एक्ट के दायरे में लाया जाए ।

कुल मिलाकर देखा जाए तो खेलों को पाक साफ़ बनाने के लिए कुछ ऐसी तब्दीलियां ज़रूरी हैं जिनके आधार पर एक तो खेल संगठन पर वही व्यक्ति का क़ब्ज़ा हो जो खेल से जुड़ा रहा है और दूसरे कोई भी व्यक्ति बहुत लंबे समय तक किसी खेल संगठन से जुड़ा नहीं रहे । यदि यह सब बातें हो जाती हैं तो हमें इस बात की उम्मीद रखनी चाहिए की भारत क्रिकेट की भांति दूसरे खेलों में भी अपना नाम रोशन करेगा ।

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

बेरोज़गारी के बढ़ते ख़तरे

■ वेदव्यास

भारत में ग़रीब और मध्यम वर्ग के लिए आने वाला समय निश्चय ही और अधिक कठिन होगा क्योंकि अब देश की 130 करोड़ से अधिक की आबादी बाज़ार आधारित खुली अर्थव्यवस्था के 2016 से शुरू भू-मंडलीकरण के दूसरे चरण में, प्रवेश कर चुकी है । 1990 से लेकर 2015 तक इसके प्रथम चरण में ही देश इतना बदल चुका है कि आगे अब क्या होगा ? ये कोई नहीं बता सकता । यानी कि दूसरे चरण में सरकार खुद सर्जिकल स्ट्राइक की रणनीति पर आ गयी है और पिछले दिनों पाकिस्तान के ख़िलाफ़ और अब कालेधन के ख़िलाफ़ अचानक उठाए गये क़दम भारत में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक उथल-पुथल के चौंकाने वाले प्रमाण हैं ।

भारत की जनता का पुराना सामान्य दैनिक जीवन अब नया असामान्य दैनिक जीवन बनता जा रहा है और विषमताओं की चुनौतियां लगातार बढ़ती जा रही है । एक तरफ़ लाखों गांवों में ग़ैर-बराबरी के पहाड़ खड़े हैं, तो दूसरी तरफ़ शहर और क़स्बों में विकास के शिखर बनते जा रहे हैं । भूमंडली- करण के इस दौर में सफलता को विकास दर से मापा जा रहा है तो हर अवरोध और असहमति को राष्ट्र विरोधी कहा जा रहा है । ये भारत की अकेले की विसंगति नहीं है क्योंकि मुक्त बाज़ार की अर्थव्यवस्था ने दुनिया के 195 देशों में मनुष्य और प्रकृति पर आधारित विकास के बीच, टैक्नोलॉजी का तेज़ी से अपने पांव फैला रहा है ।

कभी दूसरे विश्व युद्ध के (1940) बाद ये पूरी दुनिया औद्योगिकीकरण की आंधी में फंस गयी थी तो आपने देखा था कि भारत में खेती किसानी उजड़ गयी थी और किसानों के बुरे दिन शुरू हो गये थे तथा चारों तरफ़ दुनिया के मज़दूरों एक हो । जैसे नारे सुनाई पड़ने लगे थे ।

बहरहाल ! अब 1947 की स्वाधीनता और लोकतं पाकर तथा 1975 के आपातकाल का अनुभव लेकर ह कुछ अधिक मुखर बनना भी सीख गये हैं । हमने 1980 लेकर 2002 तक हिन्दू राष्ट्रवाद के परचम भी खूब लहरा हैं और 2008 की विश्वव्यापी मंदी को दुख-सुख पाक झेला है । लेकिन 2014 से भारत में विकास और परिवर्त का जयघोष अब सभी बीते हुए अनुभवों से अलग औ अभिनव प्रयोग लेकर अच्छे दिन आने वाले हैं ! श्रेष्ठ भार उदय ने भारत में उम्मीदों के नये कीर्तिमान भी खड़े क दिये हैं ।

आज स्थिति यह है कि विकास और परिवर्तन की नय दौड़ में खेल के नियम और सभी आधार तेज़ी से बदले ज रहे हैं और टेक्नोलॉजी का हस्तक्षेप कुछ इस तरह समझाय जा रहा है कि आपका मोबाइल ही आपका बैंक है औ आपका बैंक ही आपका बटुआ है । इधर नोटबंदी के परिणाम से देशवासियों को क्या मिलेगा ? यह बात तो आन वाला समय ही बताएगा । लेकिन पूत के पांव तो पालने म यही बता रहे हैं कि आज गांवों के ग़रीब किसान और शहरी मज़दूर ही मुसीबतों की मार झेल रहा है और अस्ल

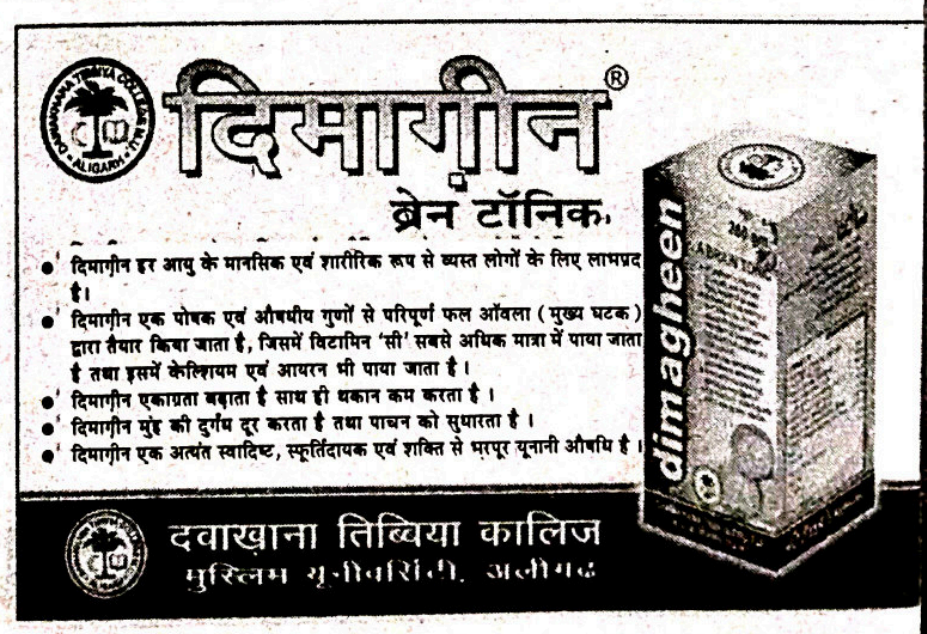

कालाधन कहीं मिटता-घटता दिखायी नहीं दे रहा है । कोढ़ में ऐसी खाज मची है कि गांवों-शहरों में मंदी, निराशा और आक्रोश का वातावरण है ।

पिछले 70 साल के पाप गिनाते-गिनाते अब राजा भी फ़क़ीर की भाषा बोल रहा है और कह रहा है कि भ्रष्टाचार मिटाने के लिए कुछ तो कष्ट उठाना ही पड़ेगा। सारी नयी अर्थव्यवस्था में इंस्पेक्टर राज फिर लौट रहा है और देशभर के बाज़ार को जी॰एस॰टी॰ जैसी कर प्रणाली में बांधा जा रहा है ताकि दुनिया भर की बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए भारत में निवेश का रास्ता आसान हो सके और देशवासियों को मुक्त बाज़ार का सहज उपनिवेश बनाया जा सके । आने वाले वर्षों में ये हमारा एशिया महाद्वीप दुनिया की सबसे बड़ी आबादी का सबसे बड़ा बाज़ार होगा और अमेरिका तथा चीन की विश्व शक्तियों में प्रतियोगिताओं का शिकार भी बनेगा । क्योंकि भारत आज भी दुनिया की सबसे बड़ी जाति, धर्म, ग़ैर-बराबरी और भ्रष्टाचार की मंडी है ।

ऐसे में एक घोर आशावादी नागरिक होते हुए भी हम यह ज़रूर कहना चाहेंगे कि भारत जैसे सदियों से पिछड़े और अर्ध विकसित देश में केवल टेक्नोलॉजी के सहारे बेरोज़गारी, असमानता और सामाजिक, आर्थिक हिंसा नहीं मिटाई जा सकती । क्योंकि हम विकास के नारे लगाकर न्याय को भूल जाते हैं और स्मार्ट सिटी बनाकर गांवों को दर किनार कर देते हैं । हमने 2014 के चुनाव में सोशल मीडिया लोकतंत्र बनाम राष्ट्रवाद की बहस को अघोषित आपातकाल में धकेल रहा और संघीय ढांचे को जवाबदेही की नयी चुनौती दे रहा है । साइबर क्राइम को रोकने की कोई पक्की तैयारी हमारी व्यवस्था में नहीं है तथा विकास की हर घोषणा अराजकता में बदल रही है ।

आज देश का 50 करोड़ युवा नोटबंदी और डिजिटल इंडिया से रोज़गार नहीं देख रहा है, क्योंकि भारत का सामाजिक चरित्र विज्ञान से पहले आध्यात्म में अपनी मोक्ष ढूंढ़ता है । हमारे लाखों गांव आज भी बैंक, चिकित्सा, शिक्षा और बिजली पानी से वंचित हैं ।

इस तरह आर्थिक सुधार के साथ सामाजिक सुधार का कोई रोड मैप चुनावी राजनीति के पास नहीं है, क्योंकि हर पार्टी काले धन के चंदे से ही चुनाव लड़ती है और जाति-धर्म के नाम पर मेक इन इंडिया का ध्रुवीकरण करती है ।

आप सोचिए कि मुक्त बाज़ार की इस नयी अर्थव्यवस्था से जब अमेरिका तक में एक बहुराष्ट्रीय उद्योगपति राष्ट्रपति बन सकता है तो फिर भारत जैसे ग़रीब देश में महाजनी सभ्यता का राष्ट्रवाद विकसित करना कितना आसान है? इस वर्तमान को लेकर ही आज से 500 साल पहले कबीरदास ने कहा था कि कबीरा खड़ा बज़ार में, मांगे सबकी ख़ैर, ना काहू से दोस्ती, ना काहू से वैर ।

(विविधा फ़ीचर्स)

घटता निर्यात और बढ़ती बेरोज़गारी

■ **जावेद अनीस**

पिछले लोकसभा चुनाव के दौरान नरेंद्र मोदी ने हर साल 2.5 करोड़ नौकरियां देने का वादा किया था, लेकिन अभी तक ऐसा हो नहीं पाया है और नौकरियां बढ़ने के बजाए घट रही हैं । इसके पीछे का मुख्य कारण निर्यात क्षेत्र में लगातार आ रही कमी को बताया जा रहा है । निर्यात के क्षेत्र में पिछले अगस्त में ही 0.3 फ़ीसद की गिरावट आयी है ।

जिन प्रमुख वस्तुओं के निर्यात में कमी आयी है, उनमें पेट्रोलियम 14 फ़ीसदी, चमड़ा 7.82 फ़ीसदी, रसायन 5.0 फ़ीसदी और इंजीनियरिंग 29 फ़ीसदी शामिल हैं । इसी तरह से सेवाओं का निर्यात भी इस साल जुलाई में 4.6 फ़ीसदी घटकर 12.78 अरब डॉलर रह गया । इन सबका असर रोज़गार पर हो रहा है । उद्योग मंडल एसोचैम और थॉट आर्बिट्रिज की एक संयुक्त रिपोर्ट के अनुसार 2015-16 की दूसरी तिमाही में निर्यात में हुई गिरावट के कारण क़रीब 70,000 नौकरियां जा चुकी हैं । सबसे अधिक प्रभाव कपड़ा क्षेत्र पर पड़ा है ।

निर्यात में गिरावट के क़रीब दो साल होने वाले हैं लेकिन अभी तक इसका कोई ठोस उपाय नहीं निकाला जा सका है । 2015 में भी निर्यात के क्षेत्र में ज़्यादातर समय गिरावट देखने को मिली है, 2016 में सरकार इसमें सुधार आने की उम्मीद जता रही थी लेकिन यह साल भी उम्मीद जताने में ही बीता जा रहा है । वित्त वर्ष 2015-16 की

आर्थिक समीक्षा के अनुसार इस दौरान के पहली तीन तिमाही में निर्यात में क़रीब 18 प्रतिशत की गिरावट देखने को मिली थी जिसमें निर्माण क्षेत्र की तुलना में सेवा का क्षेत्र अधिक प्रभावित हुआ था ।

आर्थिक समीक्षा में देश के निर्यात में हो रही गिरावट पर चिंता जताते हुए कहा गया था कि इस गिरावट के कारण कारोबार का वातावरण लगातार चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है । 2015 में भी निर्यात क्षेत्र में गिरावट का प्रभाव रोज़गार पर देखने को मिला था । भारतीय श्रम मंत्रालय द्वारा 2015 में किये गये सर्वेक्षण के अनुसार रोज़गार में 43,000 नौकरियों की गिरावट देखने को मिली थी । इन 43,000 नौकरियों में से 26,000 नौकरियां निर्यात करने वाली कंपनियों से जुड़ी थीं ।

भारत अपने कृषि प्रधान देश की पहचान को पीछे छोड़ते हुए अपनी विकास की यात्रा में काफ़ी आगे निकल चुका है । आज यह संभावना जतायी जा रही है कि भारत 2030 तक अमेरिका व चीन के बाद विश्व तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है । दुनिया भर में फैली मंदी के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था अपने विकास के लय को काफ़ी हद तक बनाए हुए हैं, जिसे रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन ने 'अंधों में एक आंख राजा' की मिसाल दी है । आज अगर निर्यात में इस गिरावट पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया गया तो लय टूट सकती है, उसके बाद संभालना आसन नहीं होगा ।

सरकार में बैठे लोग देश के निर्यात में हो रहे इस गिरावट के पीछे वैश्विक मंदी और दुनिया भर में घटती उत्पाद क़ीमतों का होना बता रहे हैं । वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री निर्मला सीतारमन निर्यात में सुधार को वैश्विक मांग के सुधार से जोड़ रही हैं लेकिन निर्यात में हो रही गिरावट को मात्र दुनिया में चल रही मंदी से जोड़ देने का यह तर्क गले नहीं उतरता है । इस समस्या को मात्र वैश्विक मंदी के माथे भी नहीं मढ़ा जा सकता है लेकिन दुर्भाग्य से सरकार निर्यात में गिरावट के लिए इसी तर्क का सहारा ले रही है । अगर हम दूसरे देशों पर नज़र डालें तो उन्होंने इस चुनौती का मुक़ाबला भारत से बेहतर तरीक़े से किया है । इस दौरान चीन के निर्यात में महज़ दो प्रतिशत की कमी आयी है और दक्षिण अफ़्रीक़ा के निर्यात में आठ प्रतिशत की कमी देखने को मिली है ।

स्पष्ट है कि निर्यात में हो रही गिरावट के पीछे सिर्फ़ वैश्विक मंदी और मांग ही नहीं बल्कि सरकार की नीतियां भी ज़िम्मेदार हैं । भारत सरकार निर्यात में हो रही कमी को ठीक तरीक़े से नियंत्रित करने में विफल रही है । निर्यात और मेक इन इंडिया कैंपेन को आगे बढ़ाने के लिए पिछले साल नरेंद्र मोदी सरकार ने नयी विदेश व्यापार-नीति की घोषणा की थी लेकिन अभी तक इसका भी कोई ख़ास असर देखने को नहीं मिला है ।

भारत के निर्यात क्षेत्र में हो रही गिरावट क़रीब दो साल पुरानी होने को है और आज इसका असर घटती हुई नौकरियों के रूप में साफ़ तौर पर देखा जा सकता है । दरअस्ल यह गिरावट अब ढांचागत रूप लेती जा रही है । इसके पीछे का प्रमुख कारण भारत के सेवा निर्यात की सुस्ती और ढलान है । यह एक ऐसी केंद्रीय समस्या है जो भारतीय अर्थव्यवस्था को गहरे संकट में डाल सकती है ।

हर साल 2.5 करोड़ नौकरी देने का मोदी सरकार का एक प्रमुख वादा है । इस सरकार के आने के बाद से इसके नीति निर्धारकों द्वारा लगातार यह चिंता जतायी जा रही है कि घटते निर्यात से बेरोज़गारी बढ़ सकती है । और अब ठीक यही हो रही है । इस देश के लोगों विशेषकर युवाओं को मौजूदा सरकार से बहुत उम्मीदें हैं । इसलिए मोदी सरकार को यह चाहिए कि समस्याओं का ठीकरा दूसरों के सर फोड़ने के बजाए उनका गंभीरता से हल निकाले, घटते हुए निर्यात पर लगाम कसे और रोज़गार बढ़ाने का अपना वादा पूरा करे ।



फ्लोरीन से हानियां

■ डॉ॰ जे॰ एल॰ अग्रवाल

फ्लोरीन मानव शरीर की वृद्धि के लिए आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्व है । जिसमें ऋणात्मक चार्ज होता है और आसानी से हड्डियों एवं दांतों में प्रविष्ट हो जाता है तथा उसकी संरचना एवं कार्य को प्रभावित करता है । धरती के अंश का 0.32 प्रतिशत फ्लोरीन होता है । कुछ पहाड़ों में इसका प्रतिशत अधिक हो सकता है, इन पहाड़ों से निकलकर फ्लोरीन पानी, मिट्टी और खाद्य पदार्थों में पहुंचता है, यही पानी और खाद्य पदार्थ शरीर के फ्लोरीन के स्रोत हैं । जल में फ्लोरीन की मात्रा विश्व भर में औसतन 0.5 से एक हिस्सा प्रति दस लाख (पी॰पी॰एम॰ है जो कि फ्लोरीन का हमारे शरीर में मुख्य स्रोत है ।

अभी तक हमें फ्लोरीन की कमी से होने वालें किसी रोग का ज्ञान नहीं है पर इसकी अधिकता से शरीर के अनेक अंग प्रभावित हो सकते हैं । अधिक मात्रा में अचानक फ्लोरीन लेने से आंत की अन्दरूनी झिल्ली में घाव या वहां से रक्तस्राव हो सकता है ।

हड्डियों में बदलाव

हड्डियों में अधिक फ्लोरीन के कारण हड्डियां भारी हो जाती हैं और नयी हड्डियां अनियमित बनने लगती हैं । अस्थियों के साथ लगे तंतुओं, लिगमेंट वेंडन, मांसपेशियों तथा जोड़ों में हड्डियों का अंश इकट्ठा हो जाता है । फ्लोरीन की अधिकता से विशेषकर बच्चों की हड्डियां विरल हो जाती हैं जिससे वे टेढ़ी हो सकती हैं । रीढ़ की हड्डियों में बदलाव से स्नायुतंत्र पर दबाव के कारण मांसपेशियों में कमज़ोरी आ सकती है और वे पतली हो सकती हैं । इसके अतिरिक्त पैराथायरायड ग्रंथि, लिवर, गुर्दे और हृदय की संरचना एवं कार्य में बदलाव हो सकता है ।

दांतों में बदलाव

दांतों पर फ्लोरीन की अधिकता के दीर्घकालीन प्रभाव होते हैं । यदि जीवन के प्रथम 7 वर्षों में शरीर को अधिक मात्रा में फ्लोरीन मिल रहा है (1.5 मि॰ली॰ प्रति लीटर) तो दांत टेढ़े हो जाते हैं, दांत की जड़ कमज़ोर हो जाती है । दांत की चमक ख़त्म हो जाती है । सफ़ेद या भूरे चकत्ते आ सकते हैं और बाद में दांत का रंग मटमैला, भूरा या काला हो जाता है ।

इंडेमिक फ्लोरोसिस

फ्लोरीन की अधिकता की विश्व में सबसे पहली जानकारी भारत के वेलोर ज़िले से प्राप्त हुई थी । पर यह बीमारी विश्व के अनेक देशों और भारत के अनेक प्रांतों जैसे पंजाब, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश एवं दिल्ली में व्यापक रूप से पायी जाती है । इन जगहों में पानी में फ्लोरीन की मात्रा 1.5 से 25 पी॰पी॰एम॰ होती है । और यह बीमारी फ्लोरीन को लंबे समय तक लेने से हो जाती है क्योंकि यहां के लोग गर्मी के कारण पानी को अत्यधिक मात्रा में प्रयोग करते हैं ।

इसके अतिरिक्त यदि पानी मुलायम है तो उस जल में कैल्शियम और मैगनीशियम की मात्रा कम होती है तथा फ्लोरीन की मात्रा बढ़ जाती है । अधिक मात्रा में फ्लोरीन लेने का प्रभाव दांतों एवं स्नायु तंत्र पर पड़ता है, दांत मुलायम, भूरे रंग के गड्ढेदार, आड़े तिरछे हो सकते हैं । फ्लोरोसिस में जोड़ों और हड्डियों का दर्द, जोड़ों को मोड़ने में कठिनाई एवं हड्डियों का टेढ़ापन हो सकता है । टेंडन एवं लिगामेंट के स्थान पर हड्डियां बन जाती हैं । स्नायु तंत्र प्रभावित होने से झनझनाहट, मांसपेशियों की कमज़ोरी और पतला होना या फालिज के लक्षण मिल सकते हैं । फ्लोरोसिस से गुर्दे, थायरायड एवं पैराथायरायड ग्रंथियां भी प्रभावित होती हैं । उनमें भी हड्डियां जमा हो जाती हैं ।

रोकथाम एवं उपचार

फ्लोरोसिस से ग्रसित व्यक्ति को जिस स्थान पर जल या मिट्टी में फ्लोरीन अधिक है उस स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करने से ही उसके लक्षणों में बदलाव आ सकता है । इंडेमिक फ्लोरोसिस से बचने के लिए फ्लोरीन मिले जल स्रोत का बदलना आवश्यक है । गहरे कुओं के जल में फ्लोरीन की मात्रा अधिक नहीं होती, उसी का जल पीना उचित है ।

किस काम का है ऐसा विकास ?

■ राणा प्रताप सिंह

प्रकृति लगातार चेतावनी दे रही है । हमारे योजनाकार, शासक और प्रशासक या तो उसे सुन नहीं रहे या सुनकर अनसुनी कर रहे हैं । आंखें मूंद लेने से आंधी तो नहीं रुक जाती । पर्यावरण संरक्षण की मुहिम को विकास विरोधी मानना हमारे समय की भारी भूल साबित होगी, यह हम जितनी जल्दी समझ लें, आने वाले ख़तरों से निबटने के लिए उतनी ही अच्छी तैयारी कर सकेंगे ।

पूरी दुनिया में जलवायु परिवर्तन राजनीति और सामाजिक चर्चा के केंद्र में है । कहीं दूर क्यों जाएं, ख़ुद हमारा देश भी अब जलवायु परिवर्तन के बुरे परिणामों की गहरी चपेट में है । बढ़ती गर्मी, बढ़ता प्रदूषण, बढ़ती बीमारियां, घटती उपज, बारिश की कमी, बाढ़ की बहुलता, सूखा और आकस्मिक तूफ़ान आदि सामान्य घटनाएं हो चली हैं ।

शहरों में नये बने बहुमंज़िले मकानों की भरमार है, पर उनमें रहने वाले नदारद हैं । जिनको घर चाहिए, उनके पास घर ख़रीदने के लिए पैसा नहीं है । जो घर ख़रीद रहे हैं, उनके पास रहने के लिए घर पहले से ही है । लोग रहने के लिए नहीं, अधिक मुनाफ़े के लिए अपनी ज़रूरत से ज़्यादा घर ख़रीद रहे हैं ।

हमने कभी सोचा ही नहीं कि घर बनाने, खेती करने, कारख़ाने लगाने की पर्यावरणीय क़ीमत क्या है ? हमें इनका अधिकता में होना ही विकास लगता है । हमारे अर्थतंत्र में सबसे दुर्लभ और ज़रूरी वस्तुओं मसलन हवा, पानी, प्राकृतिक रोशनी, भोजन सामग्री, मिट्टी और जैव-संपदा आदि की कोई क़ीमत ही नहीं आंकी जाती ।

देश के ज़िम्मेदार पदों पर बैठे ज़्यादातर लोग समकालीन जलवायु परिवर्तन और लगातार बढ़ते प्रदूषण की विभीषिका से परिचित हैं । वे इन धीमी लेकिन लगातार बढ़ती जाने वाली आपदाओं के कारण भी जानते हैं और एक हद तक निवारण के उपाय भी । लेकिन वे इसे लेकर गंभीर नहीं हैं । उनके पास न तो स्पष्ट नीतियां हैं, न ही प्रभावी कार्य योजना । उन्होंने कोई ज़िम्मेदार तथा प्रामाणिक वैज्ञानिक रिव्यू सिस्टम विकसित नहीं किया है । ग़लत परिणामों की जवाबदेही तय करने का कोई तरीक़ा भी सिस्टम में स्वीकार नहीं किया गया है । विज्ञान को हमने विज्ञान की तरह नहीं, सिर्फ़ तकनीकी और बाज़ार की तरह अपनाया है । समस्या की जड़ यही है ।

जाड़े में कभी गहरी धुंध हो रही है, तो कभी तेज़ धूप । इस धुएं और धुंध में जो धूल है, वह क्या है, इसे समझना होगा । इसमें धूल के बारीक (पी॰एम॰ 1, 2.5, 5 और 10) कणों के अलावा भारी धातुओं (लेड, कैडमियम, निकल, मरकरी आदि), पेस्टिसाइड तथा औद्योगिक, शहरी और ग्रामीण कचरे से उपजे ज़हरीले रसायन हैं । ये ज़हरीले धूलकण और रसायन अस्थमा, कैंसर, हृदयाघात तथा लकवा जैसी भयानक बीमारियों के जनक हैं । इस धूल में ज़हरीले धुएं की भारी मात्रा है ।

कार्बन डाई ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, ओजोन, सल्फर ऑक्साइड, मीथेन, वाष्प आदि भी इसमें हैं जो न सिर्फ़ सेहत के लिए नुक़सानदेह हैं, बल्कि सूरज की ऊर्जा सोखकर वैश्विक गर्मी और जलवायु परिवर्तन के बुरे प्रभाव पैदा करने वाले प्रमुख कारक भी हैं । इस तरह कई सारे ज़हर इस धुंध और धुएं में बड़ी मात्रा में समाहित हैं । विडंबना यह है कि यह बात सारे विशेषज्ञ जानते हैं, सरकारें जानती हैं, मगर आम आदमी नहीं जानता । आम लोगों के विमर्श में सत्ता का संघर्ष है, आर्थिक विकास का एजेंडा है, पर जीवन-मृत्यु से जुड़े पर्यावरण के मुद्दे दूर-दूर तक नहीं हैं ।

प्रदूषण नियंत्रण के राष्ट्रीय व राज्य स्तर के बहुतेरे विभाग हैं, लाखों अधिकारी और कर्मचारी हैं, अरबों रुपये के संसाधन हैं, खरबों रुपये का तंत्र जनित ख़र्च है । पर्यावरण नियंत्रण के लिए पर्यावरणविदों या संस्थाओं की अपील पर नेशनल ग्रीन ट्राइब्यूनल, सुप्रीम कोर्ट और राज्यों के हाईकोर्ट, क़ानून पालन के कड़े आदेश जारी करते हैं । परंतु इन आदेशों को लागू करने के लिए शासन और प्रशासन के तंत्र वह सक्रियता नहीं दिखाते जो आवश्यक है ।

शासकीय ढांचे में पर्यावरण संरक्षण की बातों को विकास का विरोधी मानने वाले प्रशासक, इंजीनियर, उद्योगपति, मैनेजर, अर्थशास्त्री बहुतायत में हैं । इनकी एक मज़बूत लॉबी है जो पर्यावरण संरक्षण के उपायों को विकास विरोधी तथा ख़र्चीली मान कर इसे दरकिनार करने के लिए शासन-प्रशासन पर दबाव बनाती है ।

इसके अलावा देश के भीतर पर्यावरण के नाम पर भी बिचौलियों का एक विशाल अर्थतंत्र खड़ा हो गया है, जो हर समय क़ानूनों के उल्लंघन से होने वाली समस्याओं को निबटाने की गुपचुप क़वायद करता रहता है । इस तरह पर्यावरण संरक्षण के नियमों तथा क़ानूनों को लागू करवाने, न करवाने, उनमें बदलाव लाने आदि की क़वायद करने के लिए एक ताक़तवर लॉबी सक्रिय रहती है, जो पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू नहीं होने देती । यह तंत्र पर्यावरण संरक्षण के ख़िलाफ़ जो धुंध बना रहा है, उसको सूरज का प्रकाश नहीं, शासन और प्रशासन तंत्र की पारदर्शिता, जनांदोलन, मीडिया और कोर्टों का प्रभाव ही कम कर सकते हैं ।

पर्यावरण क्षरण के गंभीर दुष्प्रभाव अब रोज़मर्रा की हमारी ज़िंदगी में दिखने लगे हैं । इस पर गंभीर विमर्श तो वक़्त की ज़रूरत है ही, पर यह काफ़ी नहीं है । हमें एक ऐसा जवाबदेह पारदर्शी ढांचा खड़ा करना होगा जो विकास जैसे राष्ट्रीय लक्ष्यों के आगे बौना न साबित किया जा सके ।

इसके अलावा विकास की हमारी कल्पना को और समग्र व सर्वांगीण बनाने की ज़रूरत है ताकि पर्यावरण जैसे सवाल उस संकल्पना से बाहर न रह जाएं । ग़ैर टिकाऊ और टिकाऊ विकास के फ़र्क़ को स्वीकार करना इस दौर की सबसे बड़ी ज़रूरत है । (सा॰ : नभाटा)

प्रदूषण झेलते शहरों के बेघर लोग

■ भारत डोगरा

बेघर लोगों की समस्याओं के संदर्भ में अधिकतर चर्चा व तैयारी उन्हें कड़ाके की ठंड से बचाने के संदर्भ में होती रही है । पर हाल के समय में जिस तरह दिल्ली जैसे अनेक शहरों में वायु प्रदूषण की समस्या बहुत तेज़ी से बढ़ी है तो इस बदलते संदर्भ में शहरी बेघर लोगों की प्रदूषण से रक्षा भी बहुत ज़रूरी हो गयी है ।

प्राय: प्रदूषण का स्तर बहुत अधिक हो जाता है तो नागरिकों को सलाह दी जाती है कि जहां तक संभव हो घर में ही रहें । पर जिसका कोई घर ही नहीं है वह क्या करेगा, उसे तो खुले में ही प्रदूषण की मार को झेलना पड़ेगा । तिस पर यदि बेघर व्यक्ति फुटपाथ पर है, फ्लाई ओवर के नीचे हैं या रेलवे स्टेशन या बस अड्डे के नज़दीक हैं तो ऐसे स्थानों पर तो प्रदूषण विशेष तौर पर अधिक होता है । वायु प्रदूषण का सबसे प्रतिकूल असर बेघर लोगों पर पड़ता है अत: वायु प्रदूषण की समस्या के विकट होने के साथ यह आर भी ज़रूरी हो गया है बेघर लोगों के लिए समुचित आश्रय स्थल बनाने को पहले से कहीं अधिक महत्व दिया जाए । ग्रामीण क्षेत्रों से किसानों व मज़दूरों का आर्थिक संकट विकट होने व प्राकृतिक आपदाओं की मार बढ़ने के कारण अधिक संख्या में ऐसे अनेक प्रवासी मज़दूर शहरों में पहुंच रहे हैं जिनका कोई ठौर-ठिकाना नहीं है । इस कारण भी बेघर लोगों के लिए आश्रय बढ़ाने के कार्य को और महत्व देना व इसके लिए उचित बजट की व्यवस्था करना पहले से और भी ज़रूरी हो गया है ।

आश्रय स्थलों के अधिक व बेहतर निर्माण के साथ इनका उचित प्रबंधन भी बहुत ज़रूरी है । हाल के समय में दिल्ली में सरकार ने नीलामी के आधार पर आश्रय स्थलों का आवंटन ग़ैर-सरकारी संस्थानों में किया । इस व्यवस्था में अनुभव व निष्ठा का रिकार्ड पीछे छूट गया । जो संस्था तुरंत अधिक पैसे की व्यवस्था कर सकी वही अधिक आश्रय स्थल के प्रबंधन का कार्य प्राप्त कर सकी । ज़रूरत इस बात की है कि जिन्होंने इस क्षेत्र में अनेक वर्षों से निष्ठावान कार्य किया है व जिनका इस कार्य में पर्याप्त अनुभव है उन्हें प्राथमिकता मिलनी चाहिए ।

मुंबई के संदर्भ में किये गये एक अध्ययन में विष्णु एन॰ महापात्र ने भी बताया है कि बेघर लोगों की आर्थिक विपन्नता और सामाजिक उपेक्षा की स्थिति इतनी विकट है कि अपने जीवन को प्रभावित करने वाली सरकारी नीतियों में बदलाव लाने में वे अपने स्तर पर अभी बहुत कठिनाई महसूस करते हैं । अत: उनके लिए स्वैच्छिक संस्थाओं व सामाजिक कार्यकर्ताओं का सहयोग बहुत महत्वपूर्ण है ।

दिल्ली में पिछले कुछ वर्षों से आश्रय अधिकार अभियान ने यह भूमिका निभाई है । दिल्ली में आश्रय अधिकार अभियान ने प्रशासन से मिलकर बेघरों के लिए बनाए गये अनेक आश्रय स्थलों व रैन बसेरों की स्थिति में सुधार किया व साथ में सर्दी के मौसम में टैंटों में चलने वाले अनेक अतिरिक्त रैन बसेरों का प्रबंधन भी संभाला । इतना ही नहीं, आश्रय अधिकार अभियान के आरंभिक दिनों में ही इसके कार्यकर्ताओं/अधिकारियों ने 'नाईट-आऊट' या देर रात तक दिल्ली महानगर की सड़कों पर बने रहने व विशेषकर बेघर लोगों के अधिक संख्या में रहने के स्थानों पर पहुंचने की कार्यशैली अपनाई जिससे वे बेघर लोगों को आश्रय स्थलों के बारे में बता सकें व वहां पहुंचने के लिए कह सकें । इस तरह बहुत से बेघर लोग शेल्टरों में पहुंचाए जा सकें व कुछ के लिए उनके पहले खुले आसमान तले रहने के स्थान पर ही टैंट लग सके ।

इस प्रयास के कारण कुछ बहुत चिंताजनक स्थिति में पहुंच चुके बेघर लोगों को सहायता मिल सकी व वे शेल्टर में या अस्पताल में पहुंचाए जा सके । आश्रय अभियान ने इबहास (इंस्टीट्यूट ऑफ़ यूमेन बिहेवियर एंड एलाईड साईंसिस) के सहयोग से दिल्ली के बेघर व असहाय लोगों के लिए लगभग एक दशक से जामा मस्जिद के पास एक मोबाइल आऊटरीच क्लीनिक चलाया है जिसने सैंकड़ों लोगों का जीवन बचाया है व हज़ारों बेघर लोगों को बहुत चिंताजनक स्वास्थ्य समस्याओं ने राहत दिलवाई है । इस क्लीनिक के साथ एक नशामुक्ति क्लीनिक भी चलाया गया है । बहुत प्रतिकूल परिस्थितियों और मौसम में भी सप्ताह में दो दिनों में चलने वाले इस प्रयास को जारी रखा गया । इस क्लीनिक की सफलता को देखते हुए दो अन्य स्थानों पर भी ऐसे प्रयास आरंभ किये गये । इन प्रयासों से पहले बेघर लोगों का दिल्ली के अस्पतालों में इलाज ही नहीं होता था, क्योंकि उनके पास न तो कोई अता-पता था न राशन कार्ड जैसा कोई पहचान-पत्र । पर आश्रय अभियान के प्रयासों का यह परिणाम हुआ कि जो बेघर लोग इन आऊटरीच क्लीनिकों की पर्ची लेकर अस्पताल जाते थे उनका आगे इलाज बड़े सरकारी अस्पतालों में भी होने लगा ।

अस्पताल में भर्ती होने वाले गंभीर स्थिति के मरीज़ों के साथ आश्रय के कार्यकर्ता/वालंटियर सहायता के लिए जाते हैं व उनके लिए अतिरिक्त पोषण की व्यवस्था भी की जाती है । आश्रय अभियान ने कार्य के दौरान यह और स्पष्ट हुआ कि जहां अनेक बेघर व्यक्ति अपनी भोजन की व्यवस्था करने में सक्षम हैं, वहां शारीरिक अक्षमता या अन्य कारणों से अनेक बेघर अपनी खाद्य-व्यवस्था स्वयं नहीं कर सकते हैं ।

उनके लिए व बेघर बच्चों के लिए भोजन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए आश्रय अभियान ने अनेक संस्थानों की मदद से बेघर लोगों के भोजन की व्यवस्था की है । ज़रूरत पड़ने पर आश्रय अभियान ने अदालतों के द्वार भी खटखटाए व बेघर लोगों के अधिकारों की रक्षा के क़ानूनी प्रयास किये । विशेषकर उन लोगों को छुड़वाने के लिए काफ़ी प्रयास किये जो भिक्षावृत्ति उन्मूलन प्रयासों के अंतर्गत ज़ोर-ज़बरदस्ती से भिक्षु गृहों में भेज दिये जाते हैं । इनमें कई ऐसे लोग भी होते हैं, जिन्होंने कभी भीख मांगी ही नहीं होती है ।

आश्रय अभियान के कार्य करने के मॉडल का एक बहुत उपयोगी पक्ष यह रहा है जिन बेघर लोगों की इस अभियान ने सहायता की वे ही बाद में इसके अनेक कार्यों में भागीदार बन गये व इस तरह वे स्वयं भी अनेक बेघर लोगों को सहायता पंहुचा सके । यह जानकर बहुत अच्छा लगता है कि जो व्यक्ति एक समय स्वयं फुटपाथ पर सोते थे, वे आज फुटपाथ से अनेक लोगों को शेल्टर में पंहुचाने का कार्य कर रहे हैं व शेल्टरों का प्रबंधन भी संभाल रहे हैं । जिन बेघर लोगों को आश्रय अधिकार की सहायता से जीवन में नयी उम्मीद मिल सकी उनकी सूची काफ़ी लंबी है व यह सूची और भी बढ़ सकती है । यदि आश्रय अधिकार अभियान से नये साथी जुड़ते रहे, बढ़ती संख्या में लोगों का सहयोग अभियान को मिलता रहे । (वि॰फ़ी॰)



व्यंग्य

हे मच्छर !

■ मीना जैन

हे मच्छर !
तुम कितने निष्ठुर हो ।
निर्ममता से काट लेते हो
बड़ी क्रूरता से
मलेरिया-डेंगू बांट देते हो ।
हे मच्छर !
कितने ढीठ हो तुम ।
बिन बुलाए घर में आ जाते हो
गमलों के पीछे, खाट के नीचे
कोनों में छिप जाते हो !
हे मच्छर !
अपने बच्चों को
कुछ तो सभ्य बनाया होता ।
गंदे नाले-नालियों में
लावारिस छोड़ जाते हो !
हे मच्छर !
मलेरिया-डेंगू के तुम नायक हो
हे विचित्र जीव सचमुच !
तुम बड़े ही नालायक़ हो !
हे मच्छर !
तुम्हें क्या फ़र्क़ पड़ता है
कोई हिट करे या धुंआ छोड़े
तुम तो निर्लज्ज बन
अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए जाते हो ।
हे मच्छर !
तुम आतंकवादी टॉपमटॉप
तुम्हारी टेड़ी चाल से दुनिया डरती है
समाचार पत्र, टी०वी०, रेडियो सभी जगह
तुम से बचने की चर्चा चलती है ।
हे मच्छर !
सासू ने पूछा-बहूरानी दहेज में क्या लाई ?
बहू बोली-ससुराल की दुर्दशा समझती हूं,
मच्छरदानी, ओडोमॉस, ऑल आउट
और जाली का जैकेट लाई हूं ।
हे मच्छर !
तुम्हें विलेनगिरी का पुरस्कार
अवश्य ही मिलना चाहिए
जो कोई अपना भला चाहे
उसे मसहरी के अन्दर ही सोना चाहिए
हे मच्छर !
तुम्हारे परिवार समूल नाश की
फुल कामना करती हूं
तुम्हारी वंश-वेल बढ़ने न पाए
कीटनाशक कैन सदैव तैयार रखती हूं
हे मच्छर !
हमारी सारी परिचर्चा सुनकर
कुछ तो मन में शर्म करो !
हमने तो स्वच्छता अभियान छेड़ा है
तुम भी चुल्लू भर केरोसिन में डूब मरो !

(सा० : यू०एस०एम० पत्रिका)

महाराष्ट्र और गुजरात में सम्मानित हुए डॉ॰ यायावर

अखिल हिन्दी साहित्य सभा नासिक (महाराष्ट्र) (अहिसास) ने अपने वार्षिक आयोजन में 16 अक्तूबर 2016 को डॉ॰ रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' को सम्मानित किया । अहिसास ने 16 अक्तूबर को शंकराचार्य डॉ॰ कुर्तकोटी सभागृह नासिक के वातानुकूलित भवन में आयोजित अपने राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सम्मान समारोह 2016 में डॉ॰ यायावर को उनकी साहित्य-साधना एवं उनकी शोधपरक समीक्षात्मक कृति 'आधुनिकता का दर्पण' पर साहित्य साधना सम्मान दिया ।

अखिल भारतीय कवियों, विद्वानों, हिन्दी अधिकारियों यथा दिनेश प्रताप सिंह (मुंबई), सुबोध मिश्र (नासिक), श्रीमती शीला डोंगरे ('अहिसास' की संस्थापिका), श्रीमती मनीषा अधिकारी, डॉ भारत एस॰ शाह, डॉ॰ प्रदीप शेणैं, डॉ॰ रोचना भारती, तेजस्वी प्रताप गोस्वामी, रमेश यादव, गोपाल कृष्ण भट्ट आकुल तथा सी॰पी॰ मिश्र के साथ अन्य अनेक मनीषियों के सम्मुख उत्तरीय, श्रीफल, साहित्य, अभिनन्दन पत्र स्मृति चिन्ह एवं 11000/- रुपये की राशि के साथ डॉ॰ यायावर को सम्मानित किया गया । इसी तरह हिन्दी साहित्य परिषद अहमदाबाद (गुजरात) ने 22 अक्तूबर 2016 को आयोजित अपने भव्य समारोह में डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' अखिल भारतीय काव्य सम्मान प्रदान किया ।

डॉ॰ अम्बाशंकर नागर द्वारा संस्थापित और गुजरात के तपस्वी साहित्य समाराधकों द्वारा पोषित और सम्बर्धित हिन्दी साहित्य परिषद 30 वर्षों से अनवरत गुजरात में हिन्दी-सेवा और साधना की ज्योति जलाये हैं । संस्था द्वारा डॉ॰ यायावर को पुष्प गुच्छ, स्मृति चिन्ह, विपुल साहित्य और 11000/- रुपये की नक़द राशि प्रदान की गयी । आयोजन गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद के विशेष भवन में आयोजित हुआ, जिसमें गुजरात के तपस्वी साहित्य मनीषी डॉ॰ किशोर काबरा, डॉ॰ भगवत शरण अग्रवाल, हरीश दुबे, संस्था के सभी वरेण्य ? पदाधिकारीगण एवं अन्य अनेक साहित्य सेवी उपस्थित थे । स्मरणीय है कि डॉ॰ यायावर की 26 मौलिक कृतियां प्रकाशित हैं । एक दर्जन से अधिक पुस्तकों का वे सम्पादित कर चुके हैं । 100 से अधिक स्तरीय साहित्यिक कृतियों में उनकी लेखन-सहभागिता है तथा पत्र-पत्रिकाओं में असंख्य रचना प्रकाशित हैं ।

कविता

निविदा और ठेका

अंग्रेज़ों के ज़माने से सिस्टम चला आया है
आज भी ज्यूं का त्यूं चल रहा है !
सरकारी कामों के लिए निविदाएं
आमंत्रित किये जाते हैं ।
फिर साधारणतया सब से कम रेट वाले को
काम का ठेका दे दिया जाता है ।
अब यह कोई ढकी छिपी बात नहीं है कि
इस प्रक्रिया में क्या-क्या होता है !
अब ऐसे में बनी हुई सड़क अगर
पहली बारिश में बह जाए तो भला किसी का
क्या दोष ! (यह तो याद दिलाना तो ज़रूरी नहीं कि
सबसे कम वाले ठेकेदार को भी कहां-कहां
क्या-क्या देना-लेना करना कराना पड़ता है !)
70 साल हो गये हमारा अपना राज हुए
न जाने कितनी सड़के बह गयीं और
न जाने कितने पुल बनते-बनते ढह गये,
मगर किसी को फ़ुर्सत नहीं मिली आज तक
इस गले-सड़े सिस्टम को बदलने की !

ओमप्रकाश बजाज
पोस्ट बाक्स 595, जी॰पी॰ओ॰, इंदौर (म॰प्र॰)

ऐसे हुआ महीनों का नामकरण

■ विद्या प्रकाश

अंग्रेज़ी में महीनों के नामकरण का इतिहास काफ़ी रोचक और प्राचीन है तथा उसके क्रम में समय एवं परिस्थिति के साथ ही बदलाव आता रहा है ।

रोमन कैलेंडर के पहले महीने जनवरी का संबंध प्रसिद्ध रोमन देवता जेनस से माना जाता है । जेनस को किसी कार्य का श्रीगणेश और शुभारंभ करने वाला देवता माना गया है । इसी वजह से साल के प्रथम मास के नामकरण उन्हीं के नाम पर हुआ । लैटिन भाषा में इस महीने का नाम जैनुअरिस रखा गया था जो बाद में जैनुअरी हो गया तथा भारत में आकर जनवरी के रूप में यह प्रचलित हो गया ।

इसी प्रकार साल के दूसरे माह फ़रवरी का संबंध लैटिन शब्द 'फ़ैबुरा' से है । इस शब्द का अर्थ शुद्धि की दावत है । पहले इस माह की पन्द्रहवीं तारीख़ को लोग शुद्धि की दावत का आयोजन करते थे । एक अन्य मान्यता के अनुसार कुछ लोग फ़रवरी शब्द की उत्पत्ति फेबरूएरिया नामक एक रोमन देवी से मानते हैं । रोमन समाज में फेबरूएरिया संतानोत्पत्ति की देवी के रूप में मान्य और पूज्य हैं । बांझ तथा संतानसुख वंचिता महिलाएं इस महीने में इस देवी की पूजा करती थी ताकि देवी उनके पूजन से प्रसन्न होकर उन्हें पुत्रवती बनाएं ।

इसी क्रम में मार्च माह का नामकरण रोमनों के युद्ध देवता मार्टिअद के नाम पर हुआ माना जाता है । पहले सर्दी का मौसम व्यतीत होने पर इसी वासंती मास में लोग शत्रुओं के देश पर आक्रमण करते थे । इसी कारण इस माह का नाम मार्टिअस के नाम पर रखा गया जो बाद में मार्ज हो गया । आजकल इस माह का नाम बदलकर मार्ज से मार्च हो गया ।

वर्ष के चौथे मास अप्रैल के नाम की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द परपेटायर से हुई है जिसका अर्थ खुलने से है । रोम में इस माह के आते-आते चारों तरफ़ सुन्दर मनमोहक वासंती दृश्य छा जाया करता था तथा कलियां पौधों में चटककर फूल बनने लगती थी । इसलिए इस माह का नामकरण अप्रैलिस हो गया जो बाद में बदलकर हिन्दी में अप्रैल हो गया ।

रोमनवासियों की एक देवी मैआ के नाम पर माह मई का नाम रखा गया है । प्राचीन काल में रोमवासी इसी मैआ देवी के नाम पर गर्भवती शूकरी की बलि चढ़ाया करते थे । एक अन्य मान्यता के अनुसार मई नाम की उत्पत्ति लैटिन भाषा के मैजोरेस शब्द से भी मानी जाती है जिसका तात्पर्य बड़े बुज़ुर्ग रईस से बताया जाता है । पुराने ज़माने में रोम के बुज़ुर्ग रईसों के सम्मान में इस महीने का नाम मैजोरेस रखा गया जो कालांतर में संक्षिप्त होकर मे के रूप में परिवर्तित हो गया ।

हिन्दी में यही बदलकर मई हो गया । मई माह समाज के बड़े बुज़ुर्गों के सम्मान में समर्पित करने के बाद इसका अगला महीना नवजवानों को समर्पित किया गया तथा नवजवानों के द्योतक लैटिन शब्द जूनियोरेस के आधार पर इस महीने का नामकरण जून किया गया ।

एक दूसरे मत के अनुसार जून के नाम का संबंध रोमन महिलाओं की अधिष्ठागी देवी जून से माना जाता है । तीसरे मत के अनुसार यह माना जाता रहा है कि पुराने युग में इसी महीने में लोग विवाह करके अपना घर परिवार बसाया करते थे तथा गृहस्थी का प्रबंध करते थे । इसी लिए परिवार के अर्थ में प्रयुक्त होने वाले लैटिन शब्द जेंस के आधार पर जून के नाम का विकास हुआ ।

प्राचीन रोमन कैलेंडर के अनुसार जुलाई को वर्ष का पांचवां महीना माना जाता था । लैटिन भाषा में पांचवें को क्विंटिलिस कहते हैं । बाद में वर्ष के मास क्रम में जनवरी तथा फ़रवरी के जुड़ जाने पर जुलाई सातवें महीने के स्थान पर आ गया । फिर भी काफ़ी समय तक इसे उसके पुराने नाम से ही जाना पहचाना जाता रहा । ईसा से 44 वर्ष पूर्व रोमन सम्राट जूलियस सीजर की हत्या के बाद उसके सम्मान में इस महीने का नामकरण उसके नाम पर जूलियस कर दिया गया । अंग्रेज़ी भाषा में पहले इसे जूली लिखने का प्रचलन था और इसे बाद में जुलाई लिखा जाने लगा ।

जूलियस सीजर का जन्म इसी महीने में हुआ था ।

अगस्त महीने का नाम इसी विश्व प्रसिद्ध रोमन सम्राट जूलियस सीजर के भतीजे आक्वेटियन के नाम पर पड़ा है । रोमन सीनेट ने आक्वेटियन को आगस्टस यानी महान की उपाधि प्रदान की थी । उसके दिमाग़ में यह ख़याल आया कि उसके चाचा जूलियस सीजर के नाम पर एक महीने का नामकरण तो हो ही चुका है । क्यों न उसके नाम पर भी किसी एक महीने का नाम रख लिया जाए । रोमन सीनेट की स्वीकृति मिल जाने के उपरांत इस महीने का नाम बदलकर अगस्टस हो गया तथा यही नाम आगे चलकर अंग्रेज़ी तथा हिन्दी में अगस्त कहा जाने लगा ।

प्राचीन रोमन कैलेंडर में सितम्बर सातवां महीना था तथा इसलिए इसे सैप्टेम्बर कहा जाता था । लैटिन भाषा में सैप्टेम्बर दो शब्दों सैप्टेम और बर से मिलकर बना है जिसका अर्थ सातवां होता है । बाद में नौवां महीना हो जाने पर भी इसका नाम सैप्टेम्बर ही पूर्ववत चलता रहा । हिन्दी में भी सितम्बर इसी का परिवर्तित रूप है । रोम के प्राचीन कैलेंडर में अक्टूबर आठवां महीना था । इसी वजह से इसे लैटिन शब्द अक्ट (आठ) के आधार पर अक्टूबर यानी आठवां कहा जाता था ।

कालांतर में वर्ष का दसवां महीना हो जाने पर भी इसका पहले वाला नाम अक्टूबर ही चलता रहा तथा इसका यह नाम आज भी प्रचलित है । पुराने रोमन कैलेंडर के हिसाब से नवम्बर साल का नौवां महीना था । लैटिन शब्द नोवेम के आधार पर इसे नोवेम्बर कहकर प्रयुक्त किया जाता था । बाद में वर्ष का ग्यारहवां महीना हो जाने पर भी इसका नाम नहीं बदला तथा वह इसी रूप में समाज में प्रचलित रहा । हिन्दी में नवम्बर इसी नोवेम्बर शब्द से निकला है ।

रोम में प्रचलित प्राचीन कैलेंडर में दस महीने होते थे । तब दिसम्बर साल का दसवां तथा अंतिम महीना था । लैटिन शब्द डसेम के आधार पर इस महीने का नामकरण डेसेम्बर यानी दसवां किया गया । परिवर्तन क्रम में वर्ष का बारहवां महीना बनने के बाद भी इसका पुराना नाम डेसेम्बर ही चलता रहा । इसी शब्द से हिन्दी में दिसम्बर बना है ।

नववर्ष पर कमरे की दीवार पर कील के सहारे टंगा कैलेंडर बदलते समय उसके डेटपैड पर अंकित द्वादश महीनों के नामों के इतिहास पर हमारा ध्यान कम ही जा पाता है जो वास्तव में दिलचस्प है ।

समुद्र के पार संसार



समुद्र के रास्ते मसालों के द्वीप इंडोनेशिया तक पहुंचने का सपना विश्व में जिस पहले यूरोपीय व्यक्ति ने देखा वह था पुर्तगाल का समुद्र यात्री फर्डिनैंड मैग्गेलन, जो स्पेनी प्रशासकों की सेवा में था । सन 1519 में उसने यूरोप के पश्चिम से होते हुए एशिया की ओर अपनी यात्रा प्रारंभ की । साथी नाविकों में से किसी को भी उसने नहीं बताया कि वे कहां जा रहे हैं । उसे भय था कि वे सब डर जाएंगे और इस यात्रा में उसका साथ नहीं देंगे ।

दक्षिणी अमेरिका से गुज़रते हुए उसके दो जहाज़ एक तूफ़ान में पूरी तरह नष्ट हो गये । लेकिन उन्होंने इस यात्रा में एक नये मार्ग की खोज की जिसे मैग्गेलन जलडमरूमध्य के नाम से जाना जाता है । मैग्गेलन का सपना इंडोनेशिया तक पहुंचकर वापस लौटने का था लेकिन वह फ़िलिपींस के ऐतिहासिक मकतान युद्ध में मारा गया । 5 समुद्री जहाज़ों और 260 नाविकों का यह समुद्री बेड़ा तीन साल बाद जब वापस स्पेन पहुंचा तब उसमें केवल 18 व्यक्ति जीवित बचे थे ।

समुद्र के रास्ते पृथ्वी की परिक्रमा करने वाला पहला व्यक्ति था ब्रिटेन का सर फ्रांसिस ड्रेक । उसने अपनी यात्रा 1577 में मैग्गेलन द्वारा खोजे गये रास्ते से प्रारंभ की और सफलतापूर्वक 1580 में ब्रिटेन वापस लौटा । चित्र में मैग्गेलन का रास्ता दिखाया गया है ।



खोज-उपकरण

दुनिया की खोज के समय, जब रेडियो या रडार नहीं होते थे खोज यात्री अपने रास्ते का ध्यान रखने के लिए सूरज, चांद और सितारों की सहायता लेते थे । खोज की लंबी समुद्री यात्राओं में दिशा बताने का काम यही करते थे।

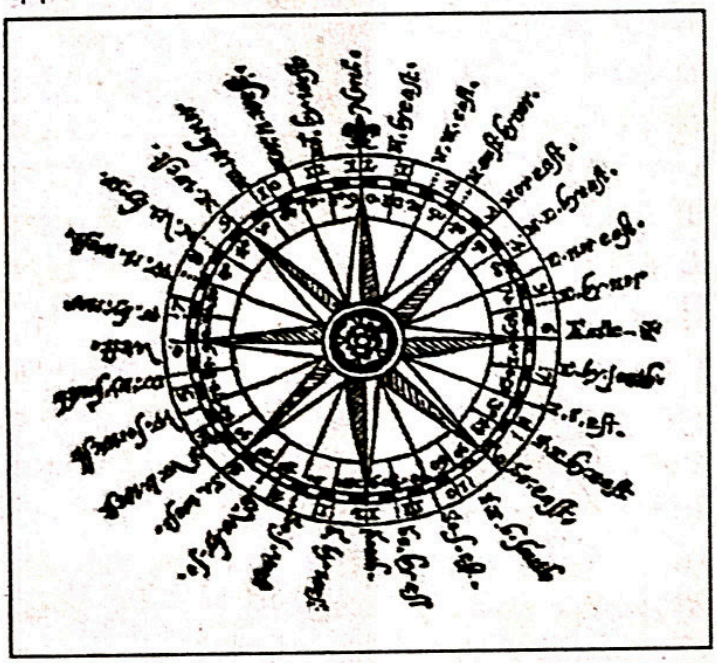

सबसे पहले कुतुबनुमा का आविष्कार चीन में 4000 साल पहले हुआ, लेकिन यूरोपीय लोग एक हज़ार साल पहले तक इसके प्रयोग के विषय में कुछ नहीं जानते थे ।

पंद्रहवीं शताब्दी के कुछ ऐसे नक़्शे मिले हैं जिनमें समुद्र तट से संबंधित विषयों को चित्रित किया गया है । इनमें प्रमुख बंदरगाह और समुद्र के असुरक्षित स्थानों को दिखाया गया है ।

सत्रहवीं शताब्दी में दूरबीन का आविष्कार हुआ । इसकी सहायता से बहुत दूर तक देखा जा सकता था । नाविकों को जब आसमान में उड़ते हुए पक्षी दिखायी देते थे तब वे समझ जाते थे कि किनारा पास ही है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



Asian Optics
a multibrand showroom
SNP Area, Sakchi ,Jsr.
2221184
Main Road, Golmuri ,Jsr.
2341175

अक़ायद व इबादात पर हमारी अहम पुस्तकें

आवागमनीय पुर्नजन्म	डॉ० मुहम्मद अहमद	50.00
अनेकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	70.00
एकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	35.00
एक ईश्वर की धारणा	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	40.00
परलोक की छाया में	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	90.00
पहेली जीवन की	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	12.00
रिसालत	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	45.00
लोगोः हिसाब का समय निकट आ चुका है	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	14.00
खुदा की गुलामी इंसान की बुलन्दी	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	18.00
जीवन मृत्यु के पश्चात्	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
बनाव और बिगाड़	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
शान्ति-मार्ग	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	15.00
सोचने की बातें	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
प्यारी माँ के नाम इस्लामी संदेश	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फलाही	07.00
मानव जीवन और परलोक	शोबा-ए-दावत	22.00
मुक्ति-मार्ग	इनामुर्रहमान ख़ाँ	10.00
मौत के बाद क्या?	डॉ० शाहिद अली	10.00
मरने के बाद क्या होगा?	बिन्तुल इस्लाम	60.00
सत्य की खोज	मौलाना वहीदुद्दीन खाँ	16.00
नबी करीम (सल्ल०) की दुआएँ (पाकेट साइज़)	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	64.00
रमज़ान कैसे गुज़ारें?	खुर्रम मुराद	22.00
रोज़ा और उसका असली मक़्सद	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
इबादत	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	16.00
इस्लाम में पाकी और सफाई	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फलाही	20.00
नमाज़ में आप क्या पढ़ते हैं?	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
इमान की कसौटी	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00
खुतबाते हरम	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
नमाज़	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फलाही	12.00

MMI PUBLISHERS
D-307,Dawat Nagar,Abul Fazal Enclave,Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Fax: 26987858
E-mail:mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

Posted on 20-21 February 2017
March 2017
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.02.2017
Total Pages-52 (With Covers)

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYM
License No. U (SE)-73/2015-201
Posted in the P.S.O. (Periodical Channel, New Del

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

कान्ति

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

पढ़िए और पढ़ाइए

जो केवल समाचार ही न दे

- बल्कि बताए समाचारों का मर्म और आगे-पीछे का हाल
- देश व समाज की उन्नति के लिए प्रस्तुत करे ठोस उपाय
- प्रस्तुत करे इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ होने वाले दुष्प्रचार का तोड़
- सामने लाए सही स्थिति और अवगत कराये वास्तविकताओं से
- रखे ध्यान नैतिक मूल्यों का और मार्गदर्शन करे भलाई व कल्याण की ओर

सहयोग राशि :-

✧ प्रति कॉपी 5 /= ✧ छहमाही 125/= ✧ वार्षिक 250/=

एजेंसी और ग्राहक बनने के लिए सम्पर्क करें ।

KANTI WEEKLY

D-314, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-25
Phone : 09818799223, 011-26949430
E-mail : kantiweekly@hotmail.com